सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh
RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 154, नई दिल्ली, मंगलवार 12 अगस्त 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

सफलता के लिए पांच आवश्यक उद्यमशीलता कौशल : एकाग्रता, भेदभाव, संगठन, नवाचार और संचार .

03 एनआईईपीए ने 19वां स्थापना दिवस मनाया.....
06 संसद संवाद की बजाय संघर्ष का अखाड़ा कब तक?
08 अलविदा रजिस्टर्ड डाक – एक युग की ख़ामोश विदाई

सुप्रीम कोर्ट के ताज़ा निर्देश

पिकी कुंडू सह संपादक परिवहन विशेष

1. सभी आवारा कुत्तों को तुरंत पकड़कर आवासीय इलाकों से हटाया जाए और विशेष कुत्ता आश्रय गृह में स्थानांतरित किया जाए, जहाँ उन्हें सी.सी.टी.वी. निगरानी, नसबंदी/टीकाकरण, और कर्मचारियों की देखरेख हो — उन्हें वापस सड़कों पर नहीं छोड़ा जाएगा।

2. 8 सप्ताह के भीतर ऐसे आश्रय गृह बनाए जाएँ, जो 5,000 से 6,000 कुत्तों का निर्वाह कर सकें।

3. नोएडा, दिल्ली, गुरुग्राम, गाजियाबाद सहित NCR क्षेत्र के प्राधिकरणों को इस पर दैनंदिन रिकॉर्ड बनाए रखना अनिवार्य है — कोई भी कुत्ता वापस नहीं छोड़ा जाएगा; यदि छोड़ा गया पाया गया, तो कठोर कार्रवाई की जाएगी।

4. एक हेल्पलाइन एक सप्ताह के भीतर स्थापित की जाए, ताकि कुत्तों द्वारा काटे जाने की सूचना पर 4 घंटे के भीतर कार्रवाई सुनिश्चित हो — कुत्ते को पकड़कर आश्रय गृह भेजा जाए, नसबंदी और टीकाकरण किया जाए, और वापस न छोड़ा जाए।

5. *सुप्रीम कोर्ट ने Animal Birth Control (ABC) Rules को "अस्वीकार्य" (absurd) बताते हुए कहा कि कुत्तों को उसी क्षेत्र में वापस छोड़ना बेवकूफी है; "रूल भूल जाएँ, और वास्तविकता का सामना करें।"

6. कोर्ट ने यह स्पष्ट किया कि कोई भी व्यक्ति या संगठन इस प्रक्रिया का विरोध करेगा, तो उसके खिलाफ अदालत द्वारा अवमानना-अदालत (Contempt of Court) की कार्रवाई की जाएगी*।

* सुप्रीम कोर्ट ने इस स्थिति को "बहुत ही चिंताजनक (extremely grim)" बताया, और कहा कि "एक भी बच्चा या बुजुर्ग कुत्तों द्वारा काटकर रैबीज़ की चपेट में नहीं आए," यह कार्रवाई इसी उद्देश्य से आवश्यक है।

सुप्रीम कोर्ट के आदेश के विरोध में उतरे दिल्ली के पशु प्रेमी, कहा- एक्सपर्ट की राय लेकर पहले कराना था सर्वे

दिल्ली में आवारा कुत्तों को लेकर सुप्रीम कोर्ट के आदेश के खिलाफ प्रदर्शन हुआ। पशु अधिकार कार्यकर्ताओं ने कुत्तों को उठाने के आदेश का विरोध किया क्योंकि उनके लिए पर्याप्त आश्रय गृह नहीं हैं। उनका कहना है कि फैसले से पहले कुत्तों की संख्या का सर्वे और विशेषज्ञों की राय लेनी चाहिए थी। वे बिना तैयारी के उठाए गए कदम को पशु कल्याण के विरुद्ध मानते हैं।

नई दिल्ली। आवारा कुत्तों पर सुप्रीम कोर्ट के आदेश के खिलाफ कोर्ट के नजदीक विरोध प्रदर्शन कर रहे पशु अधिकार कार्यकर्ता, बचाने वाले व देखभाल करने वाले पशु प्रेमियों को पुलिस ने हिरासत में ले लिया।

हालांकि, कुछ देर हिरासत में रखने के बाद उन्हें छोड़ दिया गया। ये सभी दिल्ली-एनसीआर के विभिन्न स्थानों से जुटे थे। हिरासत में ली गई एक महिला पशु प्रेमी ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट ने आदेश दिया है कि सारे आवारा कुत्तों को उठा लिया जाए।

हम उसका विरोध करने आए हैं। उनका (कुत्तों) का कोई कुसूर नहीं है, उनको क्यों उठाया जाए।जबकि उनके पास कोई आश्रय गृह नहीं है। आखिर में ये दिल्ली से बाहर फेंक देंगे जहां पर कुत्ते आपस में लड़ लड़कर मर जाएंगे। इसका विरोध करने नहीं दिया जा रहा है।

पशु प्रेमी ने फैसले से पहले सर्वे और रिसर्च की मांग की

कुत्तों को शेल्टर होम में रखने संबंधी सर्वोच्च न्यायालय के हालिया फैसले पर मतभेद सामने आने लगा हैं। पशु प्रेमियों का कहना है कि अदालत को ऐसा निर्णय लेने से पहले व्यापक सर्वे और विशेषज्ञों की राय लेनी चाहिए थी।

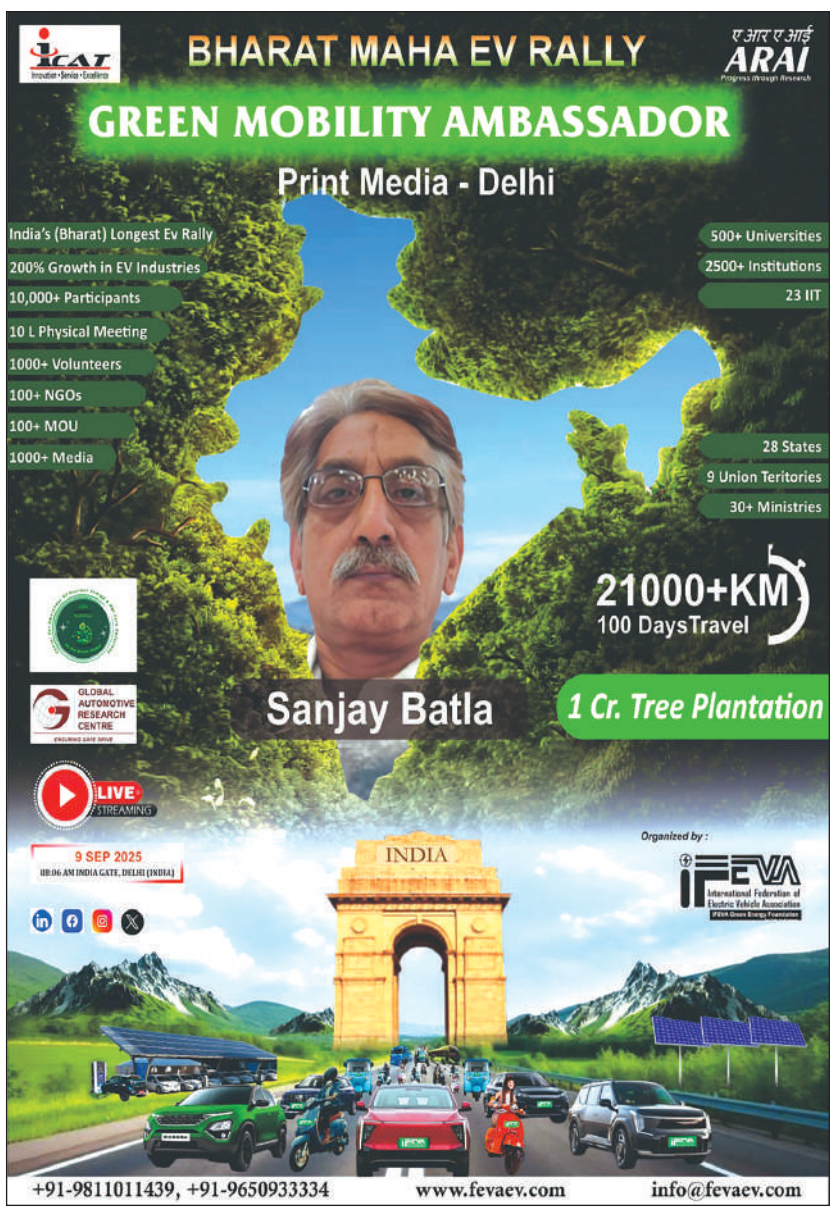

दिल्ली के पहले डबलडेकर फ्लाईओवर के निर्माण पर लगा ब्रेक 80 पेड़ों को काटने की अनुमति नहीं मिलने से रुका काम

दिल्ली के पहले डबल डेकर फ्लाईओवर का निर्माण पेड़ों की वजह से रुका हुआ है। शहीद मंगल पांडेय रोड पर बन रहे इस फ्लाईओवर के रास्ते में 80 से ज्यादा पेड़ आ रहे हैं जिन्हें हटाने की मंजूरी नहीं मिली है। तीन साल से पेड़ों को हटाने की कोशिश जारी है। फ्लाईओवर बनने से इलाके में जाम की समस्या दूर होगी। यह फ्लाईओवर दिल्ली मेट्रो रेल कारपोरेशन बना रहा है।

नई दिल्ली। पेड़ काटने या स्थानांतरित करने की अनुमति नहीं मिलने से शहीद मंगल पांडेय रोड यानी वजीराबाद रोड पर भजनपुरा के सामने से यमुना विहार तक बनने वाले दिल्ली के पहले डबलडेकर फ्लाईओवर के काम पर ब्रेक लगा गया है।

इस फ्लाईओवर के भजनपुरा और बृजपुरी दोनों तरफ उतरने वाले हिस्सों में कुल मिलाकर 80 से अधिक हरे पेड़ आ रहे हैं। तीन वर्षों से हरे पेड़ों को हटाने की जद्दोजहद चल रही है, मगर अभी तक मंजूरी नहीं मिल सकी है।

इन्हें हटाने की अनुमति मिलने के बाद ही काम में तेजी आ सकेगी। यहां 220 करोड़ रुपये की लागत से 1.4 किलोमीटर लंबा फ्लाईओवर बनाया जा रहा है। इसके बनने से इस क्षेत्र में जाम की समस्या दूर हो जाएगी।

वजीराबाद रोड पर जाम को कम करने के लिए पिछले सालों में काम हुआ है। जाम वाले भजनपुरा के सामने वाले भाग में पिछले साल एक मंदिर और मजार हटाई गई है।

मगर यहां चल रहे मेट्रो के फेज-चार के तहत मौजपुर से मजलिस पार्क के भाग के काम के चलते लोग आज भी सुबह व शाम ही नहीं कई बाद दिन के अन्य समय भी जाम से जूझते हैं।

अब मेट्रो का काम पूरा होने वाला है और ट्रैक पर ट्रेन का ट्रायल हो रहा है। मगर फ्लाईओवर के उतरने वाले भागों का काम नहीं हो सका है।

यह मार्ग एक तरफ विधानसभा उपाध्यक्ष मोहन सिंह बिष्ट और दूसरी तरह विधायक अजय महावर के क्षेत्र में आता है। दोनों भाजपा से विधायक हैं, अब दिल्ली में भाजपा की सरकार है।

बिष्ट ने कहा कि वह बारे में अपनी सरकार के संपर्क में हैं। वहीं महावर ने कहा कि उन्होंने इसे लेकर अगले सप्ताह फिर पीडब्ल्यूडी और मेट्रो के अधिकारियों की बैठक बुलाई है।

कहा कि इस मसले पर वह जल्द ही पीडब्ल्यूडी मंत्री प्रवेश वर्मा से भी मिलेंगे और अन्य परियोजनाओं की तरह इस योजना से भी पेड़ों को हटाने की मंजूरी के लिए अनुरोध करेंगे ।

यह दिल्ली का पहला फ्लाईओवर होगा जो डबल डेकर होगा। इसके नीचे वाले भाग में वाहन चल सकेंगे और ऊपर वाले भाग में मेट्रो चलेगी। सड़क के भाग में भी वाहन चलेंगे, ऐसे में लंबी दूरी वाले वाहन फ्लाईओवर का उपयोग कर निकल जाएंगे।

इस परियोजना पर दिल्ली मेट्रो रेल कॉरपोरेशन काम कर रहा है। डीएमआरसी दिल्ली सरकार को फ्लाईओवर बनाकर देगी। जिसका पैसा दिल्ली सरकार दे रही है। यह राशि 220 करोड़ तय की की गई है।

दिल्ली सरकार के एक वरिष्ठ अधिकारी कहते हैं कि एक ही पिलर पर मेट्रो का ट्रैक और फ्लाईओवर दोनों होने से परियोजना पर खर्च कम आएगा। फ्लाईओवर तैयार हो जाने के बाद इसका रखरखाव लोक निर्माण विभाग करेगा।

अधिकारी ने कहा कि एक ही पिलर पर दो सेवाओं का प्रयोग सफल होता दिख रहा है। सरकार इस तरह का प्रयोग आने वाले समय में अन्य स्थानों पर भी कर सकती है।

यह डबल डेकर का ऊपरी भाग यानी मेट्रो वाला भाग जमीन से 18.5 मीटर की ऊंचाई पर है और इसके नीचे जमीन से 9.5 मीटर की ऊंचाई पर फ्लाईओवर बन रहा है।

मेट्रो ट्रैक की चौड़ाई जहां 10.5 मीटर है, वहीं तीन-लेन फ्लाईओवर की चौड़ाई 10 मीटर है। पिलर पर गर्डर रखने के साथ साथ स्लैब रखे जाने का काम पूरा हो चुका है। इस कार्य के लिए प्रीकास्ट गर्डर का प्रयोग किया गया है क्योंकि प्रीकास्ट गर्डर पर ट्रैक बिछाने का काम तुरंत किया जा सकता है।

रेलवे फ्रेट घोटाला,आयरन ओर जब्ती व निष्पादन 2010 एंव डेमरेज चार्जेस वसुली में कोताही की जाँच सिबिआई द्वारा की जाए - प्रदेश अध्यक्ष राष्ट्रवादी कॉग्रेस पार्टी (ओड़िसा)

ओडिशा राज्य के सुंदरगढ़ और क्योंझर जिले खनिज-संपन्न क्षेत्र हैं, जहां लौह अयस्क (iron ore), मैंगनीज (manganese), कोयला (coal) और अन्य खनिजों का बड़े पैमाने पर खनन होता है। इन जिलों में खनन से जुड़े भ्रष्टाचार और घोटाले लंबे समय से चर्चा में रहे हैं, जिनमें अवैध खनन, रॉयल्टी चोरी, पर्यावरण नियमों का उल्लंघन, और राजनीतिक-प्रशासनिक मिलीभगत शामिल हैं। ये घोटाले मुख्य रूप से 2009-2014 के बीच उजागर हुए, लेकिन हाल के वर्षों (2024-2025) में भी नए मामले सामने आए हैं। न्यायमूर्ति एम.बी. शाह आयोग (Shah Commission) की रिपोर्ट (2014) ने इन जिलों में Rs 59,203 करोड़ से अधिक के अवैध खनन का अनुमान लगाया था, जिसमें क्योँझर और सुंदरगढ़ जिलों का प्रमुख योगदान था। आयोग ने कहा कि ओडिशा में सभी प्रकार के अवैध खनन लगातार हो रहे हैं, और नियमों की पूर्ण अवहेलना की जा रही है। नीचे दोनों जिलों के प्रमुख घोटालों का विस्तृत विवरण दिया गया है, जो विभिन्न जांच रिपोर्टों, सरकारी आदेशों और मीडिया स्रोतों पर आधारित है। ये मुख्य आरोप हैं और कई मामलों में जांच जारी है।

सुंदरगढ़ जिले में खनन भ्रष्टाचार और घोटाले-

सुंदरगढ़ जिला ओडिशा के प्रमुख खनन क्षेत्रों में से एक है, जहां कोयला, लौह अयस्क और मैंगनीज का खनन प्रमुख है। यहां अवैध खनन मुख्य रूप से आरक्षित वनों (reserved forests) में होता है, जो पर्यावरण क्षति का मुख्य कारण बनता है। प्रमुख घोटाले निम्नलिखित हैं:

2025 का प्रमुख कोयला और मैंगनीज घोटाला कई सौ करोड़ के घोटाले की आसंका :

मई 2025 में, ओडिशा के मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी ने सुंदरगढ़ के हेमगिरी और कोइड़ा तहसीलों में बड़े पैमाने पर अवैध खनन की जांच के लिए विजिलेंस विभाग को विशेष आदेश दिया।

हेमगिरी में 22 खदानों से 9,843 मीट्रिक टन कोयले का अवैध निकासी हुआ, जिसकी कीमत कई करोड़ों में है। यह मुख्य रूप से गोपालपुर और अन्य क्षेत्रों में हुआ।

कोइड़ा में 50 खदानों से 20,000 मीट्रिक टन मैंगनीज और 1,200 मीट्रिक टन लौह अयस्क का अवैध निकासी, कीमत कई करोड़ों से अधिक है1

विजिलेंस ने स्पेशल इन्वेस्टिगेशन टीम (SIT) गठित की है। जांच में खनन माफिया, स्थानीय अधिकारियों और राजनीतिक संरक्षण की भूमिका की जांच हो रही है। अप्रैल 2025 में, ओडिशा के स्टील एंड माइंस मंत्री ने सुंदरगढ़ में अवैध कोयला खनन पर छापेमारी की, लेकिन कोई गिरफ्तारी नहीं हुई।

आरक्षित वनों में छिपी खदानों का खुलासा हुआ, जो पर्यावरण नियमों का उल्लंघन है।

डिसट्रिक्ट मिनरल फंड डीएमएफ घोटाला:

सुंदरगढ़ में डीएमएफ फंड (खनन से प्राप्त धन का उपयोग स्थानीय विकास के लिए) में हजारों करोड़ रुपये की हेराफेरी के आरोप। फंड का दुरुपयोग विकास कार्यों की बजाय निजी लाभ के लिए हुआ जो चर्चा का विषय बना हुआ है1

ऐतिहासिक संदर्भ (2014 शाह आयोग रिपोर्ट):

सुंदरगढ़ और केओनझर में Rs 59,000 करोड़ से अधिक के अवैध खनन का अनुमान। अवैध निकासी, बिना लीज के खनन, और रॉयल्टी चोरी प्रमुख मुद्दे।

2013 में, स्टील एंड माइंस विभाग के दो अधिकारियों को गिरफ्तार किया गया, जो कोलकाता की एक कंपनी को अनुचित लाभ देने के आरोपी थे।

हाल की घटनाएं:

अप्रैल 2025 में, अवैध कोयला खदानों का खुलासा, जो ओडिशा सरकार के लिए चुनौती का कारण बना।

फरवरी 2025 में, DMF फंड में भ्रष्टाचार के आरोप, जिसमें कई करोड़ नकद और अघोषित संपत्ति की आसंका व्यक्त की गई है जिसमे स्थानीय विधायकों की मौन सहमती इसका कारण बनी1

. क्योंझर जिले में खनन भ्रष्टाचार और घोटाले-

क्योंझर ओडिशा का सबसे बड़ा लौह अयस्क उत्पादक जिला है, जहां टाटा स्टील, JSW आदि अन्य बड़ी कंपनियां सक्रिय हैं। यहां घोटाले मुख्य रूप से ओर ग्रेड मेनीपुलेसन, अवैध निकासी और परिवहन घोटालों से जुड़े हैं।

ओर ग्रेड मैनिपुलेशन घोटाला (2025):

क्योंझर में टाटा स्टील पर ओर ग्रेड मेनीपुलेसन का आरोप, जिसमें मिनरल रॉयल्टी इवेशन शामिल है। यह ओडिशा के खनन घोटाले का हिस्सा है।

उलिबुरु माइनिंग घोटाला (Rs 1,800 करोड़):

2015 में उजागर, जिसमें Rs 463 करोड़ की संपत्ति जब्त। दीपक गुप्ता उलीबुरु माइंस का पावर ऑफ अटॉर्नी धारक और उनके भाई चंपक गुप्ता पर आरोप कि उन्होंने लीज सीमा से बाहर आरक्षित वन से लौह अयस्क निकाला। मार्च 2024 में, ईडी ने दोनों से पूछताछ की।

यह मामला मनी लॉन्ड्रिंग से जुड़ा है, और ईडी की जांच जारी है। वहीं इनके स्वामित्व वाले ईडी द्वारा जब्त जमीनों की बेधड़क बिक्री जारी है1

बीजद नेता राजा चक्र गिरफ्तारी (कई सौ करोड़ घोटाला, 2025):

मार्च 2025 में, बीजद नेता सौम्यशंकर चक्र (राजा चक्र) को ओडिशा क्राइम ब्रांच ने गंधमर्दन माइनिंग लोडिंग एजेंसी भ्रष्टाचार मामले में गिरफ्तार किया। जबकी अभी भी कई जीएसटी इनपुट फ्रॉड व सक्रेप व्यापारी एंव बीजद समर्थक धड़ल्ले से इस खेल को अमलीजामा पहना रहे हैं जो जाँच का विषय है 1 इसमें फंड दुरुपयोग और अनियमितताएं शामिल। पूर्व मंत्री व बीजद नेता बद्री नारायण पात्रा ने आई ए एस और आईपीएस अधिकारियों की मिलीभगत का आरोप लगाया। राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा ₹ट्रक ट्रांसपोर्ट सारथी₹ उफ्तत्सा ने पहले ही आरोप लगाया था कि आपराधिक छवि वाले परिवहन व्यवसाईयों के द्वारा माफियाओं के तरह विभिन्न माइंस में कब्जा जमाए हुए हैं जो भ्ष्टाचार का मुख्य कारण है- पुलिस विभाग की मुकदर्शिता कौतुहल का कारण है1

जांच में राजनीतिक नेताओं, ब्यूरोक्रेट्स और तत्कालीन पुलिस की भूमिका की जांच हो रही है इनमे एक एस डी पी ओ द्वारा करोड़ों में आयोजित विवाह समारोह दबे जबान चर्चा का कारण है।

बड़ा माइनिंग घोटाला (Rs 8 लाख करोड़ का आरोप, 2024):

भाजपा ने ओडिशा के माइनिंग सेक्टर में Rs 8 लाख करोड़ के घोटाले का आरोप लगाया, जिसमें मुख्यमंत्री नवीन पटनायक की जानकारी में घोटाला होने का दावा। सीबीआई जांच की मांग।

जून 2024 में, मुख्यमंत्री मोहन माझी ने क्योंझर के ₹लुटेरों₹ को जेल भेजने की चेतावनी दी। वहीं एनडीए की सहभागि राष्ट्रवादी कॉंग्रेस पार्टी ने भी बीजद काल में किये गए घोटाले की गहन जाँच हेतु मांग की है1

ऐतिहासिक संदर्भ:

2009 में घोटाला उजागर, जिसके बाद Rs 2,056 करोड़ का जुर्माना लगाया गया। शाह आयोग ने Rs 60,000 करोड़ के लौह अयस्क चोरी का अनुमान लगाया।

नवंबर 2024 में, क्योंझर के जूनियर माइनिंग ऑफिसर पद्मनव होता की संपत्ति जब्तः 3 बहुमंजिला इमारतें, 14 प्लॉट, 5 एकड़ फार्महाउस, Rs 34 लाख जमा, और 300 ग्राम सोना।

हाल की घटनाएं:

जून 2024 में, डीएमएफ फंड और माइनिंग घोटाले के आरोप।

मार्च 2024 में, ओडीसा हाईकोर्ट ने राजा चक्र की अग्रिम जमानत खारिज की।

समग्र प्रभाव और कार्रवाई

पर्यावरण और सामाजिक प्रभावः अवैध खनन से वन क्षति, जल प्रदूषण और स्थानीय समुदायों का विस्थापन हुआ। शाह आयोग ने ओडिशा और झारखंड में अवैध खनन पर रिपोर्ट सौंपी।

कार्रवाई: ईडी, सिबिआई,विजिलेंस और इकोनॉमीक ऑफन्स विंग जांच कर रहे हैं। 2021 में Rs 2,056 करोड़ का जुर्माना लगाया गया। भाजपा सरकार ने 2024-2025 में जांच तेज की, लेकिन विपक्ष (बीजद, कांग्रेस) मिलीभगत के आरोप लगाता है।

राजनीतिक कोणः भाजपा ने बीजद पर आरोप लगाए, जबकि बीजद ने आईएएस/आईपीएस अधिकारियों की भूमिका बताई। ये घोटाले राजनीतिक बहस का हिस्सा बने।वहीं एनसीपी के प्रदेश अध्यक्ष ने कहा

"रेलवे फ्रेट घोटाला भी एक मुख्य घोटाला है जिसमे नामित कम्पनीयों को जुर्माना न जमा करने के एवज में तुरंत रेलवे रैक आपूर्ति बंद किया जाए,2010 में जोड़ा, बड़बील व अन्य स्थानों में हजारों टन आयरन ओर के भंडारण, जब्ती पश्चात निष्काशन व स्थिति एंव रेलवे साइडिंग पर भंडारण के सिबिआई जाँच की परमआवशयकता है व शीघ्र सिबिआई जाँच की सिफारिश हो एंव बीजद काल से परिवहन माफियाराज पर तत्काल अंकुश लगे"

तारीख 12 अगस्त 2025 दिन मंगलवार को भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि है।।

आज अंगारक संकष्टी (बहुला) श्रीगणेश चतुर्थी व्रत है। आज इस चतुर्थी को भारतीय महिलायें अपने संतान के दीर्घायु के लिए इस व्रत को करती हैं। इसके लिए दिनभर का अखण्ड उपवास रखकर सायंकाल में भगवान श्रीगणेश जी की पूजा विधि-विधान से करके फिर चन्द्रमा देवता के उदित (चंद्रोदय - 08:37 PMपर) होनेपर उनको चंद्रार्घ्य देकर ही व्रत को खोलती हैं। आज शाम को प्रदोषकाल में बहुला चतुर्थी व्रत मध्य प्रदेश में मनाया जाता है। आज कजरी भी है। इस अवसर पर गोपूजन भी करने का विधान है। आज अलंकृत अर्थात गायों को सजाकर उनका पूजन किया जाता है।।

आज की तृतीया को अंगवेर तृतीया उड़ीसा में कहा जाता है। सिन्धी लोग आज की तृतीया को तीजड़ी कहते हैं। आज स्थायीजययोग एवं सर्वार्थसिद्धियोग भी है। आप सभी सनातनियों को ₹अंगारक संकष्टी (बहुला) श्रीगणेश चतुर्थी व्रत एवं गोपूजन दिवस₹ की हार्दिक शुभकामनायें।।

तारीख 12 अगस्त 2025 दिन मंगलवार को भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष कि तृतीया तिथि है।।

तृतीया तिथि में नमक का दान तथा भक्षण दोनों ही त्याज्य बताया गया है। तृतीया तिथि एक सबला अर्थात बल प्रदान करने वाली तिथि मानी जाती है। इतना ही नहीं यह तृतीया तिथि आरोग्यकारी अर्थात रोग निवारण करने वाली तिथि भी मानी जाती है। इस तृतीया तिथि की स्वामिनी माता गौरी और इसके देवता कुबेर देवता हैं। यह तृतीया तिथि जया नाम से विख्यात मानी जाती है। यह तृतीया तिथि कृष्ण पक्ष में शुभफलदायिनी मानी जाती है। तृतीया तिथि केवल बुधवार की हो तो अशुभ मानी जाती है।।अन्यथा इस तृतीया तिथि को सभी शुभ कार्यों में लिया जा सकता है। आज तृतीया तिथि को माता गौरी की पूजा करके व्यक्ति अपनी मनोवाँछित कामनाओं की पूर्ति कर सकता है। आज तृतीया तिथि में एक स्त्री माता गौरी की पूजा करके अचल सुहाग की कामना करे तो उसका पति सभी संकटों से मुक्त हो जाता है।

कजरी तीज आज

वैदिक पंचांग के अनुसार, भाद्रपद माह के कृष्ण पक्ष की तृतीया तिथि पर कजरी तीज का पर्व मनाया जाता है। इस शुभ अवसर पर भगवान शिव और मां पार्वती की पूजा-अर्चना करने का विशेष महत्व है। धार्मिक मान्यता के अनुसार, इस व्रत को करने से वैवाहिक जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होती है। संतान प्राप्ति के लिए भी इस व्रत को किया जाता है।

कजरी तीज की तिथि और शुभ मुहूर्त

==========

वैदिक पंचांग के अनुसार, भाद्रपद माह के कृष्ण पक्ष की तृतीया तिथि की शुरुआत 11 अगस्त को सुबह 10 बजकर 33 मिनट से होगी। वहीं, इस तिथि का समापन 12 जुलाई को सुबह 08 बजकर 40 मिनट पर होगा। ऐसे में कजरी तीज का व्रत 12 अगस्त को किया जाएगा।

कजरी तीज व्रत का महत्व

==========

इस व्रत को कुंवारी लड़कियां और सुहागिन महिलाएं विधिपूर्वक करती हैं। धार्मिक मान्यता मान्यता के अनुसार, इस व्रत की शुरुआत मां पार्वती ने भगवान शिव को पति के रूप में पाने के लिए की थी। धार्मिक मान्यता के अनुसार, कजरी तीज के व्रत को करने से पति को लंबी आयु का वरदान प्राप्त होता है। साथ ही मनचाहे वर की प्राप्ति होती है।

कजरी तीज के दिन इन बातों का रखें ध्यान

==========

इस व्रत को बेहद कठिन माना जाता है, क्योंकि व्रत को निर्जला किया जाता है। शाम को

पूजा-अर्चना कर चंद्र देव को अर्घ्य देने के बाद व्रत का पारण किया जाता है। व्रत के दौरान किसी से वाद-विवाद न करें। काले रंग का वस्त्र धारण न करें। घर की साफ-सफाई का खास ध्यान रखें।

कजरी तीज की पूजन सामग्री

==========

कजरी तीज का व्रत रखने वालों को एक दिन पहले कुछ खास सामग्री की व्यवस्था कर लेनी चाहिए. इसकी पूजा में एक दीपक, घी, तेल, कपूर, अगरबत्ती, कच्चा सूता, नए वस्त्र, केला के पत्ते, बेलपत्र, शमी के पत्ते, जनेऊ, जटा नारियल, सुपारी, कलश, भांग, धतूरा, दूर्वा घास, पीला वस्त्र, हल्दी, चंदन, श्रीफल, गाय का दूध, गंगाजल, दही, मिश्री, शहद और पंचामृत जैसी सामग्री की आवश्यकता रहती है।

कजरी तीज शुभ योग

==========

कजरी तीज पर सर्वार्थ सिद्धि योग का निर्माण होने जा रहा है जो सुबह 11 बजकर 52 मिनट से लेकर 13 अगस्त की सुबह 5 बजकर 49 मिनट तक रहेगा। इस बीच आप मां पार्वती का पूजन कर सकते हैं।

कजरी तीज पूजन विधि

==========

इस दिन महिलाएं कठोर व्रत भी रखती हैं, जिसे कजरी तीज व्रत के रूप में जाना जाता है। कजरी तीज के दिन महिलाएं देवी पार्वती की पूजा करती हैं और उनसे सुखी वैवाहिक जीवन का आशीर्वाद मांगती हैं। शाम के समय महिलाएं पूजा के लिए इकट्ठा होती हैं। महिलाएं नीम के पेड़ की कुमकुम, चावल, हल्दी और मेहंदी से पूजा करती हैं और फल व मिठाई भी चढ़ाती हैं।

गोमुत्र के अद्भुत लाभ

आयुर्वेद के अनुसार देसी गाय का ₹गौ मूत्र₹ एक संजीवनी है। गौ-मूत्र एक अमृत के सामान है जो दीर्घ जीवन प्रदान करता है, पुनर्जीवन देता है, रोगों को भगा देता है, रोग प्रतिकारक शक्ति एवं शरीर की मांस-पेशियों को मज़बूत करता है।

आयुर्वेद के अनुसार यह शरीर में तीनों दोषों का संतुलन भी बनाता है और कीटनाशक की तरह भी काम करता है।

गौ-मूत्र का कहाँ-कहाँ प्रयोग किया जा सकता है

संसाधित किया हुआ गौ मूत्र अधिक प्रभावकारी प्रतिजैविक, रोगाणु रोधक (antiseptic), ज्वरनाशी (antipyretic), कवकरोधी (antifungal) और प्रतिजीवाणु (antibacterial) बन जाता है। ये एक जैविक टोनिक के सामान है। यह शरीर-प्रणाली में औषधि के सामान काम करता है और अन्य औषधि की क्षमताओं को भी बढ़ाता है।

यह अन्य औषधियों के साथ, उनके प्रभाव को बढ़ाने के लिए भी ग्रहण किया जा सकता है। गौ-मूत्र कैंसर के उपचार के लिए भी एक बहुत अच्छी औषधि है।

यह शरीर में सेल डिवीज़न इन्हिबिटोरी एक्टिविटी को बढ़ाता है और कैंसर के मरीज़ों के लिए बहुत लाभदायक है।

आयुर्वेद ग्रंथों के अनुसार गौ-मूत्र विभिन्न जड़ी-बूटियों से परिपूर्ण है। यह आयुर्वेदिक औषधि गुर्दे, श्वसन और ह्रदय सम्बन्धी रोग, संक्रामक रोग (infections) और संधिशोथ (Arthritis), इत्यादि कई व्याधियों से मुक्ति दिलाता है।

गौ-मूत्र के लाभों को विस्तार से जाने

देसी गाय के गौ मूत्र में कई उपयोगी तत्व पाए गए हैं, इसीलिए गौमूत्र के कई सारे फायदे है।गौमूत्र अर्क (गौमूत्र चिकित्सा) इन उपयोगी तत्वों के कारण इतनी प्रसिद्ध है।देसी गाय गौ मूत्र में जो मुख्य तत्व है उनमें से कुछ का विवरण जानिए.

1. यूरिया ....यूरिया मूत्र में पाया जाने वाला प्रधान तत्व है और प्रोटीन रस-प्रक्रिया का अंतिम उत्पाद है। ये शक्तिशाली प्रति जीवाणु कर्मक है।
2. यूरिक एसिड ..... ये यूरिया जैसा ही है और इस में शक्तिशाली प्रति जीवाणु गुण हैं। इस के अतिरिक्त ये केंसर कर्ता तत्वों का नियंत्रण करने में मदद करते हैं।
3. खनिज ..... खाद्य पदार्थों से व्युत्पद धातु की तुलना मूत्र से धातु बड़ी सरलता से पुनः अवशोषित किये जा सकते हैं। संभवतः मूत्र में खाद्य पदार्थों से व्युत्पद अधिक विभिन्न प्रकार की धातुएं उपस्थित हैं। यदि उसे ऐसे ही छोड़ दिया जाए तो मूत्र पंकिल हो जाता है। यह इसलिये है क्योंकि जो एंजाइम मूत्र में होता है वह घुल कर अमोनिया में परिवर्तित हो जाता है, फिर मूत्र का स्वरुप काफी क्षार में होने के कारण उसमे बड़े खनिज घुलते नहीं है। इसलिये बासा मूत्र पंकिल जैसा दिखाई देता है। इसका यह अर्थ नहीं है कि मूत्र नष्ट हो गया। मूत्र जिसमे अमोनिकल विकार अधिक हो जब त्वचा पर लगाया जाये तो उसे सुन्दर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
4. उरोकिनेज .....9यह जमे हुये रक्त को घोल देता है,ह्रदय विकार में सहायक है और रक्त संचालन में सुधार करता है।
5. एपिथिल्यम विकास तत्व क्षतिग्रस्त कोशिकाओं और ऊतक में यह सुधर लाता है और उन्हें पुनर्जीवित करता है।
6. समूह प्रेरित तत्व यह कोशिकाओं के विभाजन और उनके गुणन में प्रभावकारी होता है।
7. हार्मोन विकास यह विप्रभाव भिन्न जैवकृत्य जैसे प्रोटीन उत्पादन में बढ़ावा, उपास्थि विकास,वसा का घटक होना।
8. एरीथ्रोपोटिन रक्ताणु कोशिकाओं के उत्पादन में बढ़ावा।
9. गोनाडोट्रोपिन मासिक धर्म के चक्र को सामान्य करने में बढ़ावा और शुक्राणु उत्पादन।
10. काल्लीकरीन काल्लीडीन को निकलना, बाह्य नसों में फैलाव रक्तचाप में कमी।
11. ट्रिप्सिन निरोधक मांसपेशियों के अर्बुद की रोकथाम और उसे स्वस्थ करना।
12. अलानटोइन घाव और अर्बुद को स्वस्थ करना।
13. कर्क रोग विरोधी तत्व निओप्लासटन विरोधी, एच -11 आयोडोल - एसेटिक अम्ल, डीरेकटिन, 3 मेथोक्सी इत्यादि किमोथेरेपीक औषधियों से अलग होते हैं जो सभी प्रकार के कोशिकाओं को हानि और नष्ट करते हैं। यह कर्क रोग के कोशिकाओं के गुणन को प्रभावकारी रूप से रोकता है और उन्हें सामान्य बना देता है।
14. नाइट्रोजन... यह मूत्रवर्धक होता है और गुर्दे को स्वाभाविक रूप से उत्तेजित करता है।
15. सल्फर.. यह आंत कि गति को बढाता है और रक्त को शुद्ध करता है।
16. अमोनिया ...यह शरीर की कोशिकाओं और रक्त को सुस्वस्थ रखता है।
17. तांबा ...यह अत्यधिक वसा को जमने में रोकधाम करता है।
18. लोहा ...यह आरबीसी संख्या को बरकरार रखता है और ताकत को स्थिर करता है।
19. फोस्फेट ....इसका लिथोट्रिपटिक कृत्य होता है।
20. सोडियम ... यह रक्त को शुद्ध करता है और अत्यधिक अम्ल के बनने में रोकथाम करता है।
21. पोटाशियम ...यह भूख बढाता है और मांसपेशियों में खिझाव को दूर करता है।
22. मैंगनीज .... यह जीवाणु विरोधी होता है और गैस और गैंगरीन में रहत देता है।
23. कार्बोलिक अम्ल .... यह जीवाणु विरोधी होता है।
24. कैल्सियम ...यह रक्त को शुद्ध करता है और हड्डियों को पोषण देता है, रक्त के जमाव में सहायक।
25. नमक ....यह जीवाणु विरोधी है और कोमा केटोएसीडोसिस की रोकथाम।
26. विटामिन ए बी सी डी और ई (Vitamin A, B, C, D & E).. अत्यधिक प्यास की रोकथाम और शक्ति और ताकत प्रदान करता है।
27. लेक्टोस शुगर ....ह्रदय को मजबूत करना, अत्यधिक प्यास और चक्कर की रोकथाम।
28. एंजाइम्स ...प्रतिरक्षा में सुधार, पाचक रसों के स्रावन में बढ़ावा।
29. पानी ....शरीर के तापमान को नियंत्रित करना। और रक्त के द्रव को बरक़रार रखना।
30. हिप्पुरिक अम्ल ...यह मूत्र के द्वारा दूषित पदार्थो का निष्कासन करता है।
31. क्रीयटीनीन ...जीवाणु विरोधी।
32. स्वमाक्षर ....जीवाणु विरोधी, प्रतिरक्षा में सुधार, विषहर के जैसा कृत्य।

वैदिक ग्रंथों में गाय की उपयोगिता पर विस्तार से चर्चा की गई है गाय से मिलने वाले फायदे क्या हैं और आप कैसे अपने जीवन को स्वस्थ रख सकते हैं। यह अब वैज्ञानिक तौर पर भी सिद्ध किया जा चुका है की गाय का मूत्र कीटाणुनाशक है जो शरीर में विभिन्न बीमारियों को दूर करने में सहायक है। गोमूत्र में कार्बोलिक एसिड, यूरिया, फॉस्फेट, यूरिक एसिड, पोटैशियम और सोडियम होता है। जब गाय का दूध देने वाला महिना होता है तब उस के मूत्र में लेक्टोजन रहता है, जो ह्दय और मस्तिष्क के विकारों के लिए फायदेमंद होता है। गाय के मूत्र का उपयोग विभिन्न रोगों में कैसे किया जा सकता है आपको बताते हैं। एक बात का विशेष ध्यान रखे की गौमूत्र भी उसी गाय का लाभकारी है जिसे शुद्ध प्राकृतिक भोजन दिया जाता है तथा जिसे दूध बढाने के लिए जहरीले इंजेक्शन नहीं दिए जाते)

गोमूत्र के लाभ

1. गौमूत्र में वात और कफ के सभी रोगों को पूरी तरह खत्म करने की शक्ति है। पित्त के रोगों को भी गौमूत्र खत्म करता है लेकिन कुछ औषधियों के साथ।
2. वात, पित्त और कफ के कुल 148 रोग हैं। भारत में इन 148 रोगों को अकेले खत्म करने की क्षमता यदि किसी वस्तु में है तो वो है देशी गाय का गौमूत्र। गोमूत्र वात, पित्त, कफ तीनों की सम अवस्था में लाने के लिए सबसे ज्यादा मदद करता है।
3. आधा कप गोमूत्र सुबह खाना खाने के एक घंटे पहले बवासीर/बादी और खूनी, फिस्टुला, भगन्दर, अर्थराइटिस, जोड़ों का दर्द, उक्त रक्त दबाव, ह्रदयघात, कैंसर आदि ठीक करने के लिए लें।
4. गौमूत्र में वही 18 सूक्ष्म पोषक तत्व हैं जो कि मिट्टी में होते हैं। ऐसा वैज्ञानिकों का परीक्षण कहता है। भारत में cDRI लखनऊ, वैज्ञानिकों की दवाओं पर काम करने वाली सबसे बड़ी संस्था है। शरीर की बीमारियों को ठीक करने के लिए शरीर को जितने घटक चाहिए तो सब गौमूत्र में उपलब्ध हैं जैसे-सल्फर की कमी से शरीर में त्वचा के रोग होते हैं।
5. गौमूत्र पीने से त्वचा के सभी रोग ठीक होते हैं, जैसे-सोराइसिस, एक्जिमा, खुजली, खाज, दाल जैसे सब तरह के त्वचा रोग ठीक होते हैं। गौमूत्र से हड्डियों के रोग भी ठीक होते हैं। गौमूत्र से खाँसी, सर्दी, जुकाम, दमा, टी.वी., अस्थमा जैसी सब बीमारियाँ ठीक होती हैं। गोमूत्र से ठीक हुई टी.वी. दुबारा उस शरीर में नहीं आती है। गोमूत्र से शरीर की प्रतिरोधक शक्ति इतनी अधिक बढ़ जाती है कि इससे बीमारियाँ शरीर में प्रवेश नहीं कर पाती हैं।
6. टी.वी. की बीमारी में डाट्स की गोलियों का असर गौमूत्र के साथ 20 गुना बढ़ जाती है अर्थात् सिर्फ गौमूत्र पीने से टी.वी. 3 से 6 महीने में ठीक होती है, सिर्फ डाट्स की गोलिशाँ खाने से टी.वी. 9 महीने में ठीक होती है और डाट्स की गोलियाँ और गौमूत्र साथ-साथ देने पर टी.वी. 2 से 3 महीने में ठीक हो जाती है।
7. गौमूत्र का असर गले के कैंसर पर आहार नली के कैंसर पर पेट के कैंसर पर बहुत ही अच्छा है। गौमूत्र के असर को कैंसर के केस में अध्ययन/प्रयोग के लिए बलसाड (गुजरात) में एक बहुत बड़ा अस्पताल बन रहा है। जिसे कुछ जैन समाज के लोगों ने बनवाया है।
8. शरीर में जब करक्यूमिन नाम के तत्व की कमी होती है। तभी शरीर में कैंसर का रोग आता है। गौमूत्र में यही करक्यूमिन भरपूर मात्रा में है और पीने के तुरन्त बाद पचने वाला है। जिससे कि तुरंत असरकारक हो जाता है। दवा के प्रति अच्छी भावना नहीं होने से शरीर की प्रतिरोधक क्षमता उस दवा को पचाने में कम हो जाती है इसलिए दवाओं को हमेशा सकारात्मक भाव से ही ग्रहण करना चाहिए।
9. हरड़े पानी में घिस कर देने पर कम लाभ करती है और गौमूत्र में घिस कर देने पर अधिक लाभ करती है।
10. गौमूत्र हमेशा सुबह को ही लेना चाहिए। बहुत बीमार व्यक्ति को 100 ग्राम पीना चाहिए। इसे आधा-आधा करके भी ले सकते हैं। खाली पेट यानी सुबह-सुबह, कुछ भी खाने से 1 घंटे पहले जो बीमार हैं वह दिन में दो बार भी ले सकते हैं और स्वस्थ लोगों को सिर्फ सुबह ही लेना चाहिए। स्वस्थ लोगों को 50 ग्राम से ज्यादा नहीं पीना चाहिए। बँधी हुई गाय का मूत्र उतना उपयोगी नहीं है। जर्सी गाय के मूत्र में सिर्फ तीन पोषक तत्व होते हैं।
11. आँख के सभी रोग कफ के हैं और आँख के कोई रोग जैसे मोतियाबिंद (कैटरेक्टर), ग्लुकोमा, रैटिनल डिटैचमेन्ट (इसका दुनिया में कोई इलाज नहीं है यहाँ तक कि ऑपरेशन भी नहीं है)। इसके साथ आँखों की सभी छोटी-छोटी बीमारियाँ जैसे आँखों का लाल होना, आँखों से पानी निकलना, आँखों में जलन होना, ये सभी छोटी-बड़ी बीमारियाँ गौमूत्र से ठीक होती हैं। मतलब पूरी तरह से ठीक होती हैं। गौमूत्र(केवल ताजा अर्क नहीं) सूती कपड़े के आठ परत से छानकर 1-1 बूंद आँखों में डालना है। आँखों के चश्मे 6 महीने में उतर जायेंगे। ग्लुकोमा बिना ऑपरेशन ठीक होता है-4 सवा चार महीने में, कैटरक्त-6 सा 6 महीने में ठीक हो जाता है। रेटिनल डिटैचमेन्ट को एक साल लगता है।
12. 1-1 बूंद रोज सुबह-सुबह डालना है और 3 से 4 दिनों में बीमारी ठीक हो जायेगी। बच्चे जिनकी पसलियाँ कफ की वजह से परेशान कतरी हैं, एक चम्मच गौमूत्र पीला दें तुरंत आराम मिलना शुरू हो जायेगा। ऐसा बड़े लोग भी कर सकते हैं मात्रा आधा कप बढ़ाकर।
13. मूत्र पिण्ड के सभी रोग जैसे किडनी फेल होने के और किडनी के दूसरी तकलीफों के लिए गौमूत्र 1/2 कप रोज सुबह खाली पेट लें।
14. पेशाब से संबंधित किसी भी रोग (लगभग 22 से 28 रोग) में गौमूत्र 1/2 कप रोज सुबह खाली पेट लें।
15. कब्जीयत की बीमारी में 1/2 कप गौमूत्र 3 से 4 दिन सुबह-सुबह खाली पेट पियें, बिल्कुल ठीक हो जायेगी।
16. पित्त के सभी रोगों के लिए गौमूत्र जब भी पियें, उन समयों में घी (देशी गाय का) का सेवन खाने में अधिक करें। पित्त के रोगी गौमूत्र का इस्तेमाल पानी बराबर मात्रा में मिलाकर करें जैसे एसिडिटी, हाईपर एसिडिटी, अल्सर, पेप्टिक अल्सर, पेट में घाव हो गया आदि के लिए।
17. गौमूत्र की मालिश करने से त्वचा के सफेद धब्बे सब चले जायेंगे। खाज, खुजली एग्जिमा थोड़ा गौमूत्र रोज मालिश करें सब ठीक हो जायेगा।
18. आँखों के नीचे काले धब्बे हैं। गौमूत्र रोज सुबह-सुबह लगाएं, काले धब्बे चले जायेंगे। गौमूत्र नहीं मिले तो गौमूत्र का अर्क ले सकते हैं। अर्क 1 चम्मच से अधिक नहीं लेना चाहिए। अर्क को आँख में डालने के लिए प्रयोग न करें।
19. कैंसर ठीक करने वाला तत्व करक्युमिन हल्दी के साथ-साथ गौमूत्र में भी भरपूर मात्रा में होता है। गौमूत्र ताजा पीना चाहिए, 48 मिनट के अन्दर गौमूत्र बोतल में भरकर 4-5 दिन तक रख सकते हैं। बोतल काँच का होना चाहिए।
20. गाय जो साफ-सुथरे वातावरण में रहती हो, अच्छा चारा खाती हो और नियमितन रूप से घुमने के लिए जाती है, उसका मूत्र जरूर पियें वो सबसे ज्यादा लाभकारी होगा। यदि ऐसी गाय का अभाव हो तो बिना संकोच के किसी भी देशी गाय का गौमूत्र ले लें। ऐसा मूत्र नुकसान नहीं करेगा जब भी कुछ करेगा फायदा ही करेगा। अब तक के सारे शोध यही बताते हैं कि देशी गाय के गौमूत्र का कोई साइड इफेक्ट नहीं है। गौमूत्र अधिक पी लेने पर पेशाब के रास्ते बाहर निकल जाता है। अर्थात्किसी प्रकार का नुकसान नहीं पहुँचता है। इसमें सिर्फ इतनी बात ध्यान में रखनी है कि गाय देशी हो और गाय गर्भवती न हो, गाय बीमार न हो।
21. गौमूत्र में गेंदे के फूल की चटनी बनाकर उबालकर थोड़ा हल्दी डालकर कैंसर के केस में बहुत ही तेजी से लाभ मिलता है।
22. हैपेटाइटिस परिवार (A, B, c, D, E, F) की बीमारियाँ जिसे ज्वाइन्डिस के नाम से या पीलिया के नाम से हम जानते हैं, ये सारी बीमारियाँ गौमूत्र से ठीक होती हैं।
23. वात और कफ के रोगी बिना कुछ मिलाये गौमूत्र का सेवन कर सकते हैं जैसे दमा, अस्थमा, सर्दी, खांसी आदि।
24. 18 वर्ष से अधिक की स्थिति में गौमूत्र की मात्रा 1/2 कप (50 ग्राम) और 18 वर्ष से कम की स्थिति में 25 ग्राम। गौमूत्र पीने का सर्वोत्तम समय सुबह-सुबह निराआहार अर्थात्खाली पेट, कुछ भी खाने के 1 घंटे पहले। जो बीमारी जितने समय में आती है, उतने समय में ही जाती है। अतः लंबी और गंभीर बीमारियों की स्थिति में गौमूत्र कम से कम 3 महीना लेना चाहिए और छोटी बीमारियों की स्थिति में 2 हफ्ते से 1 महीने तक गौमूत्र लेना चाहिए।
25. सर्दी, खाँसी, जुकाम, डायरिया डिसेन्ट्री, कान्स्टीपेशन जैसी बीमारियाँ 2-3 दिन में मिट जाती हैं। 8 महीने से अधिक लेने की स्थिति में हर 8 महीने के बाद 15 दिन से 20 दिन का अन्तर रखना आवश्यक है। ऐसा इसलिए करना चाहिए कि भविष्य में इसकी आदत न लगे।
26. गोबर और गौमूत्र का उपयोग दोनों तरह से अच्छा होता है, आन्तरिक और बाहरी। बाहरी स्थिति में दाद, खाज, खुजली, दाग, धब्बे आदि की स्थिति में, गौमूत्र लगाने के बाद 10 से 15 मिनट सूर्य की रोशनी में छोड़ने के बाद धो देना चाहिए।
27. गाय का मूत्र जीवराशि रहित है इसलिए जैन लोग भी इसका सेवन कर सकते हैं। जैने लोग गौमूत्र के स्थान पर गौ अर्क का उपभोग कर सकते हैं। जैन लोग गोबर का इस्तेमाल न करें। गौमूत्र अर्क का सेवन 1 चम्मच से 2 चम्मच करें। चाहें तो 1/2 कप गुनगने पानी में मिलाकर भी ले सकते हैं। गौमूत्र यदि 2-3 दिन पुराना है तो उसमें जरूर पानी मिलायें।

पुरुषों की ताकत बढ़ाने वाली कुछ आयुर्वेदिक औषधियाँ

आयुर्वेदिक ग्रंथों के आधार पर प्राचीन जड़ी-बूटियों, रसायनों और सोना, चांदी, मोती भस्म जैसी धातुओं से शारीरिक दुर्बलता दूर करके शारीरिक ताकत बढ़ाने वाली औषधी तैयार करते थे। वो औषधियां बहुत गुणों से भरपूर होती थी। इसलिए आज हम इस आर्टिकल में आपको बता रहे हैं कि राजा-महाराजाओं द्वारा शारीरिक दुर्बलता को दूर कर कामोत्तेजना को बढ़ाने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले उन प्राचीन नुस्खों के बारे में जिनमें से कुछ आज भी आसानी से मिल जाते हैं। जिनकी मदद से आप भी अपनी कामेच्छा बढ़ाने में इस्तेमाल कर सकते हैं !!

1. शिलाजीत:- शिलाजीत एक तार जैसा पद्दार्थ है जो गर्मियों के समय में हिमालय की चट्टानों से निकलता है। इसे अमृत और "कमजोरी विनाशक" के नाम से भी जाना जाता है। शीरीरिक दुर्बलता को दूर करने और कामोत्तेजना को बढ़ाने के लिए आज भी कई लोग शिलाजीत का इस्तेमाल करते हैं. इससे कमजोरी, एनर्जी की कमी, खराब इम्युनिटी, असमय बुढ़ापा,इरेक्टाइल डिस्फंक्शन जैसी समस्याएं दूर होती हैं। शिलाजीत को चावल के दाने के बराबर एक चम्मच गाय के घी या शहद के साथ लेना चाहिए !!

2. अश्वगंधा:- अश्वगंधा एक चमत्कारी गुणों वाली औषधि है, आर्युवेद में अश्वगंधा का विशेष स्थान है, इसे भारत में कई स्थानों पर भारतीय गिनसेंग भी कहा जाता है। इसकी जड़ों का इस्तेमाल कई प्रकार की दवाओं को बनाने में किया जाता है। कमजोरी, थकान, लो स्पर्म काउंट, इम्युनिटी की समस्या को दूर करने के लिए प्राचीन समय से ही अश्वगंधा का इस्तेमाल किया जा रहा है. सोने से पहले गुनगुने दूध के साथ एक चम्मच अश्वगंधा पावडर का सेवन करना पुरुषों के लिए काफी फायदेमंद बताया जाता है !!

3. सफेद मूसली:- सफेद मूसली एक शक्तिवर्धक जड़ी बूटी है जो कि ज्यादातर यौन क्षमता को बढ़ाने के लिये प्रयोग की जाती है। मगर ऐसा नहीं है कि इसका केवल एक ही काम हो, यह अन्य औषधीय गुणों से भी भरी हुई होती है। विश्व बाजार में इसकी बहुत मांग बढ़ी है। इरेक्टाइल डिस्फंक्शन, इन्फर्टिलिटी, स्पर्म की कमी, कमजोरी और कमजोर इम्युनिटी की समस्या को दूर करने के लिए सफेद मूसली का सेवन प्राचीन समय से किया जाता रहा है। बेहतर परिणाम के लिए मिश्री और दूध के साथ एक चम्मच मूसली पावडर का सेवन सुबह और शाम को करना चाहिए !!

4. शतावरी:- परंपरागत रूप से शतावरी को महिलाओं की जड़ी बूटी माना गया है, हांलाकि यह पौधा पुरुषों के हार्मोन लेवल को बढ़ा कर उनकी कामुकता में भी इजाफा कर सकता है। पुरुषों में इन्फर्टिलिटी, इरेक्टाइल डिस्फंक्शन, थकान, कमजोरी, लो स्पर्म काउंट और यूरिन की समस्या को दूर करने के लिए शतावर के प्राचीन नुस्खे का इस्तेमाल आज भी किया जाता है। बेहतर परिणाम के लिए एक चम्मच मिश्री और गाय के घी के साथ आधा चम्मच शतावर पावडर का इस्तेमाल करना चाहिए और फिर दूध पीना चाहिए !!

5. केसर:- सदियों से केसर का प्रयोग स्वास्थ्य और सौंदर्य लाभ पाने के लिए किया जाता रहा है। केसर की तासीर गर्म होती हैं। केसर हमारे शरीर की दुर्बलता को दूर करके ताकत प्रदान करती है। केसर के नुस्खे का इस्तेमाल प्राचीन समय में राजा-महाराजा भी किया करते थे। इरेक्टाइल डिस्फंक्शन, इन्फर्टिलिटी, लो स्पर्म काउंट, कमजोरी और थकान जैसी समस्या से निजात पाने के लिए केसर का इस्तेमाल किया जाता है. इसके लिए गुनगुने दूध में चुटकी भर केसर डालकर रात को सोने से पहले उसका सेवन करना चाहिए !

मस्तिष्क की कमजोरी (दिमाग बनेगा Computer):-

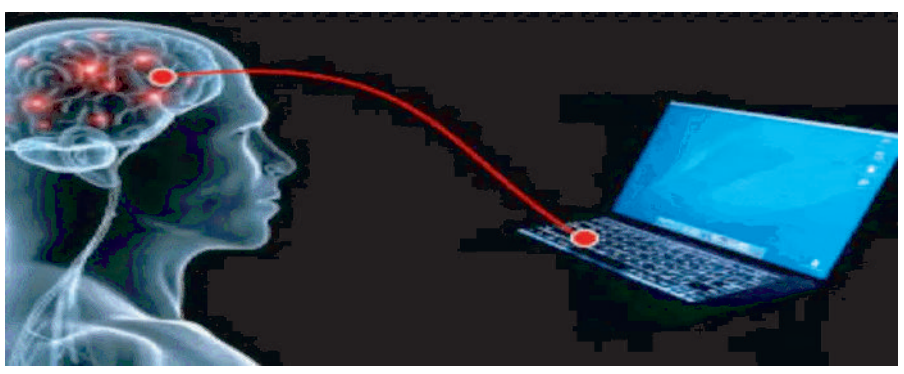

प्रायः लोगों में समय के साथ भूलने की बीमारी हो जाती है जैसे कि कोई सामान बाजार से लाना था और बाजार गए भी लेकिन बिना सामान लाये ही घर वापस आ गये। घर आकर याद आता है क्या सामान लाना था। मोबाईल हाथ में लिए हुए है लेकिन सारा घर मोबाईल खोज रहें है। जैसे कोई जानकारी याद करने की कोशिश कर रहें है और ऐसा लग रहा है कि आपको याद है लेकिन मुह में नहीं आ रहा है। इस तरह की बीमारियों को आप घरेलू और आयुर्वेदिक नुस्खों से ठीक कर सकतें है। कुछ ऐसे ही कुछ नुस्खे नीचे दिये गए है, आप इनका उपयोग करके देखिये, इससे आपको लाभ होगा।

घरेलु उपाय:- काली मिर्च और बादाम को बराबर लेकर पानी में भिगों दे और कुछ समय बाद उसे थोड़ा पानी में पीस ले। इसे रोजाना पियें। इसे पीने से दिमागी ताकत बढ़ती है। बासी मुँह सुबह उठकर शाम का रखा हुआ पानी पियें। यह दिमाग की तरावट के लिए बहुत ही अच्छा इलाज है और लगातार पीने से याददाश्त बढ़ती है।

आयुर्वेदिक इलाज-

ब्राह्मी वटी 60गोली,
स्मृतिसागर रस 60गोली,
अशवगंधादि चूर्ण 30ग्राम,
त्रिबंग भस्म 8ग्राम,
अभ्रक भस्म 7ग्राम,
मुक्ता पिष्टी 5ग्राम,
रजत भस्म 2ग्राम,
स्वर्ण भस्म ग्राम।

सबको कसकर घुटाई करके पहले मालकंगनी के तैल, फिर अश्वगंधा के काढ़े में घोटकर सुखाकर 60पुडियाँ बना लें। सुबह-शाम 1-1पुडिया मलाई,शहद से चाटकर ऊपर से दूध पीएं।

पंद्रह अगस्त: अपने घरों में तिरंगा फ़हरा कर आज़ादी का जश्न मनाएं

हमारी आस्था ,हमारे अहसास में बसती है,और दिलकी धड़कनों में बसती है, मातृभूमि की मुब्बत, देश की ताक़त ,साहस और आस्था का प्रतीक हमारा प्यारा तिरंगा झंडा ,हर भारतीय के दिल मे बसने वाली आस्था ,एकता का प्रतीक तिरंगा झंडा प्रति वर्ष अनुसार स्वतंत्रता दिवस पर यानी पन्द्रह अगस्त को फ़हराया जाएगा, हम 15 अगस्त २०२५ को 79वां स्वतंत्रता दिवस मनाने जा रहे हैं, प्रधान मंत्री जी द्वारा घोषणा की गई है, कि हर घर घर तिरंगा फ़हराया जाएगा ।

हर घर तिरंगा अभियान का उद्देश्य है कि सभी लोग अपने घरों में तिरंगा फ़हरा कर आज़ादी का जश्न मनाएं।जिस प्रकार देश के विशिष्टजन ध्वजारोहण करते हैं,उसी तरह प्रत्येक नागरिक अपने घर में झण्डा फ़हराकर आज़ादी के पर्व में उत्साह से शामिल हों। ए मेरे वतन के लोगों ज़रा आंख में भर लो पानी जो शहीद हुए हैं उनकी ज़रा याद करो कुरबानी,.उन शहीदों को याद करके जिन्होंने हमे आज़ादी दिलाने के लिए खुद को भारत देश के लिए बलिदान कर दिया किसी बहन ने अपना भाई खोया तो किसी मां ने किसी बाप ने अपने जिगर का टुकड़ा ,अपना बेटा किसी ने अपना सुहाग को खो दिया जब जाकर हमारे देश को आज़ादी मिली।

ज़िंदगी के पल सेकंड मिनिट और घंटो में तब्दील होकर दिन और रात में बदलते रहते हैं, समय न किसी के रोके रुका है न कोई इसको रोक सकता है, और ये ही दिन रात महीनों और महीनों से साल बन जाते हैं,और ये साल इतिहास के पन्ने बन कर हमें याद दिलाते हैं, बीते हुए उन लम्हातों की जो अब हमारी पहुंच से बाहर हैं लेकिन क्या इतिहास के इन पन्नों को कभी हमने पलटने की कोशिश की है, शायद नहीं या शायद हां ये पन्ने उन शहीदों की याद दिलाते हैं जो हमे आज़ाद कर गए।और अब हम खुली हवा में अपने आज़ाद मुल्क में सांस ले रहे हैं ये उपकार है उन शहीदों का जिन्होंने अपने जान की परवाह नहीं की और अंग्रेज़ों को लोहे के चने चबवा दिए। आख़िरकार अंग्रेज़ों को भारत छोड़ना पड़ा ।ये आज़ादी आसानी नहीं मिली हमें चाहिए की हम उन शहीदों की कुर्बानियों को याद करें, और आपस में मुब्बत से मिल कर रहें। शहीदों और क्रांतिकारियों की विरासत को संभाल कर रखें ॥15 अगस्त , यौमे आज़ादी आज़ादी का ये शुभ और महत्वपूर्ण दिन हमारे मुल्क के राजनीतिक इतिहास में सबसे ज्यादा अहमियत रखता है। ये वह दिन है जब भारत को फिरंगियों की २०० वर्षों की गुलामी की बेड़ियों से आज़ादी मिली थी। अंग्रेज़ों के शासन काल में मुल्क की आबादी पर काफी जुल्म किए गए। ब्रिटिश हुकूमत के जुल्मों से देश की जनता को छुटकारा दिलाने के लिए सैकड़ों स्वतंत्रता सेनानियों ने अपने प्राणों की आहुति दे दी। ऐसे में यह दिन उन महान क्रांतिकारियों और स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान को याद करने का भी है, जिन्होंने देश को आज़ादी दिलाने के लिए अपना सब कुछ दांव पर लगा दिया। देश को आज़ाद कराने में महात्मा गांधी, सुभाष चंद्र बोस, भगत सिंह, मंगल पाण्डे, ,राजगुरु, चंद्र शेखर आज़ाद,सुखदेव, जवाहरलाल नेहरू, लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक जैसे कई क्रांतिकारियों और स्वतंत्रता सेनानियों का अहम योगदान रहा। सभी का नाम लेना मुमकिन नहीं है।

एक लंबी फ़ेहरिस्त है,उनक्रांति करियों की,यह दिन इन सभी क्रांतिकारियों और स्वतंत्रता सेनानियों को नमन करने और श्रद्धांजलि देने का पावन दिन है। और हमारा कार्तव्य भी। आओ हम सब मिलकर प्रण लें कि हम इस गौरवशाली राष्ट्र के सम्मान में साथ आकर पंद्रह अगस्त पर मज़बूत भारत के तिरंगे झंडे को नमन करते हुए इसके सम्मान में अपना सर झुका कर सारे विश्व को बता दें कि हम भारतवासी एक है, तिरंगे झंडे के लिए हमअपना सर्वस्व लुटाने के लिये प्रतिबद्ध रहने की क़सम दिल से लेकर गौरवशाली भारत के नागरिक होने पर गर्व करते है।,आपको जैसे पता होना चाहिये कि आज़ाद" भारत देश"ही नहीं हमारी माता भी है, भारत माता ,इस धरती के कण कण में ज़रें ज़रें में हम सब की आत्मा बसती है, जब हम तिरंगे झंडे की बात कर रहे है, जिसके नीचे खड़े होकर गर्व से कह रहे हैं कि आवाज़ दो हम एक है। और ये हमें जानकारी होनी ही चाहिए कि हमारे राष्ट्रीय गौरव हमारा तिरंगा झंडा कब और कैसे वजूद में आया, किसने इसे बनाया ,भारत के राष्ट्रीय ध्वज जिसे हम तिरंगा कहते है , ये तिरंगा झंडा हमारे देश की शान है ,हम भारत वासियों की पहचान है, तीन रंग की क्षैतिज पट्टियों के बीच नीले रंग के एक चक्र द्वारा सुशोभित ध्वज है । भारतीय झंडे की अभिकल्पना पिंगली वैंकैया ने की थी,कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी में पढ़ाई करने वाले वेंकैया की मुलाकात जब महात्मा गांधी से हुई। उन्होंने इस बारे में बात की, वैंकैया की झंडों में बहुत रुचि थी। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने उनसे भारत के लिए एक झंडा बनाने को कहा। वेंकैया ने 1916 से 1921 कई देशों के झंडों पर रिसर्च करने के बाद एक झंडा डिज़ाइन किया। 1921 में विजयवाड़ा में आयोजित भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन में गांधी जी से मिलकर लाल और हरे रंग से बनाया हुआ झंडा दिखाया। इसके बाद से देश में कांग्रेस के सारे अधिवेशनों में इस दो रंगों वाले झंडे का इस्तेमाल होने लगा। इस बीच जालंधर के लाला हंसराज ने झंडे में एक चक्र चिन्ह बनाने का सुझाव दिया। झंडे के बीच चरखे की जगह अशोक चक्र ने ले ली । इस झंडे को भारत की आज़ादीकी घोषणा के २४ दिन पहले २२ जुलाई 1947 को संविधान सभा ने भारतीय राष्ट्रीय ध्वज के रुप में अपनाया । देश की स्वतंत्रता के बाद भारत के पहले उपराष्ट्रपति (1952-1962) और भारत के दूसरे राष्ट्रपति (1962-1967) डॉ.सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने चक्र के महत्व को समझाते हुए कहा था कि झंडे के बीच में लगा अशोक चक्र धर्म का प्रतीक है । इस ध्वज की सरपरस्ती में रहने वाले सत्य और धर्म के सिद्धांतों पर चलेंगे । चक्र गति का भी प्रतीक है । भारत को आगे बढ़ना है । ध्वज के बीच में लगा चक्र अहिंसक बदलाव की गतिशीलता का प्रतीक है महात्मा गांधी के सुझाव पर वेंकैया ने शांति के प्रतीक सफेद रंग को राष्ट्रीय ध्वज में शामिल किया। 1931 में कांग्रेस ने केसरिया, सफेद और हरे रंग से बने झंडे को स्वीकार किया। हालांकि तब झंडे के बीच में अशोक चक्र भीशामिल कर लिया गया था, इसे पंद्रहअगस्त 1947 को अंग्रेज़ों से भारत की आज़ादी के कुछ ही दिन पूर्व २२ जुलाई , 1947 को आयोजित भारतीय संविधान सभा की बैठक में अपनाया गया था ।जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है कि इसमें तीन समान चौड़ाई की क्षैतिज पट्टियाँ है , जिनमें सबसे ऊपर केसरिया रंग की पट्टी जो देश की ताकत और साहस को दर्शाती है , बीच में श्वेत पट्टी धर्म चक्र के साथ शांति और सत्य का संकेत है और नीचे गहरे हरे रंग की पट्टी देश के शुभ , विकास और उर्वरता को दर्शाती है । ध्वज की लम्बाई एवं चौड़ाई का अनुपात ३ : २ है । सफ़ेद पट्टी के मध्य में गहरे नीले रंग का एक चक्र है जिसमें २४ आरे {तीलियां }होते हैं । यह इस बात प्रतीक है, कि भारत निरंतर प्रगतिशील है , और विकास की तरफ तेज़ी से बढ़ रहा है,इस चक्र का व्यास लगभग सफेद पट्टी की चौड़ाई के बराबर होता है, व इसका रूप सारनाथ में स्थित अशोक स्तंभ के शेर के शीर्ष फ़लक के चक्र में दिखने वाले की तरह होता है । भारतीय राष्ट्रध्वज अपने आप में ही भारत की एकता , शांति , समृद्धि और विकास को दर्शाता हुआ दिखाई देता है ।

हमें अपने देश के झंडे पर गर्व है,

15अगस्त को मनाने का मक़सद हर भारत वासी में देशभक्ति की भावना का संचार करना है ।उन शहीदों को याद करना है, जिनकी कुरबानियों का कारण ही हम आज स्वतंत्र हैं, . गर्व से कहें सब भारत माता की जय, तिरंगे झंडे की जय,

वंदे मातरम,वंदे मातरम, स्वतंत्रता दिवस अमर रहे।

डॉ. मुश्ताक अहमद शाह सहज़,
सरदा मध्यप्रदेश

बेंगलूरु के बेघरों के लिए केजीएफ बाबू ने लांच की 400 करोड़ की आवासीय परियोजना, मां के सपने को करेंगे साकार

मुख्य संवाददाता

मशहूर उद्यमी व अफनान कंस्ट्रक्शन्स के अध्यक्ष, केजीएफ बाबू ने कर्नाटक की अब तक की सबसे महत्वाकांक्षी सामाजिक आवास परियोजनाओं में से एक का अनावरण किया है। बेंगलूरु के चिकपेट निर्वाचन क्षेत्र में 400 करोड़ रुपए के लागत से शुरू की गई इस परियोजना का उद्देश्य, 10 हजार बेघर परिवारों को आश्रय प्रदान करना है।

केजीएफ बाबू अपने निजी और भुगतान की गई कर निधि से इस परियोजना का वित्तपोषण करेंगे। अपनी दिवंगत मां के सपने को साकार करने के लिए यह उनकी एक सच्ची श्रद्धांजलि है। इस पहल से गरीब अपने घरों में सम्मानजनक जीवन जी सकेंगे। बाबू ने कहा, जरूरतमंदों की सेवा ही धन का असली उद्देश्य है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि यह परियोजना पूरी तरह से मानवीय मूल्यों से प्रेरित है और इसके पीछे कोई राजनीतिक महात्वाकांक्षा नहीं है।

पारदर्शिता और जवाबदेही सर्वोपरि

अपनी ईमानदारी के लिए प्रसिद्ध केजीएफ बाबू ने आयकर विभाग को धन के स्रोत और व्यय के विवरण के बारे में औपचारिक रूप से सूचित कर दिया है। उन्होंने सार्वजनिक जवाबदेही के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराई है। पारदर्शिता इस पूरे प्रयास का आधार है।

सरकारी सहयोग की अपील

अपनी योजना को साकार करने के लिए, बाबू ने संबंधित सरकारी विभागों से भूमि आवंटन और पानी व बिजली जैसी बुनियादी ढांचे मुहैया कराने का अनुरोध किया है। परियोजना का लाभ योग्य लाभार्थियों तक पहुंचाने के लिए उनका प्रयास केवल वित्तीय ही नहीं, बल्कि परिचालनात्मक भी है।

तिरंगा हमारे आत्मसम्मान का प्रतीक है, और आज हमने उसे पूरे शौर्य के साथ लहराया- राजेश भाटिया

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। आज प्राचीन गौरी शंकर मंदिर से ऐतिहासिक चाँदनी चौक में , भव्य तिरंगा यात्रा में शामिल हुआ ।हजारों की संख्या में लोग लोकप्रिय सांसद भाई प्रवीन खंडेलवाल जी के नेतृत्व में चाँदनी चोक जिलाध्यक्ष श्री अरविंद गर्ग की अध्यक्षता में यात्रा में शामिल हुए ।

देशभक्ति के नारों से गूंजता हर कोना, जन-जन के चेहरे पर गर्व और उत्साह। मैं, इस गौरवपूर्ण क्षण का हिस्सा बनकर स्वयं को सौभाग्यशाली मानता हूँ। तिरंगा हमारे आत्मसम्मान का प्रतीक है, और आज हमने उसे पूरे शौर्य के साथ लहराया- राजेश भाटिया ।

अपने माता पिता बहन भाइयों एवं बुजुर्गों का सम्मान करें

एनआईईपीए ने 19वां स्थापना दिवस मनाया: भारत के शैक्षिक भविष्य की रूपरेखा पेश की गई

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। शैक्षिक योजना तथा प्रबंधन में क्षमता निर्माण और शोध के लिए समर्पित संस्थान, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन प्लानिंग एंड एडमिनिस्ट्रेशन ने आज इंडिया हैबिटेट सेंटर में अपना 19वां स्थापना दिवस एक विशिष्ट व्याख्यान के साथ मनाया। इस कार्यक्रम में जानेमाने विचारकों ने 21वीं सदी की चुनौतियों एवं अवसरों के लिए भारत के शैक्षिक परिदृश्य को आकार देने में इस संस्थान की विरासत और भूमिका पर विचार-विमर्श किया। कार्यक्रम के मुख्य मेहमान, इंडिया फाउंडेशन के अध्यक्ष डॉ. राम माधव ने ₹उभरती नई दुनिया के लिए भारत को तैयार करना₹ विषय पर स्थापना दिवस व्याख्यान दिया। दिवस की कार्यवाही की शुरुआत एनआईईपीए की डीन प्रोफेसर मोना खरे के स्वागत भाषण से हुई। इस भाषण ने विचारपूर्ण चर्चाओं के लिए मंच तैयार किया। इसके बाद एनआईईपीए की कुलपति प्रोफेसर शशिकला वांजारी ने भारतीय शिक्षा के लिए संस्थान की दूरदर्शी दिशा और राष्ट्रीय नीति में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करते हुए एक व्यापक व्यक्तव्य दिया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता एनआईईपीए के कुलाधिपति महेश चंद्र पंत ने की। प्रसिद्ध राजनीतिक विचारक और लेखक डॉ. राम माधव ने ₹उभरती नई दुनिया के लिए भारत को तैयार करना₹ विषय पर बोलते हुए डॉ. माधव ने भविष्य के साथ प्रोएक्टिव इंगेजमेंट और आत्मचिंतन की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि जिस भविष्य की वे बात कर रहे हैं, वह अब दूर नहीं है, बल्कि हमारे सामने है। अपने संबोधन में डॉ. राम माधव ने कहा, ₹सच्ची शिक्षा केवल जानकारी नहीं देती, यह रचनात्मकता को प्रेरित करती है, मन को मुक्त करती है और चरित्र का निर्माण करती है जो एक राष्ट्र को चुनौतियों से ऊपर उठने, इनोवेशन को बढ़ावा देने और सभी की गरिमा सुनिश्चित करने में सक्षम बनाती है।₹ उन्होंने कहा विचार की स्वतंत्रता और कर्तव्य बोध में निहित है। एनआईईपीए की माननीय कुलपति प्रोफेसर शशिकला वांजारी ने एनईपी 2020 के परिवर्तनकारी लक्ष्यों के साथ भारतीय शिक्षा को जोड़ने में एनआईईपीए की भूमिका का प्रभावशाली विवरण प्रस्तुत किया। प्रोफेसर वांजारी ने एनआईईपीए के मूल मिशन को रेखांकित करते हुए कहा, ₹एनआईईपीए में, हमारा लक्ष्य छात्रों को व्यक्तिगत और व्यावसायिक उन्नति के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशल और उपकरणों से लैस करना है। हम उन्हें जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए आवश्यक लचीलापन भी प्रदान करना चाहते हैं। शिक्षा के प्रति हमारा दृष्टिकोण कौशल-आधारित, बहु-विषयक और शिक्षार्थी-केंद्रित है...₹ यह दृष्टिकोण छात्रों को भविष्य के लिए तैयार करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।₹

एनआईईपीए भारत में शिक्षा सुधार क्षेत्रों में

एनईपी 2020 को लागू करने का नेतृत्व कर रहा है। साथ ही यह शोध और क्षमता निर्माण में उत्कृष्टता के अपने कार्य को भी बखूबी कर रहा है। इसकी यह सोच एनईपी 2020 के उन लक्ष्यों के साथ गहराई से मेल खाती है जो 2035 तक सकल नामांकन अनुपात (जीईआर) को 50% तक बढ़ाने और बहु-विषयक, कौशल-आधारित तथा शिक्षार्थी-केंद्रित शिक्षा को बढ़ावा देने की बात करते हैं। एनआईईपीए लगातार पेशेवर विकास कार्यक्रम आयोजित कर रहा है।

एनआईईपीए का वैश्विक प्रभाव महत्वपूर्ण है। संस्थान इंटरनेशनल प्रोग्राम फॉर एजुकेशनल एडमिनिस्ट्रेटर्स जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा दे रहा है। यह 3 से 23 सितंबर, 2025 तक आयोजित किया जाएगा। प्रौद्योगिकी अपनाना और भविष्य की दृष्टि एनआईईपीए की प्रौद्योगिकी अपनाने की प्रतिबद्धता इसके पेशेवर विकास कार्यक्रमों में स्पष्ट है और यह जनरेटिव एआई, इंटरएक्टिव ई-कंटेंट और उन्नत तकनीकों को ऑनलाइन पाठ्यक्रमों में एकीकृत करने पर केंद्रित हैं। एनआईईपीए अपने 19वें स्थापना दिवस के अवसर पर ज्ञान के माध्यम से एक शिक्षित समाज को बढ़ावा देने के अपने अटूट संकल्प की पुष्टि करता है।

राजनैतिक शुचिता के प्रतीक : ओम प्रकाश कोहली - डॉ. अतुल कोठारी

मुख्य संवाददाता

पूर्व राज्यपाल एवं पूर्व सांसद ओम प्रकाश कोहली के जन्म दिन पर ओप प्रकाश कोहली स्मृति समिति द्वारा सर शंकरलाल सभागार, दिल्ली विश्वविद्यालय में आयोजित व्याख्यान - 'राजनैतिक शुचिता' के अवसर पर शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के राष्ट्रीय सचिव डॉ. अतुल कोठारी ने कहा कि ओम प्रकाश कोहली के जन्म दिन पर उन्हें स्मरण करना और इस अवसर पर राजनैतिक शुचिता पर विचार करते हुए यह कहा जा सकता है कि कोहली के राजनैतिक शुचिता के प्रतीक थे। उनका राजनैतिक एवं सादगी भरा जीवन हम सभी के एक आदर्श है और यह आदर्श हम सभी को अपने जीवन में उतार कर उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि दी जा सकती है।

इस अवसर पर कार्यक्रम की प्रस्तावना प्रोफेसरराज कुमार भाटिया ने रखी।

पूर्व केन्द्रीय मंत्री डॉ. हर्ष वर्धन ने कहा कि कोहली ने दिल्ली एवं देश की राजनीति में शुचिता का आदर्श स्थापित किया है। हम में से जो भी राजनैतिक एवं सामाजिक जीवन से जुड़े और कोहली जी के सम्पर्क में आए उन्हें उनके जीवन से कुछ न कुछ सीख अवश्य मिली।

एनडीटीएफ के पूर्व अध्यक्ष एन के कक्कड़ ने कहा शिक्षक आंदोलनकारी एव.डूटा अध्यक्ष के रूप में कोहली ने हम सबके समक्ष अनेक उदाहरण पेश किए, उन्हें आज प्रत्येक शिक्षक को अपनाने की आवश्यकता है।

डूटा अध्यक्ष प्रोफेसर वी. एस. नेगी ने कहा कि कोहली के आदर्शों पर चलकर एनडीटीएफ शिक्षक हितों के लिए कार्यरत है। उन्होंने कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सभी का आभार व्यक्त किया तथा मंच संचालन के लिए डॉ. अकांक्षा खुराना का धन्यवाद किया।

जहांगीरपुरी में नेत्र जांच शिविर का आयोजन, 425 लोगों ने कराई आंखों की जांच

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली के जहांगीरपुरी इलाके के जे ब्लॉक स्थित प्रधान महेंद्र सिंह यादव समुदाय केंद्र में हरि ओम धर्मार्थ सेवा संस्था एवं रेजिडेंट वेलफेयर एसोसिएशन आई एंड जे ब्लॉक जहांगीरपुरी के द्वारा स्वर्गीय श्री महेंद्र सिंह यादव की पुण्य तिथि पर निशुल्क नेत्र जांच शिविर व चश्मा वितरण समारोह का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का आयोजन संस्था के प्रधान एम एल भास्कर की अगुवाई में किया गया। इस मौके पर मुख्य अतिथि के रूप में दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष देवेंद्र यादव सहित कई गणमान्य लोगों ने शिरकत की और स्वर्गीय श्री महेंद्र सिंह यादव की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। इस मौके पर दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष देवेंद्र यादव ने संस्था द्वारा किए जा रहे

कार्यों की सराहना की और कहा कि इस प्रकार के स्वास्थ्य शिविर सभी को आयोजित करने चाहिए क्योंकि ऐसे शिविर के आयोजन से लोगों को स्वास्थ्य की सेवाएं उनके घर के समीप भी मिल जाती हैं। मैं इस कार्यक्रम के लिए पूरी टीम को बधाई देता हूं।

इस मौके पर डॉक्टर श्रॉफ चैरिटी आई हॉस्पिटल की टीम के द्वारा शिविर में आए हुए लोगों की आंखों की जांच की गई। इस अवसर पर एमएल भास्कर ने जानकारी देते हुए बताया कि शिविर में लगभग 425 लोगों ने अपनी आंखों की जांच कराई और कई लोगों को चश्मा निशुल्क वितरित किए गए। श्री भास्कर ने बताया कि हमारी संस्था का लक्ष्य गरीब लोगों की मदद करना है जिसके लिए संस्था हमेशा ही आगे रहती है।

श्री भास्कर ने कहा कि सभी को प्रधान महेंद्र सिंह यादव के जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए और हमेशा ही उनके बताए हुए मार्ग पर चलना चाहिए। इस मौके पर कई लोगों ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

पिंपल से राहत से लेकर दीर्घकालिक रोकथाम तक — नेचर-बेस्ड स्किनकेयर में बड़ी प्रगति

मुख्य संवाददाता

भारत। प्राकृतिक देखभाल उत्पादों की अग्रणी कंपनी हिमालया वेलनेस ने पिंपल केयर के नियमों को नए सिरे से परिभाषित किया है।

25 वर्षों से देश में पिंपल-प्रोन स्किन के लिए सबसे पसंदीदा समाधान बने रहने के बाद प्रतिष्ठित हिमालया प्यूरीफाइंग नीम फेस वॉश अब पुनः तैयार है, नए रूप में, और पिंपल्स की समस्या से निजात दिलाने के लिए तैयार है।

दो दशकों से भी ज़्यादा समय से, हिमालया नीम फेस वॉश पिंपल-प्रोन स्किन के लिए भारत का सबसे भरोसेमंद विकल्प रहा है। हालांकि ज़्यादातर फेस वॉश पिंपल्स के इलाज पर ध्यान देते है, लेकिन बार-बार पिंपल्स से पीड़ित होना आज एक अनसुलझी समस्या बनी है- जिसे अक्सर अपरिहार्य मान लिया जाता है।

नवीनतम रूप में पेश किया गया यह फेस वॉश इस सोच को बदलने के लिए डिज़ाइन किया गया है। यह 5 पावरफुल पाट्र्स ऑफ द नीम प्लांट— परिपक्व पत्तियों, कोमल पत्तियों, फूल, फल और तने से युक्त है- नया फॉर्मूला सफाई से आगे बढ़कर पिंपल्स के चक्र को तोड़ने और उन्हें दोबारा होने से रोकने में मदद करता है।

राजेश कृष्णमूर्ति, बिज़नेस डायरेक्टर – कंज़्यूमर प्रोडक्ट्स डिवीज़न, हिमालया वेलनेस कंपनी, ने कहा, "25 वर्षों से हिमालया नीम फेस वॉश देशभर के करोड़ों लोगों की त्वचा की देखभाल के लिए भरोसेमंद साथी रहा है। यह रीलॉन्च उस यात्रा का अगला अध्याय है। फाइव पाट्र्स ऑफ नीम और उन्नत शोध की शक्ति के मेल से हम आज की युवा पीढ़ी को एक ऐसा समाधान दे रहे हैं जिस पर वे स्पष्ट और स्वस्थ त्वचा के लिए भरोसा कर सकते हैं।"

रागिनी हरिहरन, मार्केटिंग डायरेक्टर – ब्यूटी एंड पर्सनल केयर, हिमालया वेलनेस, ने कहा, "बार-बार होने वाले पिंपल्स ऐसी चीज है जिसके साथ उपभोक्ताओं ने जीना सीख लिया है - इसलिए नहीं कि वे ऐसा करना चाहते हैं, बल्कि इसलिए कि अब तक किसी ने भी इस समस्या का प्रभावी समाधान नहीं दिया हैं। यह नया फॉर्मूला हमारे अब तक के सबसे प्रभावी समाधान के रूप में एक निर्णायक बदलाव दर्शाता है- प्रकृति द्वारा समर्थित, विज्ञान द्वारा प्रमाणित और पिंपल के चक्र को समाप्त करके वास्तविक अंतर लाने के लिए डिज़ाइन किया गया है।"

अभिषेक आशत, जनरल मैनेजर – फेस केयर कैटेगरी, हिमालया वेलनेस, ने कहा, "यह रीलॉन्च सिर्फ़ एक विरासत को संजोने के बारे में नहीं है बल्कि नया मानदंड स्थापित करने के बारे में है। दो दशकों से भी ज़्यादा समय से नीम फेस वॉश लाखों लोगों के लिए एक भरोसेमंद विकल्प रहा है। घर-घर में पसंदीदा होने से लेकर चिकित्सकीय रूप से जांचा गया पिंपल रोकथाम फ़ॉर्मूला बनने तक नीम फेस वॉश अब अल्पकालिक समाधानों से लेकर दीर्घकालिक त्वचा आत्मविश्वास की ओर बढ़ता है।"

यह रीलॉन्च प्राकृतिक अवयवों पर आधारित विज्ञान-आधारित नवाचार के प्रति हिमालया की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। चाहे कोई किशोर हो जो पहली बार पिंपल्स से जूझ रहा हो या कोई युवा वयस्क जो बार-बार होने वाले पिंपल्स से परेशान हो, नया हिमालया नीम फेस वॉश उनके लिए पहला और एकमात्र समाधान है जो उपभोक्ताओं को अल्पकालिक समाधानों से दीर्घकालिक समाधानों की ओर बदलाव करने में मदद करेगा। पिंपल एपिसोड्स को करें स्किप ! । बस मिलेगी साफ़ त्वचा — प्रकृति और विज्ञान के साथ।

प्रख्यात सन्त उड़िया बाबा महाराज का सप्तदिवसीय सार्धशताब्द (150 वां) प्राकट्योत्सव 12 से 18 अगस्त तक

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। दावानल कुंड क्षेत्र स्थित श्रीकृष्णाश्रम (उड़िया बाबा आश्रम) में ब्रज के प्रख्यात संत स्वामी पूर्णानंद तीर्थ (उड़िया बाबा) महाराज का सप्तदिवसीय सार्धशताब्द (150 वां) प्राकट्योत्सव 12 से 18 अगस्त 2025 पर्यन्त विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के मध्य अत्यन्त श्रद्धा एवं धूमधाम के साथ आयोजित किया जाएगा। जानकारी देते हुए कार्यक्रम संयोजक व उड़िया बाबा आश्रम के प्रभारी आचार्य पंडित कुलदीप दुबे महाराज ने बताया कि महोत्सव का शुभारम्भ 12 अगस्त संतों व भक्तों के द्वारा ब्रह्मलीन स्वामी पूर्णानंद तीर्थ (उड़िया बाबा) महाराज के चित्रपट के समक्ष दीप प्रज्वलित करके किया जाएगा।तत्पश्चात प्रख्यात रासाचार्य स्वामी ताराचंद ठाकुरजी के कुशल निर्देशन में नित्य प्रातः 09 से 12 बजे तक गौरांग लीला तथा सायं 06 से रात्रि 09 बजे तक रासलीला का अत्यन्त नयनाभिराम व चित्ताकर्षक मंचन किया जाएगा।इसके अलावा नित्य अपरान्ह 03 बजे से संतों, महंतों व धर्माचार्यों के द्वारा उड़िया बाबा महाराज के जीवन चरित्र पर प्रवचन होंगे। विष्णुकांत शर्मा (आगरा) व राम स्वरूप जोशी (मुंबई) ने बताया कि महोत्सव के अंतर्गत भाद्र कृष्ण सप्तमी (16 अगस्त) को पूज्य महाराजश्री के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में प्रातः 07 से 09 बजे तक बधाई गायन होगा।इसके अलावा रात्रि 12 बजे से भगवान श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव मनाया जाएगा।इसके अलावा 17 अगस्त को प्रातः 07 से 09 बजे तक नंदोत्सव आयोजित होगा। विनोद तायल (देहरादून) एवं हरीश अग्रवाल ने बताया कि महोत्सव का समापन 18 अगस्त को सन्त, ब्रजवासी, वैष्णव सेवा एवं वृहद भंडारे के साथ होगा।जिसमें असंख्य व्यक्तियों को भोजन प्रसाद ग्रहण कराया जाएगा।इससे पूर्व महोत्सव में पधारे समस्त भक्तों व अतिथियों को सम्मान-भेंट-प्रसाद आदि का वितरण किया जाएगा। इस अवसर पर आयोजित प्रेसवार्ता में सन्त प्रवर स्वामी महेशानंद सरस्वती महाराज, स्वामी आवेधानंद, सन्त सेवानंद ब्रह्मचारी, अश्वनी प्रताप सिंह (नोएडा), रामस्वरूप जोशी, विष्णु शर्मा, विजय पांडे, गौरव शर्मा (दिल्ली) आदि उपस्थित रहे।

ब्रह्माकुमारी बहनों नें जिलाधिकारी समेत सभी प्रशासनिक अधिकारियो को बांधा रक्षासूत्र

मथुरा जनपद के समग्र विकास के लिए दी शुभकामनायें

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

मथुरा। ब्रह्माकुमारी संस्था के रिफाइनरी नगर सेवा केंद्र की प्रभारी राजयोगिनी बी.के. कृष्णा दीदी नें रक्षा बंधन के उपलक्ष्य में मथुरा जिलाधिकारी चंद्र प्रकाश सिंह, एस.एस.पी. श्लोक कुमार, मुख्य विकास अधिकारी मनीष मीणा, नगर आयुक्त जगप्रवेश, सिटी मजिस्ट्रेट राकेश कुमार, जिला समाज कल्याण अधिकारी नागेंद्र पाल सिंह, जिला पंचायत अधिकारी धनंजय जायसवाल, मथुरा रिफाइनरी के कार्यकारी निदेशक मुकुल अग्रवाल समेत सभी ए.डी.एम. और एस.पी. को राखी बांधकर शुभकामनाएं दीं और सभी अधिकारियों के सफल कार्यकाल और श्रेष्ठ सेवाओं की मंगलकामना की।साथ ही उन्होंने मथुरा जनपद को देश-विदेश में "सर्वश्रेष्ठ तीर्थ स्थल" के रूप में स्थापित करने के प्रयासों की सराहना करते हुए सहयोग का आश्वासन दिया।

इस अवसर पर सभी अधिकारियों ने ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा किये जा रहे समाज सुधार के कार्यक्रमों की सराहना की।साथ ही नगर के समग्र विकास एवं स्वच्छ, सुंदर, आध्यात्मिक वातावरण के निर्माण हेतु नई ऊर्जा और समर्पण भाव से कार्य करने का संकल्प दोहराया।

कार्यक्रम में बी.के. पूजा, बी.के. मनोज, बी.के. मनोहर, बी.के. वंदना, बी.के. रेवती एवं बी.के. आलोक आदि की उपस्थिति विशेष रही।

थाना उघैती में पशु क्रूरता निवारण अधिनियम की धारा 11 और भारतीय न्याय सहिंता की धारा 325 में मुकदमा पंजीकृत

परिवहन विशेष न्यूज

बदायूं। थाना उघैती क्षेत्र के गांव एपुरा में गौवंश पर क्रूरता का मामला सामने आया है। सोशल मीडिया पर वायरल हुए एक वीडियो में स्थानीय निवासी मुनेश कुमार पुत्र मानसिंह को भाला मारते हुए देखा गया। वीडियो सामने आने के बाद पशु प्रेमी विकेंद्र शर्मा ने पुलिस में शिकायत दर्ज कराई। शिकायत के आधार पर थाना उघैती पुलिस ने मुनेश कुमार के खिलाफ पशु क्रूरता अधिनियम समेत संबंधित धाराओं में मुकदमा पंजीकृत कर कार्रवाई शुरू कर दी है। पुलिस का कहना है कि मामले की जांच की जा रही है और आरोपित के खिलाफ कड़ी कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

N.C.R.B (एन.सी.आर.बी)
I.I.F.-I (एकीकृत जाँच फार्म -I)

FIRST INFORMATION REPORT
(Under Section 173 B.N.S.S)
प्रथम सूचना रिपोर्ट
(धारा 173 बी एन एस एस के तहत)

1. **District/Unit (जिला/इकाई):** बदायूं
P.S. (थाना): उघैती **Year (वर्ष):** 2025
FIR No.(प्र.सू.रि. सं.): 0140
Date &Time of FIR(प्र.सू.रि. की दिनांक/समय): 11/08/2025 13:46

2.

S.No. (क्र.सं.)	Acts (अधिनियम)	Sections (धारा(एँ))
1	भारतीय न्याय संहिता (बी एन एस), 2023	325
2	पशुओं के प्रति क्रूरता का निवारण अधिनियम, 1960	11

3.(a) **Occurrence of offence (अपराध की घटना) :**

1. **Day (दिन):** **Date From (दिनांक से):** **Date To (दिनांक तक):**
Time Period (समय अवधि): **Time From (समय से):** **Time To (समय तक):**

जेंडर व माइग्रेशन प्रशिक्षण में गीता हुईं सम्मानित

नोएडा में हुआ जेंडर व माइग्रेशन आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रम

सुनील चिंचोलकर

जांजगीर,छत्तीसगढ़। प्रवासी मजदूरों के हित में राष्ट्रीय श्रम संस्थान, नोएडा में जेंडर एंड माइग्रेशन आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रम में जांजगीर-चांपा (छत्तीसगढ़) की भारतीय मजदूर संघ की जिला कार्यकारी अध्यक्ष और भारतीय प्राइवेट ट्रांसपोर्ट मजदूर महासंघ अखिल भारतीय मंत्री गीता सोनी को सक्रिय सहभागिता निभाने के फ़लस्वरूप उन्हें सम्मानित किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में देशभर से प्रतिभागियों ने शिरकत की।

कार्यक्रम का उद्देश्य प्रवासी महिला व पुरुष मजदूरों के अधिकारों के प्रति जागरूकता फैलाना था। गीता सोनी ने प्रशिक्षण सत्रों में अपने अनुभव साझा किए और प्रवासी महिला श्रमिकों से जुड़ी चुनौतियों पर महत्वपूर्ण सुझाव दिए।

गीता सोनी न केवल ट्रांसपोर्ट बल्कि संगठित और असंगठित दोनों ही क्षेत्रों में लगातार सक्रिय रूप से कार्य कर रही हैं। हाल ही में उन्हें भारतीय प्राइवेट ट्रांसपोर्ट मजदूर महासंघ के द्वारा तेलंगाना और मध्य प्रदेश की प्रभारी के रूप में भी नियुक्त किया गया है। कार्यक्रम के समापन अवसर पर कोर्स डायरेक्टर एलीना सामर्थे और डायरेक्टर जनरल डॉ. अरविंद ने गीता सोनी को प्रमाणपत्र प्रदान कर सम्मानित किया। इस प्रशिक्षण में छत्तीसगढ़ से कुल तीन प्रतिभागी शामिल हुए, जिनमें गीता सोनी की भूमिका महत्वपूर्ण रही। जेंडर एंड माइग्रेशन प्रशिक्षण पूर्ण कर गीता सोनी ने प्रमाण पत्र प्राप्त किया। गीता शोषित पीड़ित महिलाओं के अधिकार व श्रमिक हित में लम्बे समय से कार्य कर रही हैं। भारतीय मजदूर संघ के आमंत्रण पर गीता इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में सम्मिलित हुईं। गीता सोनी ने प्रवासी महिलाओं के सामने आने वाली चुनौतियों—जैसे रोजगार में असमानता, सामाजिक भेदभाव, आवास और स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच—पर अपने विचार साझा किए। उन्होंने बताया कि प्रवासी महिलाएं दोहरी चुनौतियों का सामना करती हैं, एक ओर वे नए माहौल में खुद को ढालने की कोशिश करती हैं और दूसरी ओर आर्थिक व सामाजिक असुरक्षा से जूझती हैं।

सत्रों में गीता ने ग्रामीण एवं शहरी प्रवासी महिलाओं के अनुभव, सरकारी योजनाओं की उपलब्धता और उनके प्रभावी क्रियान्वयन पर सुझाव दिए। उनके सक्रिय विचार-विमर्श और व्यावहारिक सुझावों की आयोजकों ने सराहना की। कार्यक्रम के समापन अवसर पर उन्हें विशेष सहभागिता सम्मान प्रदान किया गया।

सम्मान ग्रहण करते हुए गीता सोनी ने कहा कि यह प्रशिक्षण उनके लिए ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायक रहा। उन्होंने संकल्प लिया कि वे आगे भी प्रवासी महिलाओं की समस्याओं को उजागर करने और उनके समाधान के लिए निरंतर कार्य करती रहेंगी। उनके इस योगदान ने न केवल उनकी सामाजिक प्रतिबद्धता को प्रमाणित किया, बल्कि जिले के लिए गर्व का अवसर भी प्रदान किया।

हर घर तिरंगा अभियान के तहत अजीजपुर से धनोली बुद्ध विहार तक भव्य तिरंगा यात्रा निकाली गई

हमारी भाजपा सरकार दलित, शोषित, पिछड़ों के उत्थान के लिए कार्य कर रही है, किसी का अहित नहीं होने दिया जाएगा।-- वरिष्ठ नेता उपेन्द्रसिंह

आगरा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के निर्देशानुसार चल रहे हर घर तिरंगा अभियान के अंतर्गत सोमवार को अजीजपुर से धनौली बुद्ध विहार तक भव्य तिरंगा यात्रा का आयोजन किया गया। इसमें मुख्य रूप से सांसद राजकुमार चाहर के सुपुत्र शूरवीर चाहर और भाजपा नेता उपेन्द्रसिंह उपस्थित रहे।

तिरंगा यात्रा में मंडल अध्यक्ष फौरन सिंह राठौड़, ग्राम प्रधान लोकेश कुमार, भाजपा नेता ओम प्रकाश चलनी वाले, पूर्व विधायक कालीचरण सुमन, निहाल सिंह भोले, सोमदत्त, महाराज सिंह लोधी, तेज कपूर, मेघश्याम चाहर, राहुल चाहर सहित सेकड़ों गणमान्य व्यक्ति मौजूद रहे।

तिरंगा यात्रा के अंतर्गत, धनौली क्षेत्र में स्थानीय लोगों ने 70 से अधिक घरों को टूटने से बचाने के लिए किए गए प्रयासों को सराहा और इस कार्य में सक्रिय भूमिका निभाने वाले शूरवीर चाहर और उपेंद्र सिंह का फूल मालाओं से स्वागत एवं सम्मान किया गया।

शूरवीर चाहर ने अपने उद्बोधन में कहा यह तिरंगा यात्रा भारत माता के प्रति सम्मान और एकता का प्रतीक है, जिससे क्षेत्रवासियों में देशभक्ति की भावना को और प्रगाढ़ किया।

भाजपा नेता उपेंद्र सिंह ने अपने उद्बोधन में कहा कि आज मोदी जी के नेतृत्व में देश बहुत प्रगति कर रहा है और जिस प्रकार से ऑपरेशन सिंदूर के माध्यम से देश विरोधियों को सबक सिखाया वह प्रशंसनीय है, आज मोदी जी और योगी जी के नेतृत्व में देश और प्रदेश बहुत प्रगति कर रहा है।

वहीं, धनौली के आवास के पीड़ितों के मध्य बोलते उपेंद्र सिंह ने कहा कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से पिछले दिनों हुई भेंटवार्ता में उन्होंने स्पष्ट कहा है कि हमारी सरकार दलित, शोषित, पिछड़ों के उत्थान के लिए कार्य कर रही है, किसी का अहित नहीं होने दिया जाएगा। इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम का सफल संचालन सोमदत्त ने किया।

दुनियाँ की दो सबसे बड़ी महाशक्तियों राष्ट्रपति द्वय ट्रंप और पुतिन की महामुलाकात 15 अगस्त 2025 को अमेरिका के अलास्का मे तय -जीयो पॉलिटिक्स में भूचाल!

ट्रंप पुतिन वार्ता सफ़ल होने से भारत एक परिपक्व आत्मनिर्भर व रणनीतिक दृष्टिकोण अपनाने वाला वैश्विक शक्ति के रूप में ऊभरेगा जो दोनों महाशक्तियों के बीच संतुलन स्थापित करेगा- **एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र**

वैश्विक स्तरपर पूरी दुनियाँ में आज दो महा शक्तियों का नाम लिया जा रहा है, जो अमेरिका व रूस है। पूरी दुनियाँ में अनेक देशों के बीच अनबन व युद्ध का माहौल चल रहा है, तो दूसरी ओर अमेरिका के टैरिफ का आक्रोश भी छाया हुआ है। इस बीच एक तरह से विपरीत दिशाओं में एक दूसरे के कूटनीतिक विरोधी पूरक में खड़े दो महाशक्तियों की महामुलाकात एक टेबल पर बैठकर होना एक अचंभा व वैश्विक जीयो राजनीति के लिए भूचाल आने जैसा है। वैसे तो दोनों महाशक्तियाँ 15 अगस्त 2025 को यूक्रेन में युद्ध समाप्ति के मुद्दे पर बैठक कर रहीहै, परंतु मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं कि ट्रंप पुतिन के बीच अनऑफिशियली रूप से कुछ अन्य मुद्दों पर भी बात होने की संभावना है। एक तरफ से रूस से तेल खरीदने पर भारत पर अतिरिक्त 25 पर्सेंट टैरीफ तो दूसरी ओर नोबेल शांति पुरस्कार प्राप्त करने के लिए कुछ भी कर गुजरने का जज्बा रंग ला सकता है। अगर यह बैठक सफ़ल हो जाती है तो इससे भारत को दूरगामी फायदा होगा यानें रूस से तेल पर 25 परसेंट का अतिरिक्त रद्द होना, दोनों महाशक्तियों के बीच संयुक्त राष्ट्र में न्यूट्रल होने का फायदा ट्रंप द्वारा प्रतिबंध लगाए जाने की संभावना से मुक्ति सहित अनेक फायदे होने की संभावना है भारत के लिए सबसे बड़ी प्रतिष्ठा तो यह होंगी कि यदि ट्रंप-पुतिन बातचीत सफल होगी, तो भारत क़े दोनों से अच्छे संबंध है, दोनों के बीच कड़ी बन सकता है, इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, ट्रंप पुतिन वार्ता सफल होने से भारत एक परिपक्व को आत्मनिर्भर व रणनीतिक दृष्टिकोण अपनाने वाली वैश्विक शक्ति के रूप में उभरेगा जो दोनों महाशक्तियों के बीच संभवतः संतुलन स्थापित करेगा।

साथियों बात अगर हम 15 अगस्त 2025 को ट्रंप-पुतिन की बैठक की सफलता पर भारत पर इसके सकारात्मक प्रभाव की करें तो, अमेरिका और रूस के बीच यह शिखर सम्मेलन वास्तव में 15 अगस्त 2025 को अलास्का में होने वाला एक द्विपक्षीय सम्मेलन है, जहाँ मुख्य विषय थमे हुए यूक्रेन-रूस संघर्ष को समाप्त करना है। इस बैठक की पुष्टि ट्रम्प ने सोशल मीडिया पोस्ट के माध्यम से की और रूस ने भी मस्को में अधिकारियों के माध्यम से सम्मेलन की पुष्टि की है। (1) वैश्विक तनावों में कमी और संवैधानिक चुप्पीः-यह बैठक, यदि सफल हुई, तो वैश्विक भू-राजनीतिक तनावों में अलग ही कमी ला सकती है। यूक्रेन संकट के चलते रूस-पश्चिम में कायम तीव्र तनाव और उसके विस्तार से भारत की सुरक्षा और रणनीतिक स्थिति प्रभावित होती रही है। एक संभव रूप से स्थिर समझौता, संघर्ष की तीव्रता को कम कर सकता है, जिससे रूस पर अंतर्राष्ट्रीय प्रतिबंधों में ढील पाने की उम्मीद जगी है। इससे वैश्विक व्यापार व ऊर्जा बाजारों में स्थिरता आएगी, जिसका लाभ सोयल, ऊर्जा और रक्षा क्षेत्रों में अपनी बाजार स्थिति मजबूत करना चाहने वाले भारत को अप्रत्यक्ष रूप से मिलेगा। (2) ऊर्जा सुरक्षा और विदेश नीति का लाभः-यदि इस बैठक से रूस पर से कुछ प्रतिबंध हटाए गए या वैश्विक ऊर्जा बाजार में रूस का स्थान सुदृढ़ हुआ, तो भारत जैसी ऊर्जा-आयातक अर्थव्यवस्था को सस्ते और अधिक विश्वसनीय ऊर्जा स्रोतों तक पहुंच बढ़ सकती है। साथ ही, अमेरिका तथा रूस दोनों के साथ भारत की रणनीतिक साझेदारी मजबूत हो सकती है-यहां तक कि रूस से रक्षा और ऊर्जा क्षेत्रों में सहयोग बढ़ने की भी संभावनाएं बन सकती हैं।(3) बहुपक्षीय मंचों पर भारत की भूमिकाः- अमेरिका और रूस के बीच समझौता होने पर भारत अपनी अपील और कूटनीतिक पहल को व्यापक रूप से उपयोग में ला सकता है। भारत पारंपरिक रूप से रूस और अमेरिका दोनों के साथ मजबूत संबंध रखना चाहता है—इस बैठक के सफल परिणामों से भारत को बढ़ी हुई कूटनीतिक संवाद क्षमता और मंच मिल सकता है, जहाँ वह दोनों महाशक्तियों के बीच पुल का काम करते हुए दक्षिण एशिया व वैश्विक सुरक्षा अस्मिताओं को संतुलित कर सकता है। (4) आर्थिक निवेश, प्रौद्योगिकी साझेदारी और परियोजनाएं:-यदि अमेरिका- रूस संबंध बेहतर हुए, तो यह वैश्विक आर्थिक माहौल को सकारात्मक रूप में प्रभावित करेगा, जिससे भारत को उच्च निवेश, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण, उन्नत रक्षा साझेदारी और अरक्टिक क्षेत्र जैसे नये क्षेत्रों में अवसर मिल सकते हैं। रूस-अलास्का की निकटता और चर्चा में मौजूद आर्कटिकपरियोजनाओं में भारत की भू-रणनीतिक भागीदारी बढ़ सकती है।(5)भू-राजनीतिक संतुलन में बढ़तः-इस बैठक से यदि रूस और अमेरिका के बीच तनाव में कमी आती है और एक स्थायी समाधान की दिशा में कदम बढ़ता है, तो भारत एक बेहतर विश्व व्यवस्था में शांति और सहयोग को महत्व देने वाला खिलाड़ी बन सकता है। साथ ही, यूरोप में इस मुद्दे को लेकर यूरोपीय नेताओं की प्रतिक्रिया दर्शाती है कि यदि यूक्रेन को शामिल किये बिना फाइनल निर्णय लिए गए, तो रूस को एक तरह का लाभ मिल सकता है-भारत को इन सारे पहलुओं को भाँपकर अपने हितों के अनुरूप तटस्थ लेकिन सताक्षी शक्ति के रूप में उभरने का अवसर होगा।

साथियों बात अगर हम ट्रंप- पुतिन की 15 अगस्त 2025 की बैठक से भू-राजनीति में भूचाल क़ा करण बनने की करें तो, 15 अगस्त 2025 को अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के बीच होने वाली ऐतिहासिक बैठक ने वैश्विक कूटनीति में एक ऐसा मोड़ ला दिया है, जिसे दुनिया के कई हिस्सों में भू- राजनीतिक भूकंप कहा जा रहा है। यह बैठक सिर्फ अमेरिका- रूस संबंधों का मुद्दा नहीं है, बल्कि इसके पीछे बहुपक्षीय शक्ति-संतुलन, ऊर्जा राजनीति, सैन्य गठबंधनों, आर्थिक टैरिफ युद्ध और एशिया-यूरोप में रणनीतिक समीकरणों के पुनर्गठन जैसे गहरे कारण छिपे हैं। जिस समय दुनियाँ पहले से ही अमेरिका—चीन प्रतिद्वंद्विता, रूस-यूक्रेन युद्ध, मध्य पूर्व में अस्थिरता और वैश्विक मंदी के खतरे से जूझ रही है, ऐसे में वॉशिंगटन और मॉस्को का सीधा संवाद पुराने प्रतिद्वंद्वियों के समीकरणों को बदल सकता है।(1) यह बैठक इसलिए चौंकाने वाली है क्योंकि अमेरिका और रूस पिछले एक दशक से खुले टकराव में रहे हैं। 2014 में क्रीमिया के रूस में विलय के बाद से पश्चिमी देशों ने रूस पर प्रतिबंधों की बौछार की थी, और यूक्रेन युद्ध ने उस दरार को और गहरा कर दिया था। ऐसे में ट्रंप का पुतिन से मिलना यह संकेत देता है किअमेरिका संभवतःरूस के खिलाफ अपनी कठोर नीति मेंलचीलापन ला सकता है, या कम से कम एक वार्ता-आधारित रास्ता तलाशने को तैयार है। यह बदलाव न केवल नाटो जैसे सैन्य गठबंधन के लिए चुनौती है, बल्कि यूरोप के सुरक्षा ढांचे को भी अस्थिर कर सकता है, क्योंकि वहां अमेरिका की सख्ती पर भरोसा किया जाता रहा है।(2) दूसरा बड़ा कारण ऊर्जा राजनीति है। रूस दुनिया का सबसे बड़ा प्राकृतिक गैस आपूर्तिकर्ता और तेल निर्यातक है, जबकि अमेरिका ऊर्जा निर्यात में तेजी से उभर रहा है। दोनों देशों के बीच संभावित ऊर्जा सहयोग या सौदे का असर सीधा यूरोप, एशिया और मध्य पूर्व पर पड़ेगा। यूरोप लंबे समय से रूसी गैस पर निर्भर है, लेकिन अमेरिका उसे एलएनजी के जरिए विकल्प देने की कोशिश कर रहा है। अगर ट्रंप और पुतिन ऊर्जा बाजार में कोई समझौता करते हैं, तो यह ओपेक+ देशों, यूरोपीय ऊर्जा सुरक्षा और यहां तक कि भारत-चीन जैसे बड़े उपभोक्ताओं के लिए भी नई रणनीतियां तय करेगा। (3) तीस रापहलू है चीन का समीकरण। रूसः-चीन नजदीकी हाल के वर्षों में अमेरिका की सबसे बड़ी रणनीतिक चुनौती बन चुकी है। अगर ट्रंप–पुतिन बैठक में रूस को चीन से दूरी बनाने के लिए आर्थिक, सैन्य या राजनीतिक प्रलोभन दिए जाते हैं, तो यह बीजिंग के लिए सीधा झटका होगा। चीन की बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव और एशिया-यूरोप व्यापार मार्गों में रूस एक महत्वपूर्ण भौगोलिक और सामरिक भूमिका निभाता है। अगर यह धुरी टूटती है, तो एशिया में शक्ति संतुलन बदल जाएगा और भारत जैसे देशों को भी नई कूटनीतिक संभावनाएं मिलेंगी। (4) चौथा कारण है वैश्विक सैन्य संतुलन। अमेरिका और रूस दुनिया के सबसे बड़े परमाणु हथियार भंडार रखते हैं। पिछले कुछ वर्षों में न्यू स्टार्ट जैसे हथियार नियंत्रण समझौते खतरे में थे, लेकिन अगर 15 अगस्त की बैठक में इन पर सहमति बनती है या नए रक्षा संवाद की शुरुआत होती है, तो यह एशिया- प्रशांत और यूरोप दोनों में तनाव कम कर सकता है। इसके विपरीत, अगर वार्ता असफल होती है, तो नए हथियारों की होड़ शुरू हो सकती है, जिससे मध्य पूर्व, कोरियाई प्रायद्वीप और आर्कटिक क्षेत्र में भी सैन्य दबाव बढ़ेगा। पहलू आर्थिक टैरिफ और प्रतिबंध राजनीति से जुड़ा है। ट्रंप पहले भी चीन और यूरोपीय संघ पर भारी टैरिफ लगा चुके हैं, और रूस पर अमेरिका के प्रतिबंध पश्चिमी नीतियों का अहम हिस्सा रहे हैं। अगर पुतिन के साथ बैठक के बाद ट्रंप रूस पर लगे कुछ प्रतिबंध हटाते हैं, तो यह यूरोप के लिए बड़ा झटका होगा, क्योंकि उसकी एकजुटता अमेरिकी दबाव पर टिकी रही है। साथ ही, यह कदम भारत और अन्य उभरती अर्थव्यवस्थाओं को रूस के साथ व्यापार बढ़ाने का अवसर देगा, जिससे डॉलर-आधारित व्यापार प्रणाली को चुनौती मिल सकती है।(6)छठा कारण है मध्य पूर्व और अफ्रीका में प्रभाव का टकराव। रूस सीरिया, लीबिया और सूडान जैसे क्षेत्रों में सक्रिय है, जबकि अमेरिका लंबे समय से वहां अपनी मौजूदगी बनाए हुए है। अगर दोनों देशों के बीच इन क्षेत्रों में प्रभाव-क्षेत्र बांटने की अनौपचारिक सहमति बनती है, तो ईरान, तुर्की, सऊदी अरब और इज़राइल जैसे देशों की नीतियों में भी बड़ा बदलाव देखने को मिलेगा। यह बदलाव आतंकवाद विरोधी सहयोग से लेकर तेल कीमतों तक हर क्षेत्र को प्रभावित करेगा। (7) सातवां और शायद सबसे संवेदनशील मुद्दा है भारत की भूमिका। भारत अमेरिका और रूस दोनों के साथ मजबूत संबंध रखता है-रक्षा सौदों में रूस उसका पारंपरिक साझेदार है, जबकि अमेरिका उसके लिए रणनीतिक और तकनीकी सहयोगी है। अगर ट्रंप-पुतिन बैठक में भारत को अप्रत्यक्ष रूप से कोई मध्यस्थता या विशेष ऊर्जा/रक्षा सौदे का लाभ मिलता है, तो यह भारत की अंतरराष्ट्रीय स्थिति को मजबूत करेगा। इसके विपरीत, अगर इस बैठक का मकसद रूस-चीन धुरी को तोड़ना है, तो भारत को अपने पड़ोसी चीन के साथ नई कूटनीति बनानी पड़ सकती है।(8) आठवां कारण वैश्विक व्यवस्था में शक्ति- ध्रुवीकरण का है। पिछले दशक में दुनिया एक मल्टीपोलर (बहुध्रुवीय) व्यवस्था की ओर बढ़ रही थी, जिसमें अमेरिका का प्रभुत्व चुनौती के घेरे में था। ट्रंप–पुतिन बैठक एक संकेत है कि अमेरिका इस शक्ति- ध्रुवीकरण को अपने पक्ष में मोड़ने के लिए तैयार है- चाहे इसके लिए वह अपने पुराने प्रतिद्वंद्वियों से हाथ क्यों न मिला ले।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन करें इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे किदुनियाँ की दो सबसे बड़ी महाशक्तियों राष्ट्रपति द्वय ट्रंप और पुतिन की महामुलाकात 15 अगस्त 2025 को अमेरिका के अलास्का मे तय- जीयो पॉलिटिक्स में भूचाल !राष्ट्रपति द्वय ट्रंप-पुतिन मुलाकात यूक्रेन संकट क़े शांतिपूर्ण समाधान पर चर्चा पर भारत की बल्ले बल्ले ट्रंप पुतिन वार्ता सफ़ल होने से भारत एक परिपक्व आत्मनिर्भर व रणनीतिक दृष्टिकोण अपनाने वाला वैश्विक शक्ति के रूप में ऊभरेगा जो दोनों महाशक्तियों के बीच संतुलन स्थापित करेगा।

बेंगलुरु में टेस्ला का नया शोरूम खोलने जा रहे एलन मस्क, जानें क्यों इस शहर को चुना

परिवहन विशेष न्यूज

Tesla Bengaluru showroom Elon Musk की इलेक्ट्रिक वाहन निर्माता Tesla भारत में लगातार विस्तार कर रही है। मुंबई और दिल्ली के बाद अब निर्माता जल्द ही बेंगलुरु में नए शोरूम को शुरु करने की तैयारी कर रही है। आखिर क्यों एलन मस्क ने तीसरे शोरूम के लिए बेंगलुरु को ही चुना है। कब तक खुल सकता है नया शोरूम। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारत में इलेक्ट्रिक वाहनों की मांग लगातार बढ़ रही है। जिसे देखते हुए दुनिया की कई प्रमुख वाहन निर्माता भारत में अपने उत्पादों को पेश और लॉन्च कर रही हैं। अमेरिकी वाहन निर्माता टेस्ला भी भारत में अपने दो शोरूम शुरू कर चुकी है। अब तीसरे शोरूम को किस शहर में शुरू करने की तैयारी की जा रही है। कब तक इसे शुरू किया जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

टेस्ला कर रही तीसरे शोरूम की तैयारी

टेस्ला की ओर से जल्द ही तीसरे शोरूम को शुरू करने की तैयारी शुरू कर दी गई है। निर्माता की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक नए शोरूम को दक्षिण भारत के बेंगलुरू में शुरू करेगी।

सुपरचार्जर भी लगाएगी

निर्माता ने जानकारी दी है कि वह बेंगलुरू में सिर्फ शोरूम को ही शुरू नहीं करेगी बल्कि बेंगलुरू में सुपरचार्जर को भी लगाएगी। उम्मीद है कि निर्माता अगले महीने तक तीसरे शोरूम को शुरू कर सकती है।

तीसरे शोरूम के लिए बेंगलुरू को क्यों चुना

एलन मस्क के स्वामित्व वाली टेस्ला ने भारत में तीसरे शोरूम के लिए बेंगलुरू को इसलिए चुना है क्योंकि यह देश का सबसे बड़ा आईटी सेंटर है। यहां पर दुनियाभर की कई प्रमुख कंपनियों के ऑफिस हैं जिसमें लाखों लोग काम करते हैं। इनमें से कई लोग विदेश आते-जाते रहते हैं और वहां पर कई लोग टेस्ला की कारों का उपयोग करते हैं। इसके अलावा बेंगलुरू देश में इलेक्ट्रिक वाहन निर्माताओं के लिए सबसे बेहतरीन शहर भी है। यहां पर देश अधिकतर ईवी स्टार्टअप रजिस्टर्ड हैं।

निर्माता ने भारत में अभी सिर्फ एक ही इलेक्ट्रिक कार Tesla Model Y को ही लॉन्च किया है। इसी मॉडल को मुंबई, दिल्ली के शोरूम में उपलब्ध करवाया गया है और इसे ही बेंगलुरू में भी शोकेस किया जाएगा।

कैसे हैं फीचर्स

Tesla Model Y में कई बेहतरीन फीचर्स को ऑफर किया जा रहा है। इसमें 15.4 इंच टचस्क्रीन, हीटेड और वेंटिलेटिड सीट्स, एंबिएंट लाइट्स, रियर व्हील ड्राइव, नौ स्पीकर, एईबी, ब्लाइंड स्पॉट कॉलिजन वार्निंग, टिंटेड ग्लास रूफ जैसे कई बेहतरीन फीचर्स को दिया गया है।

कितनी है रेंज

Tesla Model Y को निर्माता की ओर से कम और लॉन्ग रेंज बैटरी के विकल्प के साथ ऑफर किया गया है। इस कार को सिंगल चार्ज के बाद 500 और 622 किलोमीटर तक चलाया जा सकता है।

कितनी है Model Y की कीमत

टेस्ला की ओर से ऑफर की जा रही Model Y की भारत में एक्स शोरूम कीमत 59.89 लाख रुपये है। इसके टॉप वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत 67.89 लाख रुपये है।

किनसे है मुकाबला

टेस्ला की Model Y को जिस कीमत, फीचर्स और रेंज के साथ ऑफर किया गया है। उस सेगमेंट में इसका सीधा मुकाबला Hyundai Ioniq5, Kia EV6, Mercedes, Audi, BMW और Volvo की ईवी के साथ होगा।

रॉयल इनफील्ड हंटर 350 नए रंग के साथ हुई लॉन्च, जानें स्टाइलिश की कीमत

भारतीय बाजार में कई सेगमेंट में बाइक स की बिक्री करने वाली प्रमुख वाहन निर्माता रॉयल एनफील्ड की ओर से हंटर 350 को नए रंग में लॉन्च किया गया है। किस रंग के साथ इस बाइक को लॉन्च किया गया है। किस कीमत पर नए रंग के साथ बाइक को खरीदा जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारत में रॉयल एनफील्ड की ओर से कई सेगमेंट में बाइक्स को बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता है। निर्माता की ओर से 350 सीसी सेगमेंट में ऑफर की जाने वाली Hunter 350 को नए रंग के साथ लॉन्च किया गया है। किस रंग के साथ बाइक को लॉन्च किया गया है। किन वेरिएंट्स में नए रंग को उपलब्ध करवाया जाएगा। किस कीमत पर नए रंग वाली हंटर 350 को खरीदा जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

नए रंग में लॉन्च हुई Royal Enfield Hunter 350

रॉयल एनफील्ड की ओर से हंटर 350 को नए रंग में लॉन्च कर दिया गया है। निर्माता की ओर से इसे ग्रेफाइट ग्रे रंग में लॉन्च किया गया है। इसके साथ ही इसमें नियॉन येलो रंग के इंसर्ट्स भी दिए गए हैं।

कितना दमदार इंजन

रॉयल एनफील्ड की ओर से हंटर 350 में 349 cc का सिंगल-सिलेंडर एयर/ऑयल-कूल्ड J-सीरीज इंजन दिया जाता है। जिससे बाइक को 20 पीएस की पावर और 27 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलता है। इस इंजन के साथ बाइक को पांच स्पीड ट्रांसमिशन दिया गया है।

कैसे हैं फीचर्स

निर्माता की ओर से इस बाइक में LED हेडलाइट, यूएसबी टाइप-सी चार्जिंग पोर्ट, टर्न-बाय-टर्न नेविगेशन, एसएमएस और कॉल अलर्ट, स्मार्टफोन कनेक्टिविटी, ड्यूल चैनल एबीएस, 160 एमएम ग्राउंड क्लियरेंस, सिंगल सीट और स्लिप और असिस्ट क्लच जैसे फीचर्स के साथ ऑफर की जाती है।

मिलेगा सात रंगों का विकल्प

रॉयल एनफील्ड की ओर से नए रंग के साथ ही इस बाइक को सात रंगों के विकल्प में ऑफर किया जा रहा है। जिसमें से ग्रेफाइट ग्रे रंग को मिड वेरिएंट में ही उपलब्ध करवाया गया है। मिड वेरिएंट में इस बाइक को नए रंग के साथ ही रियो वाइट और डैपर ग्रे रंग में उपलब्ध करवाया जा रहा था।

कितनी है कीमत

रॉयल एनफील्ड की ओर से हंटर 350 के नए रंग को 1.76 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर लॉन्च किया गया है। इसके लिए बुकिंग भी शुरू कर दी गई है।

झारखंड के 285 लोग का प्रतिबंधित आतंकी संगठनों से ताल्लुक : एटीएस

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची। झारखंड राज्य के 285 लोग देश-विदेश में सक्रिय प्रतिबंधित आतंकी संगठनों से जुड़े हुए हैं,जो चौंकाने वाली बात है . इसका खुलासा एंटी टेररिस्ट स्क्वॉयड (एटीएस) द्वारा तैयार एक खुफिया रिपोर्ट में किया गया है. संदिग्ध लोगों की सूची में वैसे आतंकियों के नाम शामिल हैं, जो पूर्व में किसी आतंकी घटना में शामिल होने के आरोप में जेल जा चुके हैं या उन पर केस दर्ज है. या फिर वह वर्तमान में बरी होकर या जमानत पर बाहर आ चुके हैं. इन लोगों की गतिविधियों पर समय-समय पर एटीएस के द्वारा निगरानी रखने का भी काम किया जाता है. इसलिए एटीएस द्वारा इनके नाम के अलावा पूरा पता, पिता का नाम और उनके मोबाइल नंबर आदि भी एकत्र करके रखे गये हैं.

एटीएस की रिपोर्ट के अनुसार झारखंड में रहनेवाले लोगों का नाम अब तक जिन आतंकी संगठन से जुड़कर सामने आ चुका है, उनमें इंडिया मुजाहिद्दीन से लेकर सिम्मी, लश्कर-ए-तैयबा, एक्यूआइएस, आइएसआइएस सहित अन्य आतंकी संगठन शामिल हैं. एटीएस की पूरी रिपोर्ट विभिन्न आतंकियों की झारखंड या राज्य के बाहर से गिरफ्तारी और उनसे पूछताछ में आये संदिग्ध लोगों के नाम और पते के आधार पर तैयार की है

राज्यभर के 285 लोगों में से सबसे अधिक पाकुड़ जिले के 113 लोग आतंकी संगठनों से जुड़े हुए हैं. राजधानी रांची की बात करें तो, यहां से कुल 49 लोग आतंकी संगठनों में शामिल हैं. वहीं बोकारो, खूंटी, लातेहार, चतरा और गोड्डा से सबसे कम 1-1 लोग देश-विदेश में सक्रिय आतंकी संगठनों से जुड़े हुए हैं.

रिपोर्ट के अनुसार आतंकी संगठन पीएफआइ का जाल सबसे ज्यादा पाकुड़ और साहेबगंज में फैला हुआ है. दूसरे आतंकी संगठन एक्यूआइएस ने रांची, हजारीबाग, लोहरदगा और जमशेदपुर में अपना जाल फैला रखा है. इसी तरह सिम्मी से जुड़े सर्वाधिक संदिग्ध रांची, हजारीबाग, लोहरदगा और जमशेदपुर में हैं. आइएसआइएस का जाल हजारीबाग, लोहरदगा, गढ़वा, गोड्डा और जमशेदपुर में है. लश्कर-ए-तैयबा हजारीबाग और जमशेदपुर में पैर फैलाने की कोशिश में लगा है. आइवाइएफ हजारीबाग और रामगढ़ में युवाओं को बरगला रहा है।

रांची के हिंन्दपीढी में युवक की गोली मारकर हत्या के बाद तनाव

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची। झारखंड की राजधानी रांची के हिंदपीढ़ी में एक युवक की गोली मारकर हत्या कर दी गयी. इसके बाद इलाके में तनाव व्याप्त हो गया. हिंदीपीढ़ी ग्वाला टोली में उपद्रव की स्थिति बन गयी. कुछ उपद्रवियों ने अरमान नामक युवक के घर में घुसकर तोड़फोड़ की. आगजनी भी की. अमन सोसाइटी सामुदायिक हॉल में भी उपद्रवियों ने तोड़फोड़ की और कार को क्षतिग्रस्त कर दिया. बुलेट मोटरसाइकिल में आग लगा दी. सैकड़ों कुर्सियों और शीशे को तोड़ डाला.

घटना रविवार को हुई, जब हिंदपीढ़ी थाना क्षेत्र में साहिल उर्फ 'कुरकुरे' की गोली मारकर हत्या कर दी गयी. घटना के बाद इलाके में तनाव व्याप्त हो गया. परिजनों ने बताया कि भट्टी चौक के पास इमरान ने साहिल को सीने में सटाकर गोली मार दी, जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गयी.

मृतक के परिजनों ने पूर्व पार्षद के भाई पर हत्या में शामिल होने का शक जताया है. साहिल की हत्या करने के बाद से अरमान फरार है. पुलिस अरमान की तलाश में जुट गयी है. स्थानीय लोगों का आरोप है कि इस घटना के दौरान पुलिस मूकदर्शक रही और उपद्रवियों को रोकने में पूरी तरह से नाकाम रही

इस मामले में पुलिस ने आसिफ को हिरासत में लिया है. उसे उसके घर से उठाया गया है. पुलिस ने कहा है कि मामले की जांच जारी है. दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जायेगी. पुलिस ने कहा कि मृतक साहिल कई बार छिनतई के मामले में जेल जा चुका था. वह हाल ही में जेल से बाहर आया था.

झारखंड के अपराधी पृष्ठभूमि के नेता सूर्या हांसदा पुलिस एनकाउंटर में ढेर

भाजपा एवं जेवीएम से लड चुका था चुनाव, हुई थी हार

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची। गोड्डा जिले के विभिन्न थाना क्षेत्रों में कई आपराधिक मामलों में वांछित भाजपा के पूर्व प्रत्याशी सूर्या हांसदा को पुलिस ने एनकाउंटर में मारा गिराया। मिली जानकारी के मुताबिक पुलिस टीम ने रविवार को सूर्या को गिरफ्तार किया था। इसके बाद पुलिस उसकी निशानदेही पर ललमटिया जंगल में छुपाए गए हथियार को बरामद करने गई थी। जानकारी के अनुसार वो पुलिस का हथियार छीनकर भागने लगा, तभी पुलिस ने उस पर गोली चलाई, जिससे उसकी मौत हो गई। पुलिस ने सूर्या हांसदा के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। हांसदा ने 2019 में बोरियो विधानसभा क्षेत्र से भाजपा के टिकट पर विधानसभा चुनाव लड़ा था और दूसरे स्थान पर रहे थे। पार्टी ने बीजेपी के पूर्व अध्यक्ष ताला मरांडी का टिकट काट कर सूर्या हांसदा को दिया था। 2024 चुनाव में जयराम महतो की पार्टी के उम्मीदवार के रूप में सूर्या हांसदा चुनाव लड़ चुके है।

सूर्या हांसदा तीन बार चुनाव हार चुके थे। उन्होंने दो बार जेवीएम और एक बार बीजेपी से अपनी किस्मत आजमाई थी। जिले के अलग-अलग थाना क्षेत्रों में सूर्या हांसदा के खिलाफ दर्जनों मामले दर्ज हैं। 9 जनवरी 2020 को गोड्डा जिले के ठाकुरगंगटी थाना क्षेत्र के बहादुरचक के पास अडानी कंपनी की वाटर पाइपलाइन परियोजना में लगे वाहनों को आग के हवाले कर दिया गया था. जांच में सामने आया कि इस घटना की साजिश सूर्या हांसदा ने रची थी।

झारखंड में भी चुनाव आयोग वोटरों का करायेगा एसआईआर : निशिकांत

झारखंड में बांग्लादेशियो को वोट का अधिकार अब होगा समाप्त

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

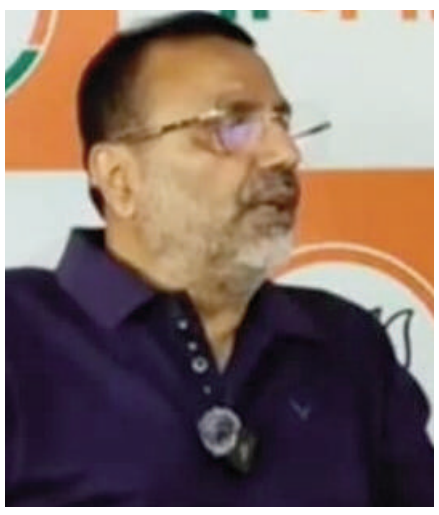

रांची। झारखंड में भी चुनाव आयोग अब एसआइआर करने जा रहा है. इस बात को गोड्डा सांसद डॉ निशिकांत दुबे ने देवघर में प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान दी. उन्होंने आगे कहा कि पूर्व पीएम राजीव से गांधी ने ही वोट देने की उम्र सीमा को 18 वर्ष करने के साथ-साथ एक वोटर का नाम सिर्फ एक जगह पर रखने की घोषणा की थी. उसके बाद संसद में इसकी मंजूरी ने मिली. वर्तमान में बिहार में चुनाव आयोग भी यही कर रहा है. एक व्यक्ति का तीन चार जगह नाम है, तो आप उसी जगह वोट देंगे, जहां आप रह रहे हैं.

सांसद ने कहा कि एसआइआर होने से झारखंड में बांग्लादेशियों को वोट डालने का अधिकार नहीं मिलेगा. सांसद ने आरोप लगाया है कि चुनाव आयोग का गलत इस्तेमाल हमेशा कांग्रेस ने किया है. सांसद डॉ दुबे ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर की सफलता पर सवाल खड़ा करने वाली कांग्रेस सहित विपक्ष राष्ट्रीय सुरक्षा पर घटिया राजनीति कर रहे हैं. वहीं, राहुल गांधी चुनाव आयोग पर सवाल उठाकर खुद घिर गये हैं, उन्हें माफी मांगनी चाहिए.

स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन (एसआइआर) के तहत मतदाता सूची को अपडेट किया जाता है. गलत या दोहरे नाम हटाए जाते हैं. साथ ही मृत मतदाताओं के नाम भी सूची से हटाए जाते हैं. यह आमतौर पर विधानसभा या लोकसभा चुनावों से पहले किया जाता है. एसआइआर का मुख्य उद्देश्य फर्जी वोटिंग को रोकना है।

कानपुर में जारी असमय मौत का कहर, खत्म हुई तीन और की जिंदगी

सुनील बाजपेई

कानपुर। यहां जिले भर में मौत किसी ना किसी बहाने असमय ही लोगो की जिंदगी निगल रही है। ऐसे ही तीन और लोग इसकी चपेट में आकर अपने जीवन का समापन कर बैठे। यह तीनों घटनाएं सचेंडी थानाक्षेत्र में अलग-अलग स्थानों में हुई। तीनों के शवों को पुलिस ने पोस्टमार्टम भिजवाया गया है।

सचेंडी के भूल गांव निवासी धीरेंद्र (26) के साथ हुई। वह मजदूरी करता था,घटना के समय वह दिल्ली-हावड़ा रेलवे लाइन किनारे स्थित खेत पर काम करने गया था। इस दौरान सड़क पार करते समय वह ट्रेन की चपेट में आ गया, जिससे उसकी मौके पर मौत हो गई।

इसी तरह से दूसरी घटना मूलरूप से बिहार के सहरसा निवासी ई-रिक्शा चालक बौनू शाह (80) के साथ हुई। वृंदावन से दर्शन के बाद वह अयोध्या जा रहे थे। इस दौरान सचेंडी आउटर के पास ट्रेन से गिरकर उनकी मौत हो गई। असमय मौत की तीसरी घटना करसां गांव निवासी अरविंद कुमार (50) के साथ हुई। वह भौंती स्थित पेपर मिल में काम करते थे।

रात करीब 10 बजे वापसी के दौरान वह चकरपुर मंडी के पास पहुंचे ही थे कि तभी पीछे से आ रहे अज्ञात वाहन ने उनको टक्कर मार दी। हादसे में वह गंभीर रूप से घायल हो गए थे। परिजनों ने उन्हें हैलट में भर्ती कराया जहां इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई। घटना से तीनों के परिवार में कोहराम मचा हुआ है। पुलिस ने बताया कि तीनों की लाशों को पोस्टमार्टम के लिए भेज कर आवश्यक कार्रवाई की जा रही है।

इस वर्ष 15 अगस्त को रांची मोराबादी मैदान में राज्यपाल करेंगे ध्वजारोहण

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड- झारखंड

रांची, झारखंड के राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार को राज्य सरकार द्वारा स्वतंत्रता दिवस-2025 के अवसर पर मोरहाबादी में ध्वजारोहण करने हेतु प्रस्ताव दिया गया था, जिस पर उन्होंने अपनी स्वीकृति प्रदान कर दी है। इस वर्ष मोरहाबादी में आयोजित स्वतंत्रता दिवस के राजकीय समारोह में राज्यपाल ध्वजारोहण करेंगे। विदित हो कि परंपरा के अनुसार प्रत्येक वर्ष स्वतंत्रता दिवस पर माननीय राज्यपाल उप राजधानी दुमका में तथा माननीय मुख्यमंत्री मोरहाबादी में ध्वजारोहण करते हैं।

झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री दिशोम गुरु शिबू सोरेन के निधन की वजह से राजभवन में प्रति वर्ष स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य पर आयोजित होने वाले 'At Home कार्यक्रम' नहीं होगा. राजभवन से मिली जानकारी के अनुसार राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार ने At Home कार्यक्रम को इस वर्ष आयोजित नहीं करने का निर्णय लिया है.

उप राजधानी दुमका में स्वाधीनता दिवस पर होने वाले राजकीय समारोह में मुख्य अतिथि कौन होंगे, यह स्पष्ट नहीं हो पाया है. जानकारी के मुताबिक राज्य सरकार के कोई वरिष्ठ मंत्री के द्वारा इस मौके पर झंडोत्तोलन किया जाएगा।

संसद संवाद की बजाय संघर्ष का अखाड़ा कब तक?

ललित गर्ग

संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने पिछले दिनों कहा था कि अगर विपक्षी दलों का हंगामा जारी रहता है, तो देशहित में सरकार के सामने विधेयक पारित कराने की मजबूरी होगी। लेकिन, लोकतंत्र के लिए यही बेहतर होगा कि दोनों पक्ष सदन का इस्तेमाल रचनात्मक बहस के लिए करें।

बिहार में वोटर लिस्ट रिवीजन पर संसद में गतिरोध जारी है, जिससे कामकाज बाधित हो रहा है। आज संसद का दृश्य सार्थक संवाद की बजाय किसी अखाड़े से कम नहीं लगता। बहस के स्थान पर बैनर, तख्तियां और नारों की गूंज सुनाई देती है। संसद जहां नीति निर्माण होना चाहिए, वहां प्रतिदिन कार्यवाही स्थगित हो रही है। यह विडंबना है कि जनप्रतिनिधि जिन मुद्दों को लेकर चुने जाते हैं, उन्हीं मुद्दों पर चर्चा की बजाय वे मेजें थपथपाने, वेल में उतरने और माइक बंद कराने में लगे हैं। संसद का हंगामा केवल दृश्य नहीं, एक राजनीतिक पतन की ओर संकेत करता है। जब एक ओर सरकार संवाद से बच रही है और दूसरी ओर विपक्ष केवल दिखावटी विरोध में लिप्त हंगामें बरपा रहा है, इन त्रासद एवं विडम्बनापूर्ण स्थितियों में देश की जनता के मुद्दे पीछे छूट रहे हैं। विपक्ष और सत्ता के बीच जारी इस टकराव में बहस के बजाय बहिष्कार और गतिरोध हावी हो चुका है। मानसून सत्र की शुरुआत उम्मीदों से भरी थी, नए विधेयकों, जनहित की बहसों और लोकतांत्रिक विमर्शों की। लेकिन यह सत्र भी पुराने ढर्रे पर चल पड़ा, विरोध, स्थगन, नारेबाजी और हंगामे की भेंट चढ़ता लोकतंत्र।

विपक्ष बिहार में चल रहे वोटर लिस्ट रिवीजन पर चर्चा चाहता है। इसमें ईवीएम की पारदर्शिता, मतदाता सूची में गड़बड़ी और चुनाव आयोग की निष्पक्षता जैसे गंभीर मुद्दे शामिल हैं। इसके साथ ही मणिपुर की स्थिति, बेरोजगारी, महंगाई, पेगासस जासूसी, किसानों की समस्याएं और हाल ही में आई बाढ़ एवं आपदा राहत जैसे मुद्दे भी विपक्ष के एजेंडे में हैं। लेकिन विपक्ष इन और ऐसे जरूरी मुद्दों पर चर्चा का माहौल बनाने की बजाय सरकार को घेरने की मानसिकता से ग्रस्त है। संसद की प्रासंगिकता तभी है जब उसमें देश की सच्चाइयों की प्रतिध्वनि हो और विपक्ष इसमें सकारात्मक भूमिका निभाये। गतिरोध के कारण दर्जनों विधेयक लंबित हैं, डेटा प्रोटेक्शन बिल, महिला आरक्षण बिल, वन नेशन वन इलेक्शन पर चर्चा, कृषि कानूनों में संशोधन, आदि। ये सब विधेयक केवल कानून नहीं हैं, बल्कि करोड़ों भारतीयों के जीवन से जुड़े ज्वलंत प्रश्न हैं। लेकिन दुर्भाग्यवश, विपक्ष सार्थक बहस से भाग रहा है या बहस में अड़ंगा डाल रहा है। सत्ता पक्ष भी कोई बीच का रास्ता निकालता हुआ दिखाई नहीं दे रहा है। दोनों की यह रस्साकशी देश के लोकतांत्रिक स्वास्थ्य को कमजोर कर रही है। कोई भी पक्ष झुकने को तैयार नहीं दिख रहा। लेकिन, इसका असर संसद के कामकाज पर पड़ रहा है। दोनों सदनों का कीमती वक्त हंगामे में जाया हो रहा है और यह कोई पहली बार नहीं हो रहा है। पिछले वर्षों में इस तरह की गतिविधियां आम हो गई हैं।

विपक्ष चाहता है कि सरकार एसआईआर पर चर्चा कराए। लेकिन, सरकार नियमों का हवाला देकर कह रही है कि चुनाव आयोग स्वायत्त संस्था है और मामला सुप्रीम कोर्ट में लंबित है, इसलिए चर्चा नहीं हो सकती। जवाब में, राज्यसभा में विपक्ष के नेता मल्लिकार्जुन खरगे ने भी 2023 की एक रूलिंग निकाल कर उपसभापति को पत्र लिख दिया है। दोनों पक्ष नियमों के सवाल पर अड़े हैं, लेकिन यह नहीं भूलना चाहिए कि ये नियम सदन की कार्यवाही को सुचारू रूप से चलाने के लिए बनाए गए हैं, न कि कामकाज ठप्प कराने के लिए। मानसून सत्र शुरू होने के पहले ही अंदाजा था कि एसआईआर पर हंगामा होगा। इसके पीछे विपक्ष की अपनी आशंकाएं हैं। शुरुआत से ही यह प्रक्रिया विवादों में रही है। आधार और वोटर कार्ड को मान्य डॉक्युमेंट्स में शामिल न करने से लेकर बड़ी संख्या में लोगों को वोटर लिस्ट से बाहर निकालने तक, इसमें कई पेच फंसे हैं। चुनाव आयोग ने संशोधित वोटर लिस्ट का ड्राफ्ट जारी कर दिया है और इसमें 65 लाख नाम हटाए गए हैं। सुप्रीम कोर्ट ने इन लोगों की पूरी जानकारी मांगी है।

संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने पिछले दिनों कहा था कि अगर विपक्षी दलों का हंगामा जारी रहता है, तो देशहित में सरकार के सामने विधेयक पारित कराने की मजबूरी होगी। लेकिन, लोकतंत्र के लिए यही बेहतर होगा कि दोनों पक्ष सदन का इस्तेमाल रचनात्मक बहस के लिए करें। आम नागरिक संसद से समाधान की उम्मीद करता है, न कि शोरशराबा। जब लाखों युवा रोजगार की बाट जोह रहे हैं, किसान कर्ज में डूब रहे हैं, और आमजन महंगाई से त्रस्त है, तब संसद में ठहाके नहीं, तकलीफों की चर्चा जरूरी है। यह सवाल अब बार-बार उठ रहा है कि क्या संसद केवल दिखावटी बन गई है? अगर सरकार विपक्ष को केवल बाधा मानकर चलती है और विपक्ष केवल विरोध के लिए विरोध करता है, तो लोकतंत्र की आत्मा मरती है। जैसाकि पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने कहा था, "संसद को ठप्प करना आसान है, लेकिन संसद को चलाकर देश की उम्मीदों को साधना ही असली लोकतंत्र है।" चुनाव आयोग एसआईआर की जरूरत को बता चुका है और शीर्ष अदालत ने भी उसे माना है। यह जरूरी भी है, क्योंकि भ्रष्ट वोटरों से चुनी जाने वाली सरकारें भी भ्रष्ट ही होती है। इसलिये चुनाव की इस विसंगति की सफाई होना जरूरी है, इस पर चर्चा की मांग को लेकर सत्ता पक्ष-विपक्ष के बीच गतिरोध बना हुआ है तो बातचीत से इसका हल निकालना होगा ताकि संसद का कामकाज सुचारुरूप से चल सके। लोकतंत्र में सदन चलाने की जिम्मेदारी सरकार की होती है। लेकिन इसमें विपक्ष का सहयोग भी अपेक्षित होता है, दोनों को अपना यह दायित्व समझना चाहिए।

संसद का हर सत्र, हर मिनट करदाताओं की गाढ़ी कमाई से चलता है। हर व्यवधान लाखों रुपये की बर्बादी है। यह नैतिक रूप से भी चिंताजनक है कि जनप्रतिनिधि बहस से अधिक हंगामे में समय गंवा रहे हैं। समाधान यही है कि सत्ता पक्ष विपक्ष की बात सुने, संवाद को प्राथमिकता दे। विपक्ष भी रचनात्मक विरोध करे, अनावश्यक बहिष्कार से बचे। लोकतंत्र बहस से ही मजबूत होता है, बहिष्कार से नहीं। वोटर लिस्ट रिवीजन पर चर्चा होनी चाहिए। जरूरी विधेयकों पर बहस होनी चाहिए। संसद को संकल्प का मंच बनना चाहिए, संग्राम का नहीं। जब तक संसद जनहित के सवालों पर गूंजेगी नहीं, तब तक लोकतंत्र अपंग ही रहेगा। जैसा कि डॉ. राधाकृष्णन ने कहा था-संसद केवल कानून बनाने का स्थान नहीं, यह राष्ट्र के विवेक की आवाज है।' लेकिन जब यह विवेक ही हंगामे में दब जाए, तो संविधान की आत्मा कराह उठती है। आज जरूरत है कि संसद को नई दिशा, नया दृष्टिकोण और नई मर्यादा मिले। संसद की गरिमा केवल आसनों से नहीं, आचरण से बनती है। संसद में वही नेता दिशा दे सकते हैं, जो अपने निजी या दलगत हित से ऊपर उठकर राष्ट्रहित की सोच रखते हैं। जब तक संसद के सदस्य यह नहीं समझेंगे कि वे जनता के प्रतिनिधि हैं, न कि अपने दल के प्रचारक, तब तक दिशा भटकती रहेगी।

विपक्ष लोकतंत्र की आंख है। लेकिन जब यह आंख केवल अंधविरोध में अंधी हो जाए, तो लोकतंत्र की दृष्टि धुंधली हो जाती है। विपक्ष को सद्बुद्धि दे सकता है, जनता का दबाव। जब जनता यह स्पष्ट रूप से जताए कि उसे रचनात्मक, नीति आधारित विपक्ष चाहिए न कि नारेबाज नेता, तब विपक्ष को भी सुधरना पड़ेगा। विपक्ष को आत्मचिंतन करना चाहिए कि क्या वह जनता की लड़ाई लड़ रहा है या केवल सत्तालोलुप राजनीति कर रहा है? मीडिया को चाहिए कि वह हंगामे को महिमामंडित करने के बजाय, नीति और तर्क आधारित बहस को आगे बढ़ाए। संसद में विवाद होना लोकतंत्र की शक्ति है, लेकिन वही विवाद अगर दिशा विहीन हो जाए, तो वह कमजोरी बन जाता है। आज जरूरत है कि संसद की गरिमा को पुनर्स्थापित किया जाए, विपक्ष अपनी भूमिका को गंभीरता से निभाए और सरकार भी अहंकार छोड़कर संवाद को अवसर दे। संसद यदि सचमुच "लोक का मंदिर" है, तो वहाँ केवल सत्ता की पूजा नहीं, लोकमंगल की बात होनी चाहिए।

श्रीकृष्ण के कालजयी अष्टमंत्र : जो हर चुनौती में विजेता बना दें

उमेश कुमार साहू

जब भी हम भारतीय दर्शन में जीवन जीने की कला की चर्चा करते हैं, श्रीकृष्ण का व्यक्तित्व हमारे मन में सर्वप्रथम अंकित होता है। उनके चरित्र में हास्य-विनोद, गंभीरता, प्रेम, युद्धनीति और लोकमंगल का ऐसा अनुपम समन्वय है, जिसकी मिसाल इतिहास में दुर्लभ है। श्रीकृष्ण न केवल आध्यात्मिक मार्गदर्शक थे, बल्कि एक व्यवहारिक नायक भी थे, जिन्होंने हर परिस्थिति में जीवन को कैसे जिया जाए, यह सिखाया।

यहां उनके जीवन से ऐसे आठ सिद्धांतों का संकलन किया गया है, जो हमें प्रेरित करते हैं कि चाहे परिस्थितियां कैसी भी हों, हमें अपने उद्देश्य, अपने धर्म और अपने आनंद से विमुख नहीं होना चाहिए।

मुस्कान में अदम्य शक्ति छुपी होती है

कृष्ण का संदेश : विपरीत परिस्थितियों में भी हंसना न भूलो।

कृष्ण जन्म लेते ही कालकोठरी के अंधकार में पले-बढ़े। उनके सिर पर कंस का भय, समाज में अनेक विघ्न, लेकिन उनके मुखमंडल पर सदैव मुस्कान रही। यह स्मित उनके आत्मविश्वास और परम आंतरिक आनंद का प्रतीक था। उन्होंने हमें सिखाया कि हमारी मुस्कान दुखों को छोटा बना देती है और दूसरों में भी साहस का संचार करती है।

प्रेम में संकोच मत करो

कृष्ण का संदेश : सच्चा प्रेम न शर्त मांगता है, न स्वीकृति।

वृंदावन की गलियों में गोपियों के संग उनकी रासलीला महज प्रेम-लीला नहीं थी, बल्कि यह जीवन के प्रति उत्कट अनुराग की प्रतीक थी। उन्होंने प्रेम को एक पवित्र उत्सव बनाया, जिसमें किसी भी प्रकार की हीनता या लज्जा नहीं थी। आज के युग में यह सिखाता है कि मन में श्रद्धा और शुद्धता हो, तो प्रेम सबसे बड़ा साधन बन जाता है।

मित्रता में निष्ठा सर्वोपरि है

कृष्ण का संदेश : मित्रता कोई सौदा नहीं, आत्मा का बंधन है।

कृष्ण ने सुदामा जैसे निर्धन मित्र से लेकर अर्जुन जैसे वीर साथी तक, हर किसी के लिए अपने कर्तव्य निभाए। जब सुदामा उनके द्वार पर आए, कृष्ण ने दरिद्रता को तिरोहित कर मित्रवत आदर दिया। महाभारत में अर्जुन का सारथी बनकर उन्होंने सखा-धर्म को नई ऊंचाई दी। यह हमें याद दिलाता है कि मित्रता में न तो भेदभाव होना चाहिए, न ही स्वार्थ।

कठिनाई में भी सहज रहो

कृष्ण का संदेश : संकट चाहे कितना भी गहरा हो, आत्मबल कभी मत खोओ।

कृष्ण का जन्म कारागार में हुआ, बाल्यकाल में असुरों का आक्रमण झेला, लेकिन उनके मन में भय या हीनता ने घर नहीं किया। चाहे पूतना वध हो या कालिया नाग का दमन, हर परीक्षा में उन्होंने सहज रहकर साहस दिखाया। यह शिक्षा है कि जो आंतरिक धैर्य रखता है, वही अंततः विजयी होता है।

दुष्टता के आगे चुप मत रहो

कृष्ण का संदेश : अन्याय के प्रतिकार में भी संकोच मत करो।

कृष्ण ने बाल्यावस्था में ही अत्याचार को चुनौती देना शुरू किया। कंस के अत्याचार को समाप्त करने के लिए उन्होंने निडर होकर युद्धभूमि में प्रवेश किया। गोवर्धन पर्वत उठाकर इंद्र के अहंकार को तोड़ा। यह प्रेरणा देता है कि अन्याय को मौन रहकर सहना भी एक अपराध है।

सहनशील बनो, लेकिन कायर नहीं

कृष्ण का संदेश : क्षमाशीलता का अर्थ कमजोरी नहीं होता।

उन्होंने शिशुपाल के सौ अपराध क्षमा किए, पर जब सीमा का अतिक्रमण हुआ, तब उचित दंड भी दिया। इससे यह स्पष्ट होता है कि सहिष्णुता और कायरता में अंतर होता है। जीवन में यदि कोई आपके धैर्य की परीक्षा ले, तो मर्यादा की सीमा पार होते ही कठोर निर्णय लेने से न डरें।

यशस्वी विजय के लिए योजना अनिवार्य है

कृष्ण का संदेश : संकल्प और रणनीति दोनों से ही सफलता सुनिश्चित होती है।

महाभारत युद्ध में उनकी नीतियां निर्णायक बनीं। कौरवों की अपार सेना के सामने उन्होंने पांडवों को कुशल योजनाएं दीं। अर्जुन के रथ का सारथ्य लेकर उन्होंने युद्ध की दिशा पलट दी। यह सिद्धांत आज भी जीवन में कामयाबी की नींव है - कठिन परिश्रम के साथ योजनाबद्धता।

जीवन के रंग को अपनाओ, पर आसक्ति मत पालो

कृष्ण का संदेश : कर्तव्य निभाओ, लेकिन फल की आसक्ति छोड़ो।

गीता का उपदेश इसी का सार है - निष्काम कर्म। कृष्ण स्वयं जीवन के हर रस में रमे, लेकिन किसी भी अवस्था से बंधे नहीं। रास में भी वही तन्मयता, रण में भी वही निस्संगता। यह दर्शन सिखाता है कि हमें कर्म करना चाहिए, लेकिन मोह और भोग में जकड़ना नहीं चाहिए।

श्रीकृष्ण का जीवन एक विशाल सागर की तरह है, जिसमें आनंद की लहरें, संघर्ष की धाराएं, और गहराई में तत्वज्ञान समाया है। उनकी मुस्कान हमें आत्मविश्वास देती है, उनका प्रेम हमें कोमलता सिखाता है, उनकी वीरता हमें अन्याय से लड़ना सिखाती है, और उनका उपदेश हमें जीवन की सार्थकता का अनुभव कराता है।

यदि हम उनके इन आठ सिद्धांतों को अपने जीवन में उतार लें, तो न कोई दुख हमें हरा सकेगा, न कोई संकट हमें तोड़ पाएगा। यही श्रीकृष्ण का अमर संदेश है - "जियो पूरी शक्ति से, प्रेम करो पूरी पवित्रता से, और संघर्ष करो पूरी निडरता से।"

शिव-पार्वती के मिलन का प्रतीक है तीज का व्रत, यहां जानिए पौराणिक कथा

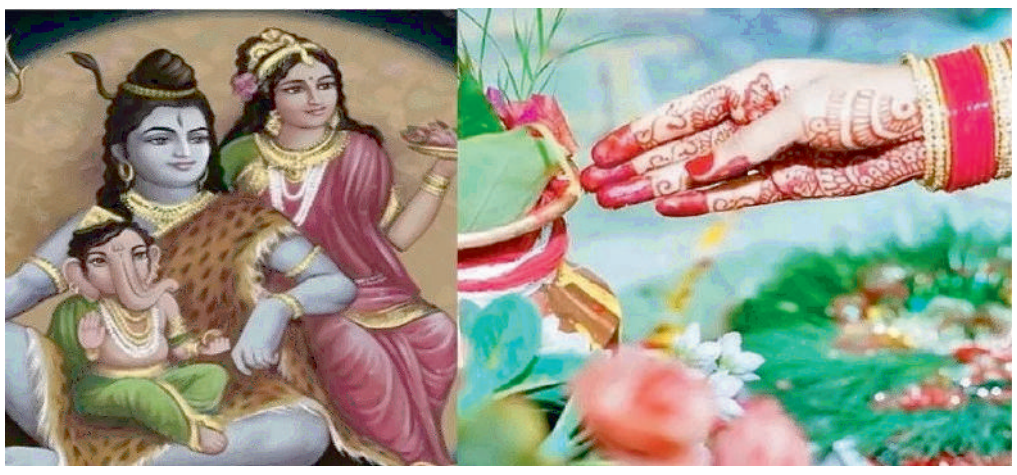

कजरी तीज पर भगवान शिव और मां पार्वती की विधि विधान से पूजा-अर्चना की जाती है। ऐसे में आज हम आपको बताने जा रहे हैं कि यह व्रत कब शुरू हुआ और इसकी पौराणिक कथा क्या है।

हर साल कजरी तीज का पर्व बड़ी धूमधाम के साथ मनाया जाता है। कजरी तीज पर महिलाएं अपने पति की लंबी उम्र, सुख-सौभाग्य और खुशहाल वैवाहिक जीवन की कामना के साथ व्रत करती हैं। इसको बड़ी तीज के नाम से भी जाना जाता है। इस दिन भगवान शिव और मां पार्वती की विधि विधान से पूजा-अर्चना की जाती है। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको बताने जा रहे हैं कि यह व्रत कब शुरू हुआ और इसकी पौराणिक कथा क्या है।

क्यों मनाया जाता है यह पर्व

यह पर्व माता पार्वती और भगवान शिव के मिलन का उत्सव का प्रतीक है। इस दिन सुहागिन महिलाएं व्रत करती हैं और भगवान शिव व माता पार्वती की पूजा-आराधना करती हैं। धार्मिक मान्यता है कि इस शुभ मौके पर देवी पार्वती ने कठोर तप करने भगवान शिव को प्रसन्न कर अपने पति रूप में प्राप्त किया था। माना जाता है कि इस व्रत को करने से मनचाहे वर की प्राप्ति होती है।

पौराणिक कथा

कजरी तीज व्रत को लेकर कई कथाएं प्रचलित हैं। पौराणिक कथाओं के मुताबिक, एक गांव में एक ब्राह्मण अपनी पत्नी के साथ रहता था। भाद्रपद महीने की कजरी तीज आई तो ब्राह्मणी ने कठिन व्रत का पालन किया था। इस दौरान उसने अपने पति से चने का सत्तू लाने के लिए कहा। जिस पर ब्राह्मण ने कहा कि वह सत्तू कहां से लाएं। तो ब्राह्मणी ने अपने पति से कहा कि उसको सत्तू चाहिए फिर चाहे वह कहीं से चोरी या डाका डालकर लाए।

पत्नी की इच्छा पूरी करने के लिए गरीब ब्राह्मण घर से निकलकर एक साहूकार की दुकान गया। जहां से उसने चने की दाल, शक्कर, घी लिया। फिर इन सबका सत्तू बना लिया। वहीं निकलते समय आवाज सुनकर साहूकार के सभी नौकर जग गए और चोर-चोर कहकर चिल्लाने लगे। इतने पर साहूकार भी वहां पर आ पहुंचा और उसने ब्राह्मण को पकड़ लिया। जिस पर ब्राह्मण ने कहा कि वह चोर नहीं है। उसकी पत्नी ने कजरी तीज का व्रत रखा है, जिसके कारण वह सिर्फ सवा किलो सत्तू लेने आया था। यह सुनकर साहूकार ने उसकी तलाशी ली। जिस पर ब्राह्मण के पास सत्तू के अलावा कुछ नहीं प्राप्त हुआ।

तभी चांद निकल आया और ब्राह्मणी सत्तू का इंतजार कर रही थी। ब्राह्मण की हालत देखकर साहूकार भावुक हो गया और उससे कहा, आज से वह उसकी पत्नी को अपनी धर्म बहन मानेगा। इसके साथ साहूकार ने ब्राह्मण को सत्तू, गहने, रुपए, लच्छा, मेहंदी और बहुत सारा धन देकर विदा किया। इस तरह ब्राह्मणी ने अपनी पूजा पूरी की और ब्राह्मण के दिन भी सुखमय हो गए। इस तरह से जो भी इस व्रत को करता है, इस व्रत के प्रभाव से उसके जीवन में सकारात्मक बदलाव होने लगते हैं।

ममता की टकराव की राजनीति से कमजोर होगा कानून का शासन

योगेंद्र योगी

पश्चिमी बंगाल में ममता बनर्जी के मुख्यमंत्री बनने के बाद से ही सभी राज्यपालों से संबंध कटुतापूर्ण रहे हैं। धनखड़ के बाद राज्यपाल बने सीवी आनंद बोस के साथ विवाद इतना बढ़ गया कि मामला हाईकोर्ट तक जा पहुंचा।

पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने ठान लिया है कि हरहाल में केंद्र सरकार और स्वायत्त संवैधानिक संस्थाओं का विरोध करना है। सीमा संबंधी विवादों में जिस तरह पाकिस्तान और चीन से भारत का टकराव रहता है, ठीक ऐसी ही हालत ममता बनर्जी के नेतृत्व में पश्चिम बंगाल की हो गई है। ममता का बस चले तो अदालतों के निर्णयों को भी नहीं माने, किन्तु अवमानना के भय से मानना मजबूरी बन गई है। विवादों की इसी श्रृंखला में केंद्रीय चुनाव आयोग से टकराव की एक कड़ी ओर जुड़ गई है। ममता बनर्जी ने चुनाव आयोग के निर्देश पर चार अफसरों को निलंबित करने से किया इंकार कर दिया।

निर्वाचन आयोग ने मतदाता सूची तैयार करने में कथित चूक को लेकर राज्य सरकार के चार अधिकारियों और एक डाटा एंट्री ऑपरेटर को निलंबित करने का निर्देश दिया था। ममता ने चुनाव आयोग के इस कदम की वैधता पर सवाल उठाया और आयोग पर भारतीय जनता पार्टी के इशारे पर काम करने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि हम उन्हें निलंबित नहीं करेंगे। ममता ने निर्वाचन आयोग को भाजपा का बंधुआ मजदूर करार देते हुए कहा कि वे अमित शाह और बीजेपी के एजेंट के रूप में काम कर रहे हैं। चुनाव आयोग से इस टकराव से कुछ दिनों पहले अवैध बांग्लादेशियों की शिनाख्त और उन्हें वापस भेजे जाने के मुद्दे को लेकर भी ममता सरकार ने इसी तरह का रुख अख्तियार किया था।

अल्पसंख्यक वोट बैंक को हरहाल में अपनी तरफ रखने के प्रयासों के तहत ममता बनर्जी ने बांग्लादेशियों के मुद्दे पर दिल्ली पुलिस की तरफ से भेजे गए पत्र में भाषा और शब्दों पर आपत्ति जताई थी। दिल्ली पुलिस ने वैध दस्तावेजों के बगैर भारत रह रहे 8 संदिग्ध बांग्लादेशी नागरिकों की गिरफ्तारी के संबंध में बंग भवन के कार्यालय प्रभारी को एक पत्र लिखा था। ममता बांग्लादेशी शब्द लिखने पर भड़क गई। उन्होंने केंद्र की भाजपा सरकार को बंगाल विरोधी तक करार दे दिया। इस पर भाजपा आईटी सेल के हेड अमित मालवीय ने ममता बनर्जी को भाषाई संघर्ष भड़काने के लिए, शायद राष्ट्रीय सुरक्षा कानून के तहत भी जवाबदेह ठहराया जाना चाहिए। वोट बैंक के लिए ममता बनर्जी की तुष्टिकरण का ही परिणाम है कि मुर्शिदाबाद में वक्फ कानून के खिलाफ प्रदर्शन के दौरान हिंसा भड़क गई थी, जिसमें तीन लोगों की मौत हो गई।

केंद्रीय एजेंसियों और स्वायत्तशाषी संस्थाओं से पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री के टकराव की फेहरिस्त काफी लंबी है। वर्ष 2019 में लोकसभा चुनाव के दौरान केंद्रीय गृह मंत्रालय ने भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा के डायमंड हार्बर में हुए रोड शो के दौरान पथराव और हमले में सुरक्षा चूक को लेकर पश्चिम बंगाल डीजीपी और चीफ़ सेक्रेटरी से जवाब तलब किया था। राज्य सरकार ने कोरोना का हवाला देकर दोनों अधिकारियों को भेजने से इंकार कर दिया। इससे पहले केंद्र ने जेपी नड्डा की सुरक्षा की जिम्मेदारी संभाल रहे तीन आईपीएस अधिकारियों को डेप्युटेशन पर भेजने का निर्देश दिया था। राज्य सरकार ने कहा था कि पश्चिम बंगाल में पहले से ही आईपीएस अधिकारियों की संख्या काफी कम है। ऐसे में तीन अधिकारियों को डेप्युटेशन पर भेजना

संभव नहीं है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के अम्फान तूफान प्रभावित क्षेत्रों का दौरा करने के दौरान प्रोटोकाल की परवाह किए बगैर ममता बनर्जी बैठक में शामिल नहीं हुई। देश के इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ जब सबसे बड़ी जांच एजेंसी के पांच अधिकारियों को राज्य की पुलिस ने हिरासत में ले लिया गया। शारदा चिट फंड घोटाले की जांच कर रही सीबीआई टीम कोलकाता पुलिस कमिश्नर राजीव कुमार के घर पहुंची। पुलिस कमिश्नर के घर पर तैनात गार्ड ने सीबीआई टीम को अंदर आने से रोक दिया। पुलिस सीबीआई के रिजनल दफ्तर पहुंची।

पुलिस ने सीबीआई के पांच अधिकारियों को हिरासत में भी ले लिया। सीबीआई की कार्रवाई के विरोध में ममता बनर्जी मेट्रो चैनल के पास धरने पर बैठ गईं। देश में संवैधानिक ढांचे का ऐसा मजाक शायद ही किसी राज्य में उड़ाया गया हो, जहां भारतीय सिविल सेवा का अधिकारी धरने पर शामिल हुआ हो। सिविल सेवा के अधिकारी होते हुए कोलकाता पुलिस कमिश्नर राजीव कुमार अपने घर से बाहर निकले और ममता बनर्जी के साथ धरने पर बैठे। ममता की पार्टी तृणमूल कांग्रेस के कार्यकर्ता जगह-जगह प्रदर्शन किए। कई जगह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के पुतले फूंके गए और हावड़ा-हुगली में ट्रेन को रोक दिया गया। इसके अलावा देश में राज्यपाल और मुख्यमंत्री के संबंधों में कटुता की पश्चिमी बंगाल में सारी हदें पार हो गई। विधानसभा के वर्षाकालीन अधिवेशन के दौरान राज्यपाल रहे जगदीप धनखड़ ने अभिभाषण के मसौदे में से कुछ हिस्सों को बदलने की मांग की। लेकिन सरकार ने इससे साफ इंकार कर दिया। ममता बनर्जी और उनकी पार्टी ने राज्यपाल धनखड़ पर जैन हवाला मामले में शामिल होने और हरियाणा में विवेकाधीन कोटे से जमीन का अवैध आवंटन कराने के मामले में शामिल होने का आरोप लगाया। राजभवन में आयोजित प्रेस कांफ्रेंस में राज्यपाल ने ममता के इस आरोप को निराधार करार दिया। राज्यपाल धनखड़ और ममता सरकार के बीच अभिभाषण पर भी विवाद बढ़ गया।

देश के राजनीतिक इतिहास में ऐसा पहले कभी किसी भी राज्य की सरकार ने नहीं किया, जो ममता ने वैधानिक परंपराओं को तिलांजलि देते हुए कर दिखाया। सरकार ने अभिभाषण का मसौदा राजभवन भेजा। लेकिन राज्यपाल धनखड़ ने यह कहते हुए इसमें बदलाव की मांग की कि इसमें लिखी बातों और जमीनी हकीकत में भारी अंतर है। लेकिन उसके बाद ममता बनर्जी ने फोन पर राज्यपाल को बताया कि अब इसमें बदलाव संभव नहीं है। राज्य मंत्रिमंडल ने इस अभिभाषण को अनुमोदित कर दिया। राज्यपाल जगदीप धनखड़ पश्चिम बंगाल में चुनाव नतीजों के बाद हुई हिंसा को लेकर ममता बनर्जी और उनकी सरकार पर लगातार हमलावर मुद्रा में रहे। इसके अलावा उन्होंने मुकुल रॉय के बीजेपी छोड़कर टीएमसी में शामिल होने के बाद दल-बदल कानून को सख्ती से लागू करने की बात कही थी। टीएमसी नेताओं का कहना है कि राज्यपाल सरकार के कामकाज में हस्तक्षेप कर रहे हैं। साथ ही कुछ दिन पहले राजभवन में हुई कुछ नियुक्तियों को लेकर भी राज्यपाल जगदीप धनखड़ पर आरोप लगाए गए थे।

पश्चिमी बंगाल में ममता बनर्जी के मुख्यमंत्री बनने के बाद से ही सभी राज्यपालों से संबंध कटुतापूर्ण रहे हैं। धनखड़ के बाद राज्यपाल बने सीवी आनंद बोस के साथ विवाद इतना बढ़ गया कि मामला हाईकोर्ट तक जा पहुंचा। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने यह बयान दिया था कि राज्यपाल के खिलाफ हालिया आरोपों के कारण महिलाएं पश्चिम बंगाल में राजभवन में प्रवेश करने में सुरक्षित महसूस नहीं कर रही हैं। कलकत्ता हाई कोर्ट ने मुख्यमंत्री और तीन अन्य को राज्यपाल सीवी आनंद बोस के खिलाफ कोई भी अपमानजनक या गलत बयान देने से रोक दिया।

पश्चिमी बंगाल का चुनावी इतिहास भी सर्वाधिक रक्तरंजित रहा है। चुनावी हिंसा का कलंक कभी बिहार और उत्तरप्रदेश पर था। इसके बाद पश्चिमी बंगाल देश में पहले स्थान पर है। पश्चिम बंगाल में मुख्यमंत्री ममता के नेतृत्व वाली राज्य सरकार जिस तरह हर मुद्दे पर केंद्र और संवैधानिक संस्थाओं से टकराव मोल ले रहीं हैं, उससे यही लगता है कि देश की संवैधिानिक व्यवस्था में उनका विश्वास नहीं रहा है, जबकि देश में दूसरे राज्यों में गैरभाजपा सरकारों पर पश्चिमी बंगाल की तरह व्यवस्था से खिलवाड़ करने की ऐसे बड़े उदाहरण देखने को नहीं मिलते। सत्ता को बरकरार रखने के लिए ममता बनर्जी द्वारा उठाए गए कदम निश्चित तौर पर देश की एकता-अखंडता और कानूनी शासन को कमजोर करेंगे।

नन प्रकरण : हिंदुत्व की प्रयोगशाला बनता छत्तीसगढ़

(आलेख : संजय पराते)

छत्तीसगढ़ में दुर्ग रेलवे स्टेशन पर दो ननों, सिस्टर प्रीति मैरी और वंदना फ्रांसिस और एक आदिवासी युवक सुखमन मंडावी पर बजरंग दल के लोगों द्वारा हमले, उनके खिलाफ जबरन धर्मांतरण और मानव तस्करी के मामले दर्ज होने, एनआईए कोर्ट द्वारा तीनों आरोपियों को जमानत मिलने का मामला मीडिया की सुर्खियों में है। इसी बीच ओरछा की तीन आदिवासी युवतियों द्वारा, जो ननों के साथ आगरा जाने के लिए दुर्ग स्टेशन में आई हुई थीं, द्वारा नारायणपुर थाने में शिकायत दर्ज कराने के बावजूद अभी तक बजरंगी गुंडों पर किसी भी प्रकार की कार्यवाही नहीं हुई है। इस मामले में सरकार की किरकिरी हुई है, क्योंकि एनआईए कोर्ट ने आरोपियों के खिलाफ सरकार द्वारा पेश प्रथम दृष्टया सबूतों को भी विश्वसनीय नहीं माना है और बड़ी सहजता से उन्हें जमानत मिल गई। लेकिन इस किरकिरी को उत्तेजक हिंदुत्व अभियान से ढंकने की कोशिश में संघी गिरोह ने धर्मांतरण विरोधी अभियान और जोर-शोर से चलाने और धर्मांतरित आदिवासियों को डी-लिस्ट करने की मांग तेज करने की घोषणा की है। एक मंत्री ने फिर दावा किया है कि जिन आरोपियों को कोर्ट ने जमानत दे दी है, वे सजा से बच नहीं पाएंगे। छत्तीसगढ़ में भाजपा ईसाई मिशनरियों और ननों के खिलाफ बयानबाजी कर रही है, वहीं केरल का भाजपा अध्यक्ष इस मामले में ननों के साथ खड़ा है। मामला बहुत ही साफ है। छत्तीसगढ़ में भाजपा सांप्रदायिक आधार पर समाज को ध्रुवीकृत करके, अल्पसंख्यकों के प्रति बहुसंख्यक हिंदुओं के मन में नफरत फैलाकर अपनी राजनैतिक रोटी सेंकना चाहती है, तो वहीं केरल में ईसाई समुदाय के खिलाफ खड़े होकर अपनी संभावना को धूमिल नहीं कर सकती। भाजपा और संघी गिरोह की उस नैतिकता को याद कीजिए, जब केरल और उत्तर-पूर्व के चुनावों में उसने उत्तम गुणवत्ता का बीफ उपलब्ध कराने का वादा किया था। गौ-सेवा का दिखावा करने वाली भाजपा में बीफ भक्षण करने वाले नेताओं की कमी नहीं है। आम जनता की पिछड़ी चेतना को सहलाकर ही भाजपा अपनी राजनीति को आगे बढ़ा सकती है।

नन प्रकरण के मुख्य तथ्यों को फिर से दोहराना उचित होगा : सिस्टर प्रीति मैरी और वंदना फ्रांसिस, जो मूलतः केरल से संबंध रखती हैं, मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ के वंचित और दूरदराज के इलाकों में कई सालों से अपने संस्थानों द्वारा स्थापित क्लीनिकों और अस्पतालों के माध्यम से गरीबों की सेवा कर रही हैं। आगरा, भोपाल और शहडोल स्थित उनके संस्थानों को रसोई सहायकों की आवश्यकता है। इसके लिए उन्होंने अपने एक पूर्व सहायक, सुखमती नामक एक आदिवासी महिला से संपर्क किया। यह महिला कई वर्षों तक उनके अस्पताल में काम कर चुकी थी और अपनी शादी के कारण उसने अपनी नौकरी छोड़ दी थी। अब वह तीन साल के बच्चे की माँ है। सुखमती ने नारायणपुर जिले के अपने कुछ परिचित परिवारों से संपर्क किया, तो तीन परिवार इस प्रस्ताव को स्वीकार करने के लिए तैयार हो गए। तीन युवा आदिवासी महिलाओं - ललिता, कमलेश्वरी और एक तीसरी महिला, जिसका नाम भी सुखमती है - ने पहले प्रशिक्षण के लिए आगरा जाने की योजना बनाई। चूंकि इनमें से किसी भी युवती ने पहले अपने जिले से बाहर यात्रा नहीं की थी, इसलिए उनके माता-पिता ने पूर्व-सहायिका सुखमती के बड़े भाई सुखमन मंडावी को उनके साथ दुर्ग रेलवे स्टेशन तक जाने की व्यवस्था की, जहाँ नन उनसे मिलने और उन्हें आगरा तक छोड़ने वाली थीं।

दुर्ग स्टेशन पर एक टिकट निरीक्षक ने इस समूह को देखा और उनसे उनके टिकट मांगे। उन्होंने बताया कि टिकट उन ननों के पास हैं, जो उन्हें आगरा ले जाएगी। इस बातचीत को वहाँ मौजूद लोगों ने सुना, जिनमें से एक बजरंग दल का सदस्य भी था। ऐसा भी कहा जा रहा है कि टिकट निरीक्षक ने ही बजरंग दल के लोगों को इसकी सूचना दी। बहरहाल जो भी हो, इसी बीच नन भी आ गईं, लेकिन जल्द ही वहां बजरंग दल के लोगों की भीड़ जमा हो गई और आक्रामक नारे लगाते हुए वे लोग ननों पर जबरन धर्मांतरण और महिला तस्करी करने का आरोप लगाने लगे और रेलवे पुलिस से उन्हें गिरफ्तार करने की माँग करने लगे। रेलवे पुलिस नियंत्रण कक्ष में यात्रा करने वाली सभी आदिवासी महिलाओं ने बयान दिया कि वे अपनी मर्ज़ी से जा रही हैं। सुखमन ने लड़कियों के माता-पिता से फ़ोन पर संपर्क किया और उन्होंने भी पुलिस को बताया कि यात्रा को उनका समर्थन और सहमति प्राप्त है।

इसके बावजूद रेलवे स्टेशन के पुलिस नियंत्रण कक्ष को खुलेआम गुंडागर्दी का अखाड़ा बना दिया गया। ज्योति शर्मा नामक एक महिला के नेतृत्व में बजरंग दल के सदस्यों द्वारा ननों को गंदी, लैंगिक और अपमानजनक भाषा में अपमानित, धमकाते और चिल्लाते हुए वीडियो साक्ष्य मौजूद हैं। वीडियो में वे मंडावी की पिटाई करते और उसे ननों की ₹साजिश₹ में शामिल होने का ₹कबूलनामा₹ करवाने की धमकी देते दिखाई दे रहे हैं। बजरंग दल की इस गुंडागर्दी में पुलिस मूकदर्शक बनी रही। इसके बाद, बजरंग दल के एक नेता द्वारा दर्ज कराई गई शिकायत पर ₹संदेह₹ के आधार पर, ननों पर मंडावी के साथ मामला दर्ज कर उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। आतंकित आदिवासी महिलाओं को एक सरकारी आश्रय गृह ले जाया गया, जहाँ उन्हें अलग-थलग रखा गया और जब उनके चिंतित माता-पिता पहुँचे, तो उन्हें भी उनसे मिलने नहीं दिया गया। उनके माता-पिता ने स्पष्ट रूप से यह कहा कि वे और उनकी बेटियाँ कई सालों से ईसाई हैं और उनकी बेटियां उनकी सहमति और अपनी इच्छा से रोजगार के लिए ननों के साथ जा रही थीं। इन तथ्यों से स्पष्ट है कि न तो यह जबरन धर्म परिवर्तन का मामला है और न ही मानव तस्करी का। लेकिन पुलिस की मौन उपस्थिति में बजरंग दल ने जिस तरह की गुंडागर्दी की, वह जरूर संविधान, कानून के शासन और मानवाधिकारों के उल्लंघन का मामला जरूर बनता है।

इस एक प्रकरण में कई मुद्दे हैं। पहला यही कि, क्या अल्पसंख्यकों और आदिवासियों को इस देश में एक जगह से दूसरी जगह आने-जाने और रोजगार हासिल करने की स्वतंत्रता नहीं है? या एक धर्म के लोग दूसरे धर्म के लोगों के साथ यात्रा नहीं कर सकते? इस देश में आम नागरिकों के लिए यह स्वतंत्रता संविधान से सृजित होती है और इस अधिकार का किसी भी रूप में हनन संबंधित नागरिक के लिए संविधान का निलंबन है। हम देख रहे हैं कि छत्तीसगढ़ के बस्तर में माओवादियों से सुरक्षा के नाम पर आवाजाही पर प्रतिबंध है। न केवल बस्तर से बाहर के लोग वहां स्वतंत्र रूप से नहीं जा सकते, बल्कि बस्तर के लोग भी आसानी से घोषित रुप से बस्तर से बाहर नहीं आ सकते। यही हालत हसदेव के वन्य क्षेत्र की है, जहां भाजपा सरकार ने अडानी द्वारा कोयला खनन के लिए अंतिम वन स्वीकृति जारी करके हसदेव के विनाश पर अपनी मुहर लगा दी है। साफ है कि जहां-जहां कॉरपोरेट परियोजनाएं चलेंगी, वहां-वहां नागरिकों की आवाजाही प्रतिबंधित की जाएगी। पूरे देश में बसे हुए बांग्लाभाषी समुदाय को आजकल मोदी सरकार द्वारा बांग्लादेशी के रूप में चिह्नित किया जा रहा है, उन्हें गिरफ्तार करके प्रताड़ित किया जा रहा है या उन्हें बंगाल सहित अपने मूल स्थान पर भागने के लिए विवश किया जा रहा है। मुस्लिमों की रोजी-रोटी को निशाना बनाने की संघी गिरोह की मुहिम बहुत पुरानी है, लेकिन सभी बंगालियों को बांग्लादेशी के रूप में चिह्नित करने का यह आयाम बहुत पुराना नहीं है।

दूसरा मुद्दा धर्मांतरण का है, जिसका आरोप ननों पर लगाया गया है और प्रथम दृष्टया ही गलत साबित हुआ है, क्योंकि संबंधित आदिवासी परिवार पहले से ही ईसाई धर्म के अनुयायी हैं। हमारे देश का संविधान कहता है कि धर्म किसी भी व्यक्ति का व्यक्तिगत विश्वास है और वह वह कभी भी इस विश्वास को बदल सकता है। कोई भी समुदाय उसे अपने धार्मिक विश्वासों को बदलने से रोक नहीं सकता। आदिवासियों के संदर्भ में विचार किया जाएं, तो वे मूलतः प्रकृति पूजक होते हैं, जो आदि धर्म से जुड़ा है। यह आदि धर्म पूरी तरह से भिन्न हैं और इसका हिंदू धर्म या ईसाई धर्म से कुछ लेना-देना नहीं है। इस तरह वे न हिंदू हैं, न ईसाई और न किसी अन्य धर्म के। हिंदू धर्म सहित किसी अन्य धर्म के विश्वासी वे बाद में बने हैं। इसलिए चाहे वे हिंदू बने हों या ईसाई, दोनों परिघटनाएं धर्मांतरण की श्रेणी में आती हैं। ये तो संघी गिरोह है, जो आदिवासियों के धर्म और संस्कृति को हिंदू धर्म में समाहित करना चाहता है और बड़े पैमाने पर ईसाई धर्म के आदिवासी अनुयायियों को हिंदू धर्म में शामिल करने के लिए 'घर वापसी' का अभियान चला रहा है। यदि ईसाई धर्म के विश्वासी किसी आदिवासी को हिंदू बनाना वैध धर्मांतरण है, तो आदि धर्म के अनुयायी या हिन्दू मतावलंबी किसी आदिवासी का ईसाई या किसी अन्य धर्म में अंतरण अवैध धर्मांतरण कैसे हो सकता है? साफ है कि संघी गिरोह अपनी केंद्र और राज्य की सत्ता की ताकत का उपयोग धर्म के आधार पर आदिवासियों में सांप्रदायिक विभाजन पैदा करने के लिए कर रहा है।

इसके साथ ही तीसरा मुद्दा, संघी गिरोह द्वारा उठाया जा रहा डी-लिस्टिंग का मुद्दा है। इसका अर्थ है कि उन आदिवासियों को, जो हिंदू धर्म के अलावा, किसी और धर्म के विश्वासी बन गए हैं, उन्हें संविधान प्रदत्त सुविधाएं मिलनी बंद होनी चाहिए। यह मांग वे केवल उन राज्यों में, मसलन छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, झारखंड, या राजस्थान में, उठा रहे हैं, जहां वे आदिवासियों के बीच सांप्रदायिक ध्रुवीकरण करने की हैसियत रखते हैं। उत्तर-पूर्व के राज्य, जहां बड़े-बड़े आदिवासी समुदाय ईसाई मतावलंबी हैं, वहां ये इस मांग पर चुप्पी साधे हुए हैं। संघी गिरोह का यह दोहरा चरित्र हैं।

इस मामले में हमारा संविधान क्या कहता है? संविधान एक आदिवासी को, स्पष्ट रूप से उसके धार्मिक विश्वासों से परे, एक आदिवासी के रूप में मान्यता देता है और किसी भी धार्मिक समूह में उसके अंतरण से उसकी 'आदिवासीयत' पर कोई अंतर नहीं पड़ता। इसका अर्थ है कि संविधान की नजर में आदि धर्म को मानने वाला एक प्रकृति पूजक आदिवासी, हिंदू धर्म का अनुयायी आदिवासी, ईसाई मतावलंबी आदिवासी और किसी अन्य धर्म को मानने वाले आदिवासी में कोई अंतर नहीं है, वे मात्र आदिवासी हैं, जिसकी सूची राष्ट्रपति के आदेश में सूचीबद्ध की गई है। इसलिए धर्म के आधार पर किसी भी आदिवासी को उसके शिक्षा और रोजगार में आरक्षण प्राप्त करने के संवैधानिक अधिकार से वंचित नहीं किया जा सकता। इसलिए संघ-भाजपा द्वारा गैर-हिंदू धर्मांतरित आदिवासियों को डी-लिस्ट किए जाने की मांग ही संविधान विरोधी मांग है। लेकिन सभी जानते हैं कि संघी गिरोह का तो संविधान के बुनियादी मूल्यों पर ही कोई विश्वास नहीं है, तो फिर वह आदिवासियों के संवैधानिक अधिकारों को ही क्यों मान्यता देगी? वह तो आदिवासियों के हित में बनाए गए पेसा और वनाधिकार कानून तक का पालन करने के लिए तैयार नहीं है।

चौथा मुद्दा, भाजपा राज में अल्पसंख्यकों और महिलाओं पर लगातार बढ़ रहे हमलों का है। इंडिया हेट लैब की एक रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष 2023 में मुस्लिमों और ईसाईयों सहित अन्य अल्पसंख्यकों पर हमलों की 823 घटनाएं दर्ज की गई हैं। इनमें से 75% घटनाएं भाजपा शासित राज्यों में हुई हैं। इन घटनाओं में अल्पसंख्यकों के साथ हिंसा करने के लिए उकसावे, यौनिक गाली-गलौज, मारपीट, उनके पूजा स्थलों को निशाना बनाने का आह्वान आदि घटनाएं शामिल हैं। दुर्ग में इन ननों के खिलाफ बजरंग दल के गुंडों ने जिस अभद्र और यौनिक भाषा का इस्तेमाल किया है, आदिवासी युवक सुखमन मंडावी के साथ पुलिस थाने में जैसी मारपीट की है, वह अत्यंत गंभीर घटना है। वास्तव में, मामला बजरंग दल के इन गुंडों के खिलाफ बनता है, जिन्होंने न केवल दुर्ग से आगरा के लिए यात्रा कर रही महिलाओं को गैर-कानूनी रूप से रोका, बल्कि कानून अपने हाथ में लेकर उनके साथ 'हिंसक आचरण' भी किया। इस निंदनीय आचरण का बचाव संघी गिरोह को छोड़कर और कोई नहीं कर सकता। सरकार और प्रशासन के बिना संरक्षण के ऐसी घटनाएं नहीं घट सकती और इस घटना के बाद उपद्रवियों के पक्ष में भाजपाई नेताओं के बयान इसका स्पष्ट प्रमाण हैं।

अंग्रेजों के समय से आज तक इस देश में ईसाई शैक्षणिक संस्थाएं सेवा और उत्कृष्टता के केंद्र हैं। ईसाई समुदाय, विशेष रूप से ननों और पादरियों ने स्वास्थ्य, शिक्षा और सामाजिक सेवा क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान दिया है। यही कारण है कि भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे पी नड्डा सहित संघी गिरोह के कई बड़े नेता, जो आज हिंदुत्व के पुजारी बने हुए हैं, इन्हीं शिक्षा संस्थाओं से पढ़कर निकले हैं और उनका हिंदुत्व की कोई नसबंदी नहीं हुई है। इसलिए ईसाई संस्थाओं पर धर्मांतरण का थोक के भाव में आरोप लगाने का एक ही उद्देश्य है कि उनकी धार्मिक स्वतंत्रता को प्रतिबंधित किया जाएं और समाज में सांप्रदायिक विभाजन किया जाएं।

लेकिन जिस तरह बंगलादेश या कहीं और, हिंदुओं पर हमले होने पर हम चिंतित होते हैं, उसी तरह इस देश में मुस्लिमों या ईसाईयों या अन्य धार्मिक समूह के लोगों पर हमले या उन्हें उनके अधिकारों से वंचित करने की घटनाओं पर भी वैश्विक प्रतिक्रिया होती हैं। इसलिए हमारे देश की वैश्विक छवि इस बात पर निर्भर करती हैं कि हम अपने नागरिकों, खासकर अल्पसंख्यक समुदाय, के लोगों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं।

इस देश में नेपाल और बांग्लादेश से तस्करी के जरिए हजारों लड़कियों को लाकर वेश्यावृत्ति की दलदल में धकेल दिया जाता है। लेकिन किसी तस्कर पर कार्यवाही होने का कोई समाचार नहीं मिलता।

इस देश में लाखों मजदूर दलालों के सहारे रोजगार पाने की आस में पलायन करते हैं, जहां उन्हें बंधुआ गुलामी का सामना करना पड़ता है। कुछ बंधुआ मजदूरों के मुक्त होने के समाचार तो मिलते हैं, लेकिन उन्हें बंधुआ बनाने वाले मालिकों के खिलाफ किसी तरह की कार्यवाही होने के कोई समाचार नहीं मिलते।

इस देश में हिंदू संस्थाओं और मंदिर-मठों के पास हजारों करोड़ रुपयों की संपत्ति है। लेकिन इसका उपयोग वे आम जनता के स्वास्थ्य, शिक्षा, कुपोषण को दूर करने के और उनकी भलाई के लिए उल्लेखनीय ढंग से कर रहे हैं, इसकी कोई सार्वजनिक जानकारी नहीं है।

लेकिन अल्पसंख्यकों, महिलाओं और आदिवासियों पर उनकी निजता, उनके संवैधानिक अधिकारों और उनके विश्वास पर हमला करने के लिए बहानों की कोई कमी नहीं है। राजधानी रायपुर सहित पूरे छत्तीसगढ़ में चर्चों और ईसाई समुदाय की प्रार्थना सभाओं पर धर्मांतरण के आरोप पर संघी गिरोह के हमले बढ़ रहे हैं और हमलावरों को सरकार और प्रशासन की सुरक्षा भी मिलती है, क्योंकि ये हमलावर संघी गिरोह की सांप्रदायिक राजनीति के हथियार हैं। छत्तीसगढ़ में संघ-भाजपा का हिंदू राष्ट्र अल्पसंख्यकों पर इसी तरह के हमलों और दमन से साकार किया जा रहा है।

(लेखक अखिल भारतीय किसान सभा से संबद्ध छत्तीसगढ़ किसान सभा के उपाध्यक्ष हैं।)

स्वतन्त्रता दिवस: नील आंदोलन के अमर शिल्पी: शेख गुलाब की संघर्ष गाथा

शम्भू शरण सत्यार्थी

भारत की आज़ादी की कहानी केवल दिल्ली, कोलकाता या मुंबई के बड़े नेताओं की नहीं है। यह कहानी गाँवों के उन अनजान लोगों की भी है जिन्होंने अपने खून और पसीने से इसे सींचा। खेतों में हल चलाने वाले, चौपालों में अपनी व्यथा कहने वाले और अंग्रेज़ी हुकूमत की लाठियों के सामने सीना तान कर खड़े होने वाले लाखों किसान ही हमारी स्वतंत्रता के असली शिल्पी थे।

आज जबकि भारत अपनी स्वतंत्रता के 75 से अधिक वर्षों का सफ़र तय कर चुका है, हमें याद रखना चाहिए कि यह आज़ादी सिर्फ़ राजनीतिक नेतृत्व का वरदान नहीं थी। यह उन किसानों, मज़दूरों और गुमनाम योद्धाओं की भी देन थी, जिनके नाम इतिहास की किताबों में नहीं मिलते।

इन्हीं भूले-बिसरे योद्धाओं में से एक हैं शेख गुलाब — चंपारण के वह किसान नेता, जिन्होंने नील की जंजीरों में जकड़े किसानों को जागरूक किया, संगठित किया और एक ऐसा आंदोलन खड़ा किया, जिसकी गूँज महात्मा गांधी के चंपारण सत्याग्रह तक पहुँची।

ब्रिटिश राज में नील की खेती किसानों के लिए एक श्राप थी। अंग्रेज़ प्लांटर्स ने ज़मीन पर अपना अधिकार जमाकर किसानों को मजबूर किया कि वे अपनी उपजाऊ ज़मीन पर नील उगाएँ। यह खेती उनके लिए घाटे का सौदा थी, लेकिन वे मजबूर थे।

तीनकठिया प्रथा इस शोषण की सबसे बड़ी मिसाल थी। इस प्रथा के तहत किसानों को ज़बरदस्ती अपनी ज़मीन के तीन हिस्सों में से एक हिस्से पर नील लगाना पड़ता था। अगर वे मना करते, तो उन पर जुर्माने, ज़बरदस्ती, बेइज़्ज़ती और कभी-कभी गोलियाँ तक बरसाई जातीं।

ब्रिटिश मजिस्ट्रेट ई. डब्ल्यू. एल. टावर ने भी एक आयोग के समक्ष स्वीकार किया था –

₹नील का एक भी बक्सा इंग्लैंड नहीं पहुँचता जो आदमी के खून से सना न हो। मैंने किसानों के शरीर पर भाले के जख्म देखे हैं। मैंने ऐसे रैयतों को भी देखा है जिन्हें अंग्रेज़ प्लांटर्स ने गोली मार दी।₹

नील की खेती से किसानों की हालत इतनी दयनीय हो गई थी कि उनके पास खाने तक को पर्याप्त अन्न नहीं बचता था। उनके बच्चे भूख से मरते, महिलाएँ अपमान सहतीं और पुरुष रोज़ाना लाठियों और जुल्मों का सामना करते।

चंपारण की ज़मीन केवल उपजाऊ नहीं थी, यह विद्रोह की भी ज़मीन रही है। 18वीं और 19वीं सदी में यहीं से कई बार अंग्रेज़ों के खिलाफ असंतोष भड़का। लेकिन हर बार अंग्रेज़ों की ताकत और क्रूरता के सामने किसान हार मान लेते।

1870 के दशक से लेकर 1900 के बीच, नील के खिलाफ गुस्सा लगातार बढ़ रहा था। किसान पंचायतें बनतीं, गुप्त बैठकें होतीं पर बड़ा नेतृत्व न होने के कारण आंदोलन प्रभावी नहीं हो पाता।

1857 — जब पूरा भारत पहली बार अंग्रेज़ों के खिलाफ बड़ी लड़ाई लड़ रहा था, उसी साल चंपारण के साठी थाना के चांदबरवा गाँव में शेख गुलाब का जन्म हुआ। उनके पिता रकटू शेख एक सम्पन्न रैयत थे।

शेख गुलाब ने पारंपरिक शिक्षा पाई। पढ़ाई में साधारण थे लेकिन साहस, दूरदर्शिता और नेतृत्व क्षमता में असाधारण। वे अपने गाँव में एक सम्मानित व्यक्ति थे और किसानों की समस्याओं के लिए हमेशा खड़े रहते।

शेख गुलाब ने धीरे-धीरे किसानों को संगठित करना शुरू किया। गाँव-गाँव घूमकर उन्होंने किसानों को जागरूक किया। किसान पंचायतों की स्थापना की। बाबू शीतल राय जैसे स्थानीय नेताओं के साथ मिलकर कानूनी लड़ाइयाँ लड़ीं।

उन्होंने किसानों को सिखाया कि अकेले लड़ने से कुछ नहीं होगा। अगर हमें अंग्रेज़ों का सामना करना है, तो एकजुट होकर प्रतिरोध करना होगा। उनके प्रयासों का नतीजा यह हुआ कि चंपारण के किसान अब डरने की बजाय खुलकर अपनी बात कहने लगे। वे न्यायालयों में याचिकाएँ दाखिल करने लगे, सामूहिक धरने देने लगे और अंग्रेज़ों की मनमानी को खुलकर चुनौती देने लगे।

जब महात्मा गांधी 1917 में चंपारण आए तो उन्हें यहाँ एक ऐसा आंदोलन मिला जो पहले से ही पनप रहा था।

सच यह है कि गांधीजी कोई "जादुई छड़ी" लेकर नहीं आए थे। उन्होंने जिस ज़मीन पर चंपारण सत्याग्रह की इमारत खड़ी की, वह ज़मीन शेख गुलाब और उनके साथियों ने तैयार की थी। गांधीजी ने इस आंदोलन को राष्ट्रीय मंच दिया। इससे चंपारण का संघर्ष पूरे देश में गूँज उठा। लेकिन दुर्भाग्य से इतिहास ने गांधीजी को तो "मसीहा" बना दिया, पर शेख गुलाब का नाम हाशिये पर डाल दिया।

आज चंपारण के लोग भी शेख गुलाब का नाम मुश्किल से जानते हैं। शहर में गुलाब मेमोरियल कॉलेज जरूर है, लेकिन वहाँ पढ़ने वाले छात्र भी शायद ही उनके योगदान को जानते हों। गाँव में लगे शिलापट्टों पर चंपारण के आंदोलन का इतिहास दर्ज है, लेकिन शेख गुलाब का नाम नहीं है। अंग्रेज़ों ने तो उनकी ज़मीन छीनी थी, लेकिन हम भारतीयों ने उनका नाम ही इतिहास से मिटा दिया।

भूमंडलीकरण और आधुनिक विकास के इस दौर में हम अपनी जड़ों से कटते जा रहे हैं। शेख गुलाब जैसे नायक हमें याद दिलाते हैं कि आज़ादी सिर्फ़ बड़े नेताओं की देन नहीं बल्कि लाखों गुमनाम किसानों, मजदूरों और स्थानीय नेताओं की कुर्बानियों का परिणाम है।

क्या हमें शर्मिंदा नहीं होना चाहिए कि विद्यालयों के पाठ्यक्रम में शेख गुलाब का नाम नहीं है? उनके नाम पर कोई बड़ा संस्थान क्यों नहीं बना? हमने उनके संघर्ष को भावी पीढ़ी तक पहुँचाने के लिए कोई प्रयास क्यों नहीं किया?

सच कहें तो गांधीजी जिस फसल को काटकर पूरी दुनिया में प्रसिद्ध हुए, वह फसल शेख गुलाब ने बोई थी।

भारत की आज़ादी का इतिहास अधूरा है जब तक हम शेख गुलाब जैसे गुमनाम सपूतों को उनका उचित स्थान नहीं देते। हमें उनकी कहानियों को फिर से लिखना होगा, उनकी विरासत को संजोना होगा और यह सुनिश्चित करना होगा कि आने वाली पीढ़ियाँ उनके संघर्ष से प्रेरणा लें।

"जंगल, हमारे पर्यावरण और पारिस्थितिकी की जीवन रेखा हैं -हाथी।"

(12 अगस्त दिवस विशेष आलेख)

प्रत्येक वर्ष 12 अगस्त को विश्व हाथी दिवस(वर्ल्ड एलिफेंट डे), मनाया जाता है, जिसका उद्देश्य हमारे पारिस्थितिकी तंत्र(इको सिस्टम)में हाथियों के महत्त्व को स्वीकार करना है। वास्तव में, वनों में एशियाई(भारतीय)और अफ्रीकी हाथियों की स्थिति के संबंध में जागरूकता लाने के लिये 2012 से यह दिवस प्रत्येक वर्ष मनाया जाता है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार एक कैनेडियन फिल्ममेकर पेट्रिसिया सिम्स और एचएम क्वीन सिरिकिट ने अन्य संरक्षणकारियों के साथ मिलकर इस दिन को मनाने का प्रस्ताव दिया था। उन्होंने इंसानों द्वारा जंगल काटकर हाथियों के आवास को नष्ट करने, उनके इलाकों में घुसपैठ करने और उनका शिकार करने के खिलाफ आवाज उठाई थी, और तभी से इस दिन को मनाने की शुरुआत की गई। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि वर्ष 2012 में पेट्रीसिया सिम्स ने 'वर्ल्ड एलीफेंट सोसाइटी' नामक एक संगठन की स्थापना की थी। कहना ग़लत नहीं होगा कि आज बढ़ते शहरीकरण, बढ़ती आबादी, विकास, औधोगिकीकरण, शहरीकरण के कारण पहले जितने वन नहीं रह गये हैं और वनों की अंधाधुंध कटाई की जा रही है।सच तो यह है कि मानव विकास के नाम पर हाथियों के अधिवासों को छीनता चला जा रहा है। सड़क,पुल निर्माण, सुरंग निर्माण, औधोगिक गतिविधियों के कारण हाथियों के आवास छिन रहे हैं, और उन्हें छोटे क्षेत्र में सिमट कर रहना पड़ता है।जलवायु परिवर्तन के कारण भी हाथियों को खाना और पानी खोजने में काफी परेशानी होती है, जिसका असर उनकी सेहत पर पड़ता है। यहां यह भी कहना ग़लत नहीं होगा कि हाथियों के लिए सबसे बड़ा खतरा पर्यटन और मनोरंजन उद्योग से है।सर्कस और विभिन्न हाथी शो में हाथियों को अप्राकृतिक गतिविधियों जैसे कि,शोरगुल और डरावने माहौल के बीच अपने पिछले पैरों पर खड़ा होने के लिए, उनकी सवारी करने के लिए मजबूर किया जाता है। व्यावसायिक उपक्रमों के कारण हाथियों को कम उम्र से ही पीड़ा और भय का सामना करना पड़ता है, ताकि वे आज्ञाकारी बन सकें।सरल शब्दों में कहें तो पालतू हाथियों को आज क्रूरता और दुर्व्यवहार का सामना करना पड़ता है,उनसे खूब काम लिया जाता है लेकिन उस एवज में उनको भरपूर भोजन नहीं दिया जाता है। बहरहाल पाठकों को बताता चलूं कि मनुष्यों और हाथियों के बीच टकराव को मानव-हाथी संघर्ष (एचईसी) कहा जाता है, जो मुख्य रूप से अधिवास को लेकर होता है तथा सरकारों, संरक्षणवादियों और जंगली जानवरों के करीब रहने वाले लोगों के लिये देश भर में एक प्रमुख चिंता का विषय है।आज भी हाथी दांत, मांस व दवा बनाने के लिए हाथियों का अवैध शिकार किया जाता है, और एक अनुमान के मुताबिक शिकारी अभी भी हर साल लगभग 20,000 हाथियों को उनके दांतों के लिए मार देते हैं। बहरहाल, पाठकों को बताता चलूं कि भूमि पर विशालतम जानवर हाथी है, और मूल रूप से इसकी तीन प्रजातियाँ पायी जाती हैं - अफ्रीकी जंगली हाथी (मुख्य संकेंद्रण पश्चिमी अफ्रीका), अफ्रीकी सवाना हाथी (मुख्य संकेंद्रण दक्षिण-मध्य अफ्रीकी सवाना क्षेत्र) और एशियाई हाथी (दक्षिणी व दक्षिण-पूर्वी एशिया)।यदि हम यहां पर अफ्रीकी जंगली हाथियों की बात करें तो आईयूसीएन की रेड लिस्ट के अनुसार ये गंभीर रूप से संकटग्रस्त हैं तथा एशियाई और अफ्रीकी सवाना हाथी लुप्तप्राय श्रेणी में पहुंच चुके हैं। एक समय था जब अफ्रीका से लेकर दक्षिण-पूर्वी एशिया तक लगभग हर स्थान पर हाथी पाये जाते थे, किंतु पिछले करीब 100 वर्षों में इनकी संख्या में अविश्वसनीय कमी आयी है, और कई स्थानों से तो ये पूर्णतः समाप्त हो गये हैं। बहरहाल, यहां पाठकों को बताता चलूं कि विश्व हाथी दिवस 2024 की थीम-' प्रागैतिहासिक सौंदर्य, धार्मिक प्रासंगिकता और पर्यावरणीय महत्त्व को मूर्त रूप देना' रखी गई थी तथा विश्व हाथी दिवस 2025 की थीम 'मातृसत्ताएँ और यादें' रखी गई है।यह इस बात का प्रतीक है कि हाथी समूहों की अगुवाई करने वाली मेट्रिआर्क (घरेलू झुंड की सामूहिक नेतृत्व करने वाली वृद्ध महिला हाथी) और उनकी गहरी स्मृति को सम्मानित किया जाए। बहरहाल ,यदि हम यहां पर आंकड़ों की बात करें तो वर्ष 2017 की जनगणना के अनुसार भारत दुनिया की लगभग 60% एशियाई हाथियों की आबादी का आवास स्थान है। 2017 की गणना के अनुसार, भारत में लगभग 29,964 जंगली हाथी थे। नवीनतम 2022–23 की डीएनए विश्लेषण आधारित गणना में यह संख्या 15,887 आंकी गई है, जो लगभग 20% की कमी दर्शाती है— हालांकि इस आंकड़े में पूर्वोत्तर राज्यों को शामिल नहीं किया गया है। अन्य आंकड़े बताते हैं कि पिछले 75 वर्षों में हाथियों की आबादी में 50% की कमी आई है।वर्तमान जनसंख्या अनुमान से संकेत मिलता है कि विश्व में लगभग 50,000-60000 एशियाई हाथी हैं। पाठक जानते हैं कि भारतीय संस्कृति और हिन्दू धर्म में हाथी को शक्ति, बुद्धि, वैभव, शुभता और समृद्धि का प्रतीक माना जाता है, जो भगवान गणेश जी से संबद्ध तथा इंद्र देव (ऐरावत) का वाहन माना जाता है तथा फेंगशुई में भी हाथी को सौभाग्य और समृद्धि का प्रतीक माना जाता है। न केवल भारतीय संस्कृति, बल्कि विश्व की तमाम संस्कृतियों, पौराणिक दंत कथाओं में हाथी को विशेष महत्व दिया गया है। वास्तव में, हाथियों का पर्यावरणीय और सांस्कृतिक महत्व है। पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि पारिस्थितिकी (इकोलॉजी) में इन्हें 'की-स्टोन प्रजाति या अंब्रेला प्रजाति का दर्जा दिया जाता है, अर्थात अपने पारितंत्र में ये वह प्रजाति हैं जो संख्या में बहुत कम होने के बाद भी पारितंत्र की सेहत पर अति निर्णायक प्रभाव डालती हैं तथा पारितंत्र के बहुत से प्राणियों का अस्तित्व इन्हीं पर निर्भर करता है। इसी कारण इन्हें 'फ्लैगशिप प्रजाति' भी कहा जाता है, जिनका संरक्षण करना अत्यावश्यक है। दरअसल, ये जैव-विविधता को बढ़ावा देते हैं। हाथियों की परागण क्रिया और वन क्षेत्र में वृद्धि में भी अहम भूमिका होती है, क्यों कि ये वनों में वृक्षों, लताओं, पत्तियों आदि से घर्षण क्रिया करते हुये चलते हैं जिसके कारण विभिन्न प्रकार के छोटे-बड़े पौधों के बीज व परागकण उनके शरीर से चिपक जाते हैं। हाथी किसी अन्य स्थान पर जब जाते हैं तब ये बीज व परागकण वहाँ पर छिटक जाते हैं जिससे नये पौधों का विकास होता है।हाथी जंगल में आहार ग्रहण करते समय बहुत सारी पत्तियाँ, नर्म टहनियां, फल-फूल आदि पदार्थ जमीन पर गिराकर जंगल के छोटे जंतुओं का पोषण करते हैं।हाथियों का मल त्याग - सूक्ष्म जीवों हेतु वरदान है, क्यों कि हाथी अपच सामग्री को अपने शरीर(पेट) से बाहर निकाल कर असंख्य सूक्ष्म जीवों के लिये भोजन उपलब्ध कराते हैं। इतना ही नहीं, हाथियों द्वारा बड़ी मात्रा में ठोस व तरल अपशिष्ट का उत्सर्जन वनीय मृदा की उर्वरता में बढ़ोत्तरी करता है। जंगल में विशाल प्राणी होने के कारण ये वनों में रास्तों के निर्माण और धरती पर सूर्य के प्रकाश की व्यवस्था करने में भी सहायक सिद्ध होते हैं। हाथियों द्वारा जल स्रोत का निर्माण(वॉटर होल्स) जंगल के विभिन्न प्राणियों, जीव-जंतुओं के लिए जीवन रेखा का काम करता है।हाथी सवाना परितंत्र की विशिष्टता को भी बनाए रखने में मददगार हैं। इतना ही नहीं, कार्बन कैप्चर व जलवायु परिवर्तन का सामना करने में हाथियों की भूमिका किसी से छिपी नहीं है। कहना ग़लत नहीं होगा कि हाथियों द्वारा दूरस्थ स्थान तक परागण करने और इस प्रकार वन क्षेत्रफल में वृद्धि के कारण भी प्रदूषण कम करने और कार्बन कैप्चर बढ़ाने में मदद मिलती है। आज हाथियों पर अनेक प्रकार के खतरे निरंतर मंडरा रहे हैं। उल्लेखनीय है कि एशियाई हाथियों (भारतीय) को आवास की कमी, मानव-हाथी संघर्ष और अवैध शिकार(मांस, हाथीदांत , दवा बनाने हेतु) के कारण आईयूसीएन रेड लिस्ट में लुप्तप्राय के रूप में वर्गीकृत किया गया है। हालांकि हमारे देश में हाथियों के संरक्षण और संवर्धन हेतु अनेकानेक प्रयास किए जा रहे हैं। मसलन, प्रोजेक्ट एलिफेंट(1992) के तहत पूरे देश में 33 हाथी अभयारण्यों का गठन हुआ है—जिसका क्षेत्रफल लगभग 80,778 वर्ग किलोमीटर है।भारत में 138 हाथी गलियारे (कोरिडोर) चिन्हित किए गए हैं, जो विभिन्न क्षेत्रों में हाथियों की सुरक्षित आवाजाही सुनिश्चित करने में सहायक हैं।सच तो यह है कि हमारे देश में हाथियों के संरक्षण के लिए कानूनी, प्रशासनिक, तकनीकी और सामाजिक स्तरों पर उपाय किए गए हैं। पाठकों को बताता चलूं कि वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972 – हाथियों को अनुसूची-I में रखा गया है, जिससे उन्हें सर्वोच्च संरक्षण का दर्जा प्राप्त है। लुप्तप्राय प्रजातियों के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर कन्वेंशन यानी कि सीआईटीईएस का भारत सदस्य है,जिससे हाथी दांत एवं हाथी उत्पादों के अंतरराष्ट्रीय व्यापार पर प्रतिबंध लागू है। हाथियों के लिए आवास और गलियारा संरक्षण किया गया है। आज जिम कॉर्बेट, काजीरंगा, पेरियार, बांदीपुर, सत्यमंगलम आदि संरक्षित क्षेत्र हाथियों के लिए सुरक्षित आवास प्रदान करते हैं।इको रेस्टोरेशन(वनस्पति की पुनः रोपाई, जल स्रोत बहाली) की जा रही है।सेंसर, ड्रोन, और एस एम एस अलर्ट द्वारा ग्रामीणों को हाथियों की निकटता की सूचना मिल रही है।खेतों के चारों ओर बिजली या मधुमक्खी के छत्तों वाली बाड़ लगाकर हाथियों को सुरक्षित दूरी पर रखा जा रहा है। इतना ही नहीं, हाथियों से होने वाले नुकसान का त्वरित मुआवज़ा प्रदान किया जा रहा है, जिससे फायदा यह हुआ है कि इससे मानव-हाथी संघर्ष में अभूतपूर्व कमी आई है।आज पालतू हाथियों के उपयोग (जुलूस, पर्यटन, लकड़ी ढोना) पर कड़े स्वास्थ्य और कल्याण मानक स्थापित हैं। हाथी पुनर्वास केंद्र बनाए गए हैं। मसलन, घायल, बीमार, या बूढ़े हाथियों के लिए देखभाल केंद्र (जैसे केरला का कोडानाड हाथी केंद्र, असम का काजीरंगा केंद्र) देश में स्थापित है। और तो और हाथियों के संरक्षण हेतु जन-जागरूकता और समुदाय सहभागिता की जा रही है। हाथियों के संरक्षण के लिए तकनीकी और वैज्ञानिक उपायों में रेडियो कॉलर और जीपीएस ट्रैकिंग से हाथियों के मूवमेंट पर नज़र रखकर उचित प्रबंधन किया गया है। डीएनए प्रोफाइलिंग से अवैध शिकार और हाथीदांत व्यापार में लिप्त लोगों की पहचान संभव हो रही है। ई-पेट्रोलिंग से वन विभाग हाथियों की डिजिटल निगरानी तक कर रहा है, लेकिन बावजूद इन सबके बहुत ही दुखद यह है कि हाल के 5 वर्षों में असम और अन्य राज्यों में 528 हाथियों की मौत हुई, जिनमें से 392 बिजली गिरने और 73 ट्रेन हादसों में मारे गए थे।असम में 2000–2023 के दौरान 1,209 हाथियों और 1,400 से अधिक लोगों की मृत्यु हुई—ये मौतें ज़्यादातर मानव-हाथी संघर्ष, अवैध विद्युत बाड़ और जंगलों के क्षरण के कारण हुई। 5 वर्षों में पुरी भारत में 528 हाथियों की मृत्यु हुई— इनमें अवैध बाड़, ज़हर, और ट्रेन हादसे जैसे कारण शामिल हैं। अतः हाथियों के संरक्षण के लिए हमें और भी प्रभावी कदम उठाने होंगे।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट

पुरी-कोणार्क नई रेलवे लाइन का काम प्रगति पर, राज्य सरकार ने भूमि अधिग्रहण प्रक्रिया शुरू की

मनोरंजन सासमल , बरिष्ठ पत्रकार

भुबनेश्वर : नई पुरी-कोणार्क रेल लाइन का निर्माण कार्य प्रगति पर है। राज्य सरकार ने भूमि अधिग्रहण की प्रक्रिया शुरू कर दी है। इस परियोजना के पूरा होने पर राज्य में आध्यात्मिक, विरासत और तटीय पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा। राज्य और विदेश से आने वाले श्रद्धालुओं और पर्यटकों को मंदिर और सूर्य मंदिर, दोनों के दर्शन करने का अवसर मिलेगा।

रेल मंत्रालय ने इस परियोजना के लिए भूमि अधिग्रहण हेतु अधिसूचना जारी कर दी है। यदि भूमि अधिग्रहण पर कोई आपत्ति है, तो भूमि स्वामी 30 दिनों के भीतर शिकायत दर्ज करा सकते हैं।

पुरी-कोणार्क नई रेल लाइन की इस परियोजना की लंबाई 32 किलोमीटर होगी। इस पर 492 करोड़ रुपये खर्च होने का अनुमान है। कार्य पूरा होने के बाद, रेल मंत्रालय इस नई लाइन पर विस्टाडम ट्रेनें चलाने की योजना बना रहा है। इससे यात्री ट्रेन में बैठकर 180 डिग्री घूमकर प्रकृति की सुंदरता का आनंद ले सकेंगे। इस नई रेल लाइन पर अवलोकन लाउंज और वाई-फाई जैसी कई आधुनिक रेल सेवाएँ उपलब्ध होंगी। वैज्ञानिक तकनीक का उपयोग करके ट्रेन के अंदर जगन्नाथ संस्कृति का प्रचार-प्रसार किया जाएगा।

रेलवे बोर्ड की विस्तृत परियोजना रिपोर्ट के अनुसार, इस रेल लाइन पर तीन नए स्टेशन होंगेः पोर्टारा, भिंगुराध्या और कोणार्क। 1997 में प्रारंभिक सर्वेक्षण के बाद से कई संशोधनों के बाद, इस मार्ग को बालूखंड वन्यजीव अभयारण्य को बायपास करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। इस परियोजना के लिए लगभग 217 एकड़ भूमि की आवश्यकता होगी, जिसकी अनुमानित लागत लगभग 42.7 करोड़ रुपये है। इस रेल मार्ग पर 27 छोटे पुल, 8 बड़े पुल, दो सड़क ओवरब्रिज (आरओबी) और तीन नदियाँ होंगी। इस मार्ग पर नया नाई, धनुया और कुशाभद्रा नदियाँ होंगी। इस मार्ग पर जगन्नाथ संस्कृति पर आधारित 4/5 पर्यटन स्थलों का विकास किया जाएगा। पहले इस परियोजना की लागत 310 करोड़ रुपये थी, लेकिन राज्य सरकार ने परियोजना की लागत का 50 प्रतिशत वहन करने पर सहमति व्यक्त की।

इस परियोजना के लिए सदानंदपुर, गुंडी, अच्युतपुर, हरेकृष्णपुर, समंगरा, अलंगा, काशीहरिपुर आदि प्रमुख गाँवों से भूमि अधिग्रहण हेतु अधिसूचना जारी कर दी गई है। कहा गया है कि शिकायतकर्ता पुरी जिले में भूमि अधिग्रहणकर्ता के पास शिकायत दर्ज करा सकते हैं।

विपक्ष के आरोप वोट चोरी नहीं, आंकड़े गलत हैं : बीजद नेता अमर पटनायक

मनोरंजन सासमल , बरिष्ठ पत्रकार

भूबनेश्वर : वोट चोरी नहीं हुई है, गलती हुई है। संदेह है कि मतदाता सूची, फॉर्म 17c में दी गई जानकारी एक जैसी नहीं है। ओडिशा चुनाव परिणामों को लेकर भी ऐसा ही संदेह व्यक्त किया गया है। कांग्रेस जो मांग कर रही है, वह हम आठ महीने पहले ही कह चुके हैं। बीजद ने चुनाव आयोग को पहले ही सूचित कर दिया है। उसके बाद, हम कानूनी कदम उठा रहे हैं।मुख्यमंत्री के निर्वाचन क्षेत्र में 30% वोटों में धांधली हुई है। रात 11 बजे के बाद 10% वोट कैसे पड़े?

बीजद ने ओडिशा में वोटों में धांधली के आरोप लगाए हैं। चुनाव आयोग से संपर्क किया गया है। हमने जानकारी मांगी थी, लेकिन चुनाव आयोग कार्यालय से कोई जवाब नहीं आया। उन्होंने बस इतना कहा कि जो करना है करो।

फॉर्म 70C हमारा अधिकार है, लेकिन हमें नहीं दिया जा रहा है। इसलिए हम माननीय उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाएँगे। अगर वहाँ न्याय नहीं मिला, तो हम सर्वोच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाएँगे। यह कैसे संभव है? शाम को वोटों में वृद्धि हुई। हम दिसंबर 2024 से चुनाव आयोग का दरवाजा खटखटा रहे हैं। मुख्यमंत्री के निर्वाचन क्षेत्र में बहुत धांधली हुई है। 30% वोट कैसे बढ़े?

रात 11 बजे के बाद 10% लोगों ने कैसे वोट डाला? कृपया समझाएँ। चुनाव आयोग की कार्यशैली पर सवाल उठ रहे हैं। चुनाव आयोग ने लोगों का भरोसा तोड़ा है। कांग्रेस ने वोटों में धांधली को लेकर उच्च न्यायालय में मामला दायर किया है। मतगणना में हुई गड़बड़ियों के कारण वोट चोरी हुए हैं। हम इसके लिए एक स्वतंत्र ऑडिट की मांग कर रहे हैं। अन्य विपक्षी दलों की शिकायतों की नहीं। मशीनें, मतदाता सूची, 70C, यही वोटों में हेराफेरी के कारण रहे होंगे। कांग्रेस मतदाता सूची तक सीमित है, हम भी चुनाव आयोग की गड़बड़ियों को सामने लाकर एक स्वतंत्र ऑडिट चाहते हैं।

आसाराम को बड़ी राहत, राजस्थान हाईकोर्ट ने इस कारण 29 अगस्त तक दी अंतरिम जमानत

यौन दुराचार मामले में आजीवन कारावास की सजा भुगत रहे आसाराम को राजस्थान हाईकोर्ट से भी जमानत मामले में राहत मिली है। जस्टिस दिनेश मेहता और विनीत माथुर की बेंच ने स्वास्थ्य संबंधी मेडिकल रिपोर्ट पेश होने के बाद सेहत जांच के निर्देश दिए हैं। अहमदाबाद के सरकारी अस्पताल में डॉक्टरों का पैनल बनाने का आदेश दिया गया है।

जोधपुर। यौन दुराचार के मामले में आजीवन जेल की सजा काट रहे आसाराम को गुजरात के बाद में अब राजस्थान हाई कोर्ट से भी जमानत के मामले में राहत मिली है। राजस्थान हाई कोर्ट में आसाराम के स्वास्थ के संबंध में मेडिकल रिपोर्ट दिए जाने के बाद हाईकोर्ट के जज दिनेश मेहता और विनीत माथुर ने उसकी सेहत की जांच को लेकर निर्देश जारी किए हैं। कोर्ट ने अहमदाबाद के सरकारी हॉस्पिटल में डॉक्टरों का एक पैनल बनाने को कहा है। कोर्ट ने उसकी अंतरिम जमानत 29 अगस्त तक बढ़ा दी है। इससे पहले गुजरात हाईकोर्ट ने भी पिछले दिनों इसी ग्राउंड पर आसाराम की अंतरिम जमानत 29 अगस्त तक बढ़ाई थी।

आईसीयू में एडमिट है आसाराम

जानकारी के अनुसार, 86 साल के आसाराम की ओर से वकील निशांत बोड़ा ने हाल की मेडिकल रिपोर्ट्स कोर्ट में पेश की थी। वर्तमान में इंदौर के जूपिटर हॉस्पिटल के आईसीयू में भर्ती है। गुजरात हाईकोर्ट की ओर से जारी आदेश में आसाराम की 'ट्रोपोनिन लेवल' बहुत ज्यादा बताये जाने को आधार बताया गया था। इसके बाद उनको गुजरात से जुड़े मामले में जमानत मिली थी। इधर जोधपुर मामले में भी उसकी सेहत की जांच को लेकर निर्देश जारी किए हैं। मेडिकल जांच कमेटी में दो हृदय रोग विशेषज्ञ होंगे, जो आसाराम की बताई गई बीमारियों की पूरी जांच करेगी। जिसमें विशेष तौर पर उनके दिल से जुड़ी समस्या की जांच की जाएगी। डॉक्टरों की टीम अपनी पूरी जांच रिपोर्ट कोर्ट को सौंपेगी। फिलहाल, गुजरात और राजस्थान में आजीवन कारावास की सजा काट रहे रेप के दोषी 86 साल के आसाराम को एक बार फिर राहत मिली है। राजस्थान हाईकोर्ट ने आसाराम की ओर से 8 अगस्त को दायर अपील पर सुनवाई करते हुए उसे 29 अगस्त तक जमानत दी है।

अलविदा रजिस्टर्ड डाक — एक युग की ख़ामोश विदाई

डॉ. प्रियंका सौरभ

एक सितंबर दो हज़ार पच्चीस को जब भारत डाक की रजिस्टर्ड डाक सेवा औपचारिक रूप से समाप्त कर दी जाएगी, तो संभवतः किसी समाचार पत्र के मुख्य पृष्ठ पर यह नहीं छपेगा, न ही किसी समाचार चैनल पर विशेष चर्चा होगी। यह समाचार जितना सामान्य प्रतीत होता है, उतना ही गहरा असर छोड़ता है — उस पीढ़ी पर, जिन्होंने वर्षों तक डाकिये की साइकिल की घंटी सुनकर अपने दिन की शुरुआत की। जिन्होंने पत्रों के माध्यम से रिश्तों को जिया और डाकघर की कतारों में खड़े होकर संवाद की प्रतीक्षा की।

रजिस्टर्ड डाक कोई साधारण सेवा नहीं थी। यह उन दिनों की गवाही थी जब हम कागज़ पर स्याही से अपने जज़्बातों को उकेरा करते थे। जब एक लिफ़ाफ़े में कई अनकही बातें, लंबा इंतज़ार और अनगिनत भावनाएँ समाहित होती थीं। जब एक पत्र, चाहे वह परिवार के किसी सदस्य का हो या सरकारी दस्तावेज़, केवल कागज़ का टुकड़ा नहीं होता था, बल्कि विश्वास का प्रतीक होता था — कि यह ज़रूर पहुँचेगा, सही हाथों में, सही समय पर।

रजिस्टर्ड डाक वह सेतु था, जो गाँव को शहर से, माँ को बेटे से, प्रेमिका को प्रेमी से, और नागरिक को शासन से जोड़ता था। वह न केवल संवाद का माध्यम था, बल्कि संबंधों को सुरक्षित रखने वाला प्रहरी भी था। उसकी विशेषता यह थी कि वह खोता नहीं था, वह भटकता नहीं था। उसका पंजीकरण उसकी सुरक्षा थी, और उसकी प्राप्ति की पावती एक तरह का भावनात्मक संतोष।

एक समय था जब डाकिया केवल संदेशवाहक नहीं, बल्कि घर का परिचित चेहरा होता था। उसकी आवाज़, उसकी साइकिल की घंटी और उसकी झोली में छिपे लिफ़ाफ़ों का इंतज़ार हर किसी को रहता था। कोई सरकारी पत्र हो, किसी मामा जी की मनी ऑर्डर, किसी दूर बैठे बेटे का समाचार — सब कुछ रजिस्टर्ड डाक के माध्यम से पहुँचता था। और जब पत्र मिलता, तो उसे खोलने से पहले उसे छूकर महसूस किया जाता था — उसके कागज़ की मोटाई, उसके रंग की गहराई और उस पर लगी स्याही की गंध — सबमें अपनापन होता था।

लेकिन अब समय बदल चुका है। तकनीकी प्रगति ने हमारे संवाद के तरीक़ों को पूरी तरह से बदल दिया है। आज मोबाइल फ़ोन, त्वरित संदेश सेवाएँ, सामाजिक माध्यम, और अंतर्जाल ने पारंपरिक पत्र-व्यवस्था को लगभग समाप्त ही कर दिया है। अब किसी को इंतज़ार नहीं रहता, सब कुछ पल में भेजा और पल में प्राप्त किया जाता है। ऐसे समय में भारत डाक द्वारा रजिस्टर्ड डाक को औपचारिक रूप से बंद करने और उसे स्पीड डाक में समाहित करने का निर्णय, समयानुकूल और आवश्यक तो है, परंतु भावनात्मक रूप से पीड़ादायक भी।

स्पीड डाक, निस्संदेह आधुनिक आवश्यकताओं के अनुरूप एक बेहतर सेवा है। इसमें गति है, निगरानी है, तकनीकी दक्षता है। परन्तु उसमें वह आत्मीयता नहीं है जो रजिस्टर्ड डाक में थी। वह अपनापन, वह धीमा मगर विश्वसनीय संवाद, वह सादगी — अब इतिहास बन जाएगी।

रजिस्टर्ड डाक का अंत केवल एक सेवा का अंत नहीं है, यह एक युग का अंत है। वह युग जिसमें शब्दों को सहेजा जाता था, जिसमें उत्तर पाने के लिए दिन नहीं, सप्ताहों की प्रतीक्षा की जाती थी। जब एक उत्तर में प्रेम, सम्मान और भावनाओं की परतें होती थीं। आज हम भले ही एक क्लिक में संवाद कर सकते हैं, लेकिन उस संवाद में स्थायित्व और गहराई का अभाव है। हम संदेश तो भेजते हैं, पर भावनाएँ नहीं। हम पढ़ते तो हैं, पर समझते नहीं। रजिस्टर्ड डाक उस युग की अंतिम निशानी थी, जहाँ संवाद सिर्फ़ बात नहीं, एक भावना होता था।

हमारे पुराने संदूक़ों में आज भी ऐसी चिट्ठियाँ मिलती हैं — पीले पड़े कागज़, स्याही से भरे अक्षर, किनारों पर समय की छाप और भीतर वह सब कुछ जो किसी समय अनमोल था। वे चिट्ठियाँ अब केवल स्मृति हैं, किंतु रजिस्टर्ड डाक ने उन्हें आज तक सुरक्षित पहुँचाया। यह उसकी सबसे बड़ी सफलता है — कि उसने शब्दों को अमर बना दिया।

इस सेवा के बंद होने से एक भावात्मक सूत्र टूटेगा। यह वह सेवा थी, जिसने दूरी को भी एक बंधन बना दिया था। जिसने माँ के आँचल से बेटे तक, प्रेमिका की आँखों से प्रेमी तक, शिक्षक की सीख से छात्र तक — सबको जोड़ रखा था। अब स्पीड डाक आएगी — तेज़, सुविधाजनक, आधुनिक। परंतु उसमें वह ठहराव नहीं होगा, वह धैर्य नहीं होगा, वह प्रतीक्षा नहीं होगी जो रजिस्टर्ड डाक को विशेष बनाती थी।

आज हम तकनीकी दृष्टि से जितने सक्षम हुए हैं, उतने ही भावनात्मक रूप से खोखले भी हो गए हैं। संवाद तो अब भी होते हैं, पर उनमें आत्मा नहीं होती। रजिस्टर्ड डाक केवल चिट्ठी नहीं थी, वह आत्मा का दस्तावेज़ थी। अब जब वह विदा ले रही है, तो यह केवल प्रशासनिक निर्णय नहीं है — यह हमारी सांस्कृतिक विरासत का एक पृष्ठ बंद होना है।

रजिस्टर्ड डाक, तुमने केवल पत्र नहीं पहुँचाए, तुमने रिश्ते पहुँचाए। तुमने हमें जोड़ना सिखाया — शब्दों से, भावनाओं से, प्रतीक्षा से, और विश्वास से। तुम भले ही अब औपचारिक रूप से बंद हो जाओ, परंतु हमारी यादों में, हमारे पुराने संदूक़ों में, हमारे दिलों में तुम सदा जीवित रहोगी।

आज जब हम तुम्हें विदाई दे रहे हैं, तो यह विदाई नहीं, एक प्रणाम है — उस युग को, उस सादगी को, उस धैर्य को, उस अपनापन को, जिसे तुमने वर्षों तक अपने कंधों पर ढोया। अब भले ही डाकघर बदल जाएँ, डाकिए डिजिटल हो जाएँ, पत्र इतिहास बन जाएँ — परंतु तुम, रजिस्टर्ड डाक, हमारे लिए सदा अमर रहोगी।

"पत्थरों का सौदा"

कितने ज़ख़्म लगे एक फल के लिए,
ऐसे पत्थर नहीं फेंकना चाहिए।

लाभ हो बूँद-सा, पर नुक़सान समंदर-सा,
ऐसा सौदा नहीं करना चाहिए।

जो दिलों की चाशनी छीन ले हसरत,
वो मिठास नहीं चखना चाहिए।

राह में कोई अगर काँटा भी बने,
उसको फूलों से मनाना चाहिए।

दिल अगर टूटे तो, चुपचाप सँभलने दे,
उसको तानों से न चुभाना चाहिए।

नफ़रतों की आँच में जलकर भी,
प्यार का दीप नहीं बुझना चाहिए।

₹दिल₹ अगर दर्द में डूबा हो कभी,
उसको चुपचाप ही सुनना चाहिए।

--- डॉ. सत्यवान सौरभ

"ना बहन रोए, ना बहू"

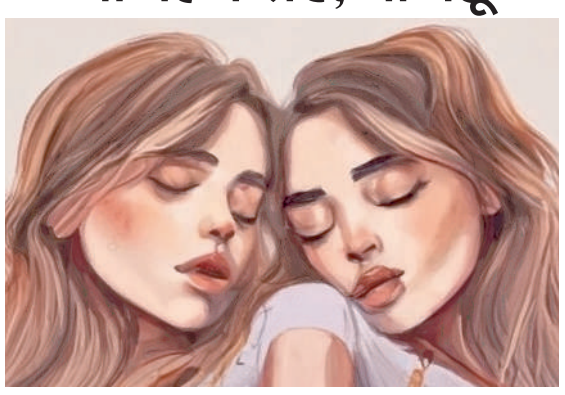

रिश्तों में मोहब्बत का दिया जलना चाहिए,
ना बहन रोए, ना बहू को तन्हा रहना चाहिए।

जिस घर में बेटियों को मिले ताज सा मान,
उस घर में बहुओं को भी मुकुट मिलना चाहिए।

रिश्तों में तराज़ू बराबर रहना चाहिए,
ना कोई भारी, ना कोई हल्का होना चाहिए।

जब मन बँटते हैं तो घर भी बिखर जाते हैं,
दिल से दिल की राह को जुड़ना चाहिए।

ना बहनों को ग़लत समझो, ना बहुओं को कम,
हर रिश्ते को अपना अपनापन देना चाहिए।

दिल अब कहे, नफ़रत की हवा रुक जाए,
'सौरभ' प्यार का दीप हमेशा जलना चाहिए।

– प्रियंका सौरभ

बर्फ की चादर में छुपा ज़ख़्म

गुलमर्ग की वादी उस रोज़ सफ़ेद मख़मली चादर में लिपटी थी। देवदार के ऊँचे पेड़ ठंडी हवा में झूम रहे थे, डल झील पर धुंध का हल्का-सा परदा तना था। बर्फ़ के फाहे हवा में नाचते हुए उतरते, और सुबह की अज़ान की धीमी आवाज़ वादी को किसी पवित्र नज़्म में बदल देती।कॉलेज के दिनों में यूसुफ़ और माहिरा वहीं पहली बार मिले थे ,किताबों, कविताओं और ठंडी हवाओं की गवाही में मोहब्बत पनपी थी। माहिरा को उसकी शायरी बहुत पसंद थी। वह अकसर हंसते हुए कहती, ₹तुम्हारे अल्फ़ाज़ बर्फ़ जैसे हैं बाहर से ठंडे, पर हाथ में आते ही पिघल जाते हैं।₹ यूसुफ़ को लगता था, ये रिश्ता पहाड़ों जैसा मजबूत है, जिसे कोई मौसम नहीं तोड़ सकता।मगर मौसम हमेशा एक से नहीं रहते। गर्मियों के अंत में, जब पहाड़ों पर धूप कम होने लगी, माहिरा ने कहा, ₹ज़िंदगी आगे बढ़नी है कुछ सपनों का पीछा अकेले करना पड़ता है।₹ यूसुफ़ ने चुपचाप उसके शब्द अपने दिल में क़ैद कर लिए। उसके बाद वो चली गई।

कई महीने बीते। वादी पर बर्फ़ की पहली परत जमी, मगर यूसुफ़ के दिल पर इन्तज़ार की मोटी परत पहले से ही थी।हर दिन वह झील किनारे खड़ा बस यही सोचता, क्या मोहब्बत भी बर्फ़ जैसी होती है? दूर से चमकती है छूते ही पिघल जाती है ?इस सर्दी, एक दिन, बर्फ़ में ढकी पगडंडी पर उसने माहिरा को देखा। वही लाल फेरन, वही सफ़ेद शाल, लेकिन उसके साथ एक अजनबी था , निश्चिंत, मुस्कुराता, जिसकी उंगलियां माहिरा की उंगलियों में फंसी थीं।

यूसुफ़ कुछ समझ पाता, उससे पहले आसमान ने गड़गड़ाकर अपना रंग बदल लिया। पहाड़ों से नीचे उतरता गाढ़ा सफ़ेद तूफ़ान हर रास्ता, हर दरख़्त, हर इंसान को ढँकने लगा। हवा के साथ उड़ते बर्फ़ के तेज़ छींटे आंखों में चुभ रहे थे। माहिरा और उसका साथी पहले तो भागे, फिर तूफ़ान में उनकी परछाइयाँ धुंधली होती गईं।

यूसुफ़ चिल्लाया, दौड़ा हवा ने उसकी आवाज़ को चीरकर दूर फेंक दिया। एक पल बाद, माहिरा किनारे की ओर लड़खड़ाते हुए बच निकली — लेकिन उसका साथी कहीं बर्फ़ में गुम हो गया। चीख़ें, आहटें, सब सफ़ेद खामोशी में समा गईं।जब तूफ़ान थमा, सिर्फ़ बर्फ़ बची थी और खाई के पास फंसा उसका एक फटा हुआ दुपट्टा। वादी ने एक जान निगल ली थी — ठंडी, बेरहम ख़ामोशी के साथ।माहिरा की आंखों में अब सिर्फ़ खालीपन था। वह यूसुफ़ के करीब आई, होंठों पर कोई बेनाम सा शब्द लाने की कोशिश में बोली, ₹यूसुफ़₹लेकिन यूसुफ़ ने धीरे से अपनी उंगलियां उसके होंठों पर रख दीं। उसके स्पर्श में इलज़ाम नहीं था, बस एक टूटन थी — जैसे जमी हुई झील की सतह अचानक सी पड़ जाए। उसने देखा , ये वो माहिरा नहीं थी, जिसकी आंखों में कभी उसके लिए फूल खिलते थे। और वो भी अब वो यूसुफ़ नहीं रहा, जो उसकी तस्वीर अपनी कविताओं में छुपा कर रखता था।

सुबह होते-होते, यूसुफ़ बिना किसी को बताए, वादी की किसी पगडंडी में गुम हो चुका था। बर्फ़ पर उसके कदमों के निशान थोड़ी दूर तक चले, फिर हवा ने उन्हें ढँक दिया ,जैसे वो कभी यहां था ही नहीं।

माहिरा बदहवास थी , बर्फ़बारी में इधर-उधर घूमती, तेज़ सांसों के बीच, जाने किसकी तलाश में थी। क्या वो यूसुफ़ को ढूंढ रही थी, जो अब उसके अतीत में दब चुका था? या उस नए साथी को, जो कल के हादसे में बर्फ़ के नीचे कहीं हमेशा के लिए सो गया था?

वादियों का आसमान सफ़ेद और चुप था। दूर देवदारों के बीच से हवा गुजर रही थी, उसके सुर किसी अधूरी कविता की तरह सिसक रहे थे। हर गिरते फाहे के साथ ये यक़ीन गहरा होता गया , कुछ तलाशें कभी मुकम्मल नहीं होतीं, और कुछ मोहब्बतें बर्फ़ की चादर में ऐसे दफ़न हो जाती हैं, कि उनका नाम भी वक्त नहीं ढूंढ़ पाता।

डॉ. मुश्ताक अहमद शाह सहज़

वैश्विक संस्कृति का तड़का

डॉ. नीरज भारद्वाज

बदलती मानवीय संरचना के इस समय में सभी कुछ धीरे-धीरे बदल रहा है। लोगों को विश्वास नहीं हो पा रहा है कि समाज और देश में इतनी तेजी से परिवर्तन कैसे हो रहा है। इस परिवर्तन के पीछे बहुत से कारण हो सकते हैं। विचार करें तो आज भारतीय समाज के नगरीय और महानगरीय जीवन शैली की व्यवस्था तथा रहन-सहन का आधार अब ना तो पूर्णतः भारतीय ही रहा है और ना ही पूर्णतः विदेशी। किसी एक देश की संस्कृति का पूर्ण प्रभाव सामाजिक व्यवस्था पर ना पड़कर अलग-अलग देश की व्यवस्थाओं, संस्कृति, समाज आदि का तड़का लगा हुआ है। यह तड़का लगाने की बात भी व्यंजन खाने के सिलसिले में हुई। व्यंजन का नाम विदेशी और उसका जायका अर्थात उसे खाया गया तो उसमें भारतीय मसालों का स्वाद रहा। जब स्वाद भारतयी है तो उस व्यंजन को विदेशी कैसे कहें। अब वह ना भारतीय है और ना ही विदेशी।

आज हम जिस भी क्षेत्र में जाएं वहीं परिवर्तन दिखाई दे रहा है। रहन-सहन और खान-पान की बात करें तो आज होटल से ज्यादा सुख-सुविधाओं से भरे हुए कमरे लोग घरों में बनवा रहे हैं। घर में रसोई से लेकर अन्य कामों के लिए दूसरों का सहारा लिया जा रहा है। हर एक काम के लिए अलग-अलग लोग रखे जा रहे हैं। जबकि भारतीय ग्रामीण समाज व्यवस्था में कुछ भी ऐसा नहीं था, बल्कि रसोई घर में घर की बहू-बेटी के अलावा अन्य कोई काम नहीं करता था। हमारे देश में घर की सुंदरता उसकी रसोईघर से माना जाता रहा है। नई बहू के आने पर खाना बनाने की एक सुंदर परंपरा थी, उसे भेंट स्वरूप कुछ दिया भी जाता था। चूल्हा चलाने और रसोईघर में जाने के कुछ नियम तथा व्यवस्थाएं थी।

रसोईघर आयुर्वेद का खजाना है। रसोईघर ठीक है तो घर के सभी लोग स्वस्थ और ठीक हैं। वर्तमान संदर्भ में तो रसोईघर की जरूरत ही नहीं समझी जा रही है। आज जोमैटो, स्विग्गी आदि कितनी ही कंपनियां घर तक भोजन पहुंचा रही हैं। किसी भी समय आप आर्डर कर सकते हैं। खाने-पीने के कोई नियम नहीं रहे हैं। इसके अलावा अन्य साधनों के द्वारा आप घर का कोई भी सामान एक क्लिक से आपके द्वार तक पहुंच जाता है।

परिवर्तन की यह बयार हर क्षेत्र में देखी-समझी जा सकती है। आज सिनेमा वैश्विक रूप ले चुका है। आधुनिक साधनों के चलते लोग भारतीय और विदेशी सभी तरह का सिनेमा देख रहे हैं। वहां की संस्कृति, सभ्यता, खान-पान, रहन-सहन आदि सभी कुछ देख रहे हैं। उसका कुछ अंश अपने जीवन में भी उतार ही लेते हैं। इसी प्रकार आज वैश्विक साहित्य भी आसानी से उपलब्ध हो रहा है। लोग उसे भी पढ़कर अपने चिंतन और विचार में बदलाव ला रहे हैं। मल्टीनेशनल कंपनियां अपने हिसाब से लोगों को काम पर रखती हैं। यह कंपनियाँ अपने देश के समयानुसार अन्य देशों में काम करती और करवाती हैं। इससे भी लोगों के व्यवहार और सोचने के तरीके में भारी परिवर्तन आया है।

समय का यह चक्र तेजी से दौड़ता हुआ दिखाई दे रहा है। तरंगों पर तैरते वैश्विक समाज की कल्पना सार्थक रूप लेकर सभी के सामने आ रही है। विचार करें तो वर्तमान परिस्थितियों में हर एक चीज और स्थिति व्यक्ति के हाथ तक पहुंच चुकी है। आज अपने समाज में विश्व के अलग-अलग देशों की संस्कृति और संस्कार को बहुत सरल तरीके से देखा जा सकता है। लोगों की दिशा और दृष्टि में वैश्विक बाजार, समाज, चिंतन आदि सभी कुछ जुड़ चुका है। हर क्षेत्र में वैश्विक संस्कृति, समाज आदि के गुण-अवगुण को देखा जा सकता है। हर क्षेत्र में वैश्विक संस्कृति का तड़का लगा रहा है। हम सभी इस ओर दौड़ रहे हैं, कोई भी अब बचा सा नहीं दिखता है। कुछ समझदार समय को देखकर संभाले हुए आवश्यक हैं।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023